आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्थापना का अमृत महोत्सव 1948-2023 75 हंसराज कॉलेज, दिल्ली

हंसराज कॉलेज
– दिल्ली विश्वविद्यालय –

हंस

वार्षिक पत्रिका
2023

G20 भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

स्थापना का अमृत महोत्सव
1948-2023
75
हंसराज कॉलेज, दिल्ली
हंसराज कॉलेज
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

ओइम्! विश्वानि देव सवितुर्दुरितानी परासुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव।।

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता,
समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप,
सब सुखों के दाता, परमेश्वर!
आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण,
दुर्व्यसन और दुखों को दूर कर दीजिए,
जो कल्याणकारक गुण,कर्म,
स्वभाव और पदार्थ हैं,
वे सब हमको प्राप्त कराइये।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

(1824–1883)

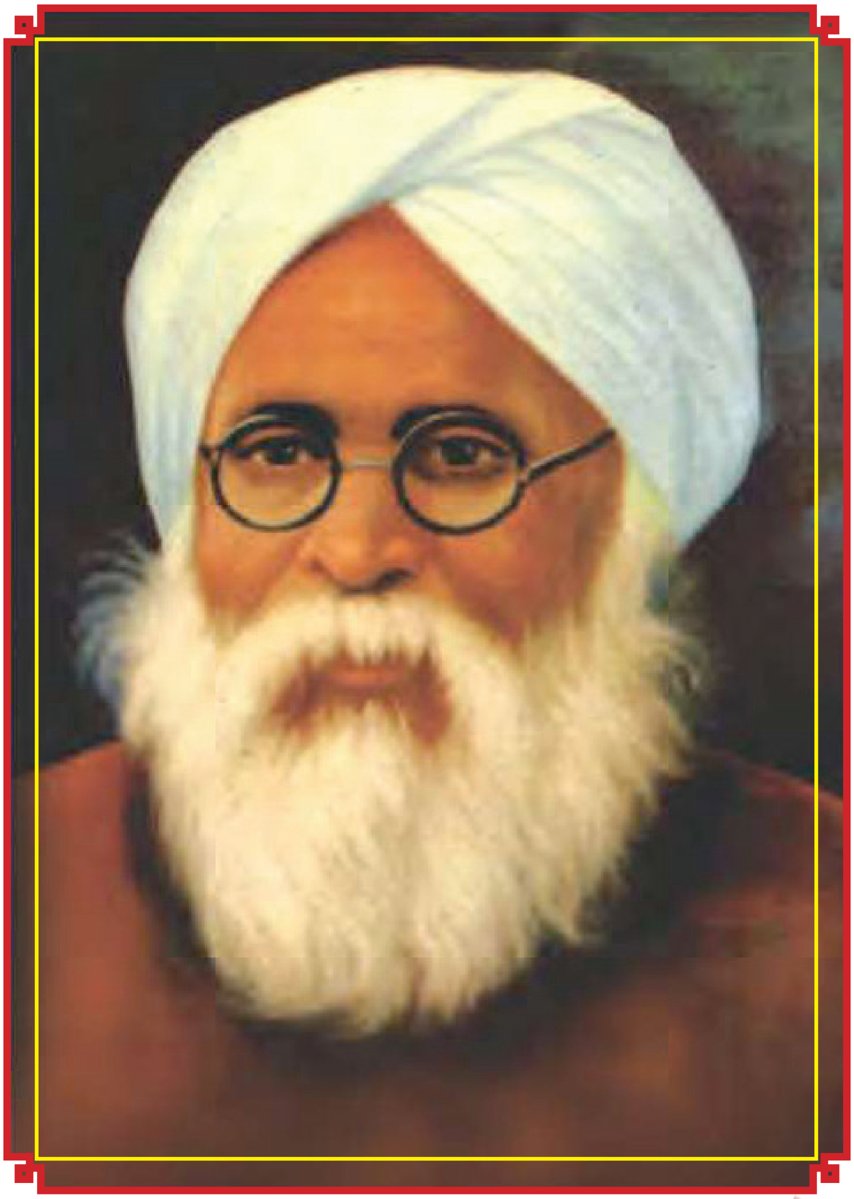

महात्मा हंसराज

(1864–1938)

प्रो. (डॉ.) रमा
प्राचार्या, हंसराज कॉलेज

हंसराज कॉलेज की गरिमामयी यात्रा के 75 वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। स्थापना के अमृत वर्ष में कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'हंस' के यह नया अंक आपके सामने प्रस्तुत है। हंसराज कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'हंस' एक बहुभाषी पत्रिका है। हिंदी, अंग्रेज़ी और संस्कृत भाषाओं की रचनाएँ इसमें प्रकाशित की जाती हैं। साहित्य की विविध विधाओं कविता, कहानी, निबंध समीक्षा, साक्षात्कार आदि के माध्यम से हंसराज कॉलेज परिवार के सदस्यों की रचनात्मकता को प्रकाशित कर उनकी साहित्यिक प्रतिभा को सामने लाने की दृष्टि से यह बेहद महत्त्वपूर्ण है। हंसराज कॉलेज की अब तक की यात्रा में 'हंस' निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यह कॉलेज के युवा विद्यार्थियों के साथ ही रचनात्मक लेखन में रूचि रखने वाले प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों के लिए भी एक बड़ा मंच है। इसमें छात्र और प्राध्यापक दोनों की रचनात्मकता एक साथ उद्घाटित होती है। इसके माध्यम से लेखन के क्षेत्र में नए लोगों को एक बेहतरीन मंच तो मिलता ही है साथ ही निरंतर लेखन की प्रेरणा और प्रोत्साहन भी मिलता है। विद्यार्थी जीवन में कॉलेज की पत्रिका में अपनी रचनाओं के प्रकाशन से जो विशेष आनंद प्राप्त होता है उसकी अनुभूति प्रायः हम सबको है।

हंसराज कॉलेज की पत्रिका में प्रकाशित होने वाले विद्यार्थियों में से कई लोग आगे चलकर साहित्य, सिनेमा, मीडिया, कला आदि क्षेत्रों में अपना विशिष्ट मुकाम हासिल करते रहे हैं। ये सभी आज अलग-अलग क्षेत्रों में जिस तरह सफलता की चोटी पर खड़े हैं उसमें हंसराज कॉलेज और 'हंस' पत्रिका में उनकी रचनात्मकता के प्रकाशन का विशेष योगदान है। इस वर्ष अपने परम्परागत स्वरुप और नए भावबोध एवं विशिष्ट रचनाओं के संग 'हंस' आपके सामने है। इस अंक की अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएं शामिल की गई हैं। इसके साथ ही अनेक पेंटिंग आदि का भी सुंदर संयोजन किया गया है। इस अंक में प्रकाशित होने वाले विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे उम्मीद है कि आगामी वर्षों में ये सभी अपने लेखन से समाज और राष्ट्र को नई दिशा देने में समर्थ होंगे। इस वर्ष के 'हंस' के संपादक मंडल को भी मैं हृदय से बधाई देती हूँ और सभी रचनाकारों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

डॉ. विजय कुमार मिश्र
संयोजक, प्रकाशन समिति

हंसराज कॉलेज की सुदीर्घ और गौरवशाली यात्रा में हमारी वार्षिक पत्रिका 'हंस' का विशिष्ट स्थान है। इसके माध्यम से देश-दुनिया के सम्बन्ध में हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के अनुभव, दृष्टिकोण और संवेदनाएँ विविध साहित्यिक विधाओं के माध्यम से प्रकाशित होती रही हैं। उनकी भावनाओं, विचारों, रचनात्मकता आदि के प्रकटीकरण का एक बेहद शानदार मंच है 'हंस'। इसके माध्यम से समय-समय पर विद्यार्थियों के द्वारा बनाए गए चित्र आदि के माध्यम से भी उनके भाव को विस्तार मिला है। कक्षाओं की औपचारिक शिक्षा प्रणाली और नियमित पाठ्यक्रम के मध्य इस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

संपादक मंडल ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता को कविता, कहानी, लेख, समीक्षा, चित्र, फ़ोटोग्राफ आदि के माध्यम से 'हंस' के इस अंक में आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। इसमें प्रकशित हिंदी, अंग्रेजी एवं संस्कृत तीनों भाषाओं की रचनाएं हंसराज कॉलेज के विद्यार्थियों की भाषाई और रचनात्मक विविधता का द्योतक है। रचनाएं आमंत्रित करने से लेकर, उनके चयन, प्रूफ और संपादन आदि की दृष्टि से संपादक मंडल के सदस्यों ने जो श्रमसाध्य कार्य किया है, वह अभिनंदनीय है। 'हंस' का प्रकाशन हमारे संपादक मंडल के सदस्यों के साथ ही प्रशासनिक कर्मचारियों के सहयोग के बिना संभव नहीं था। ऐसे सभी लोगों का ह्दय की गहराईयों से आभार।

कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रमा ने हमेशा की तरह इस बार भी समुचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से इस अंक को अंतिम रूप देने में बड़ी भूमिका निभाई है। इसके लिए प्राचार्या महोदया का विशेष धन्यवाद।

आशा है 'हंस' का यह अंक आप लोगों को पसंद आएगा और आपकी रचनात्मक संतुष्टि की दृष्टि से भी यह बेहद उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रकाशन समिति

– संयोजक –

डॉ. विजय कुमार मिश्र

– सदस्य –

डॉ. सुशील कुमार

डॉ. प्राची देवरी

डॉ. संतोषी बी. मिश्रा

सुश्री आरती गोयल

डॉ. उपलब्धि सांगवान

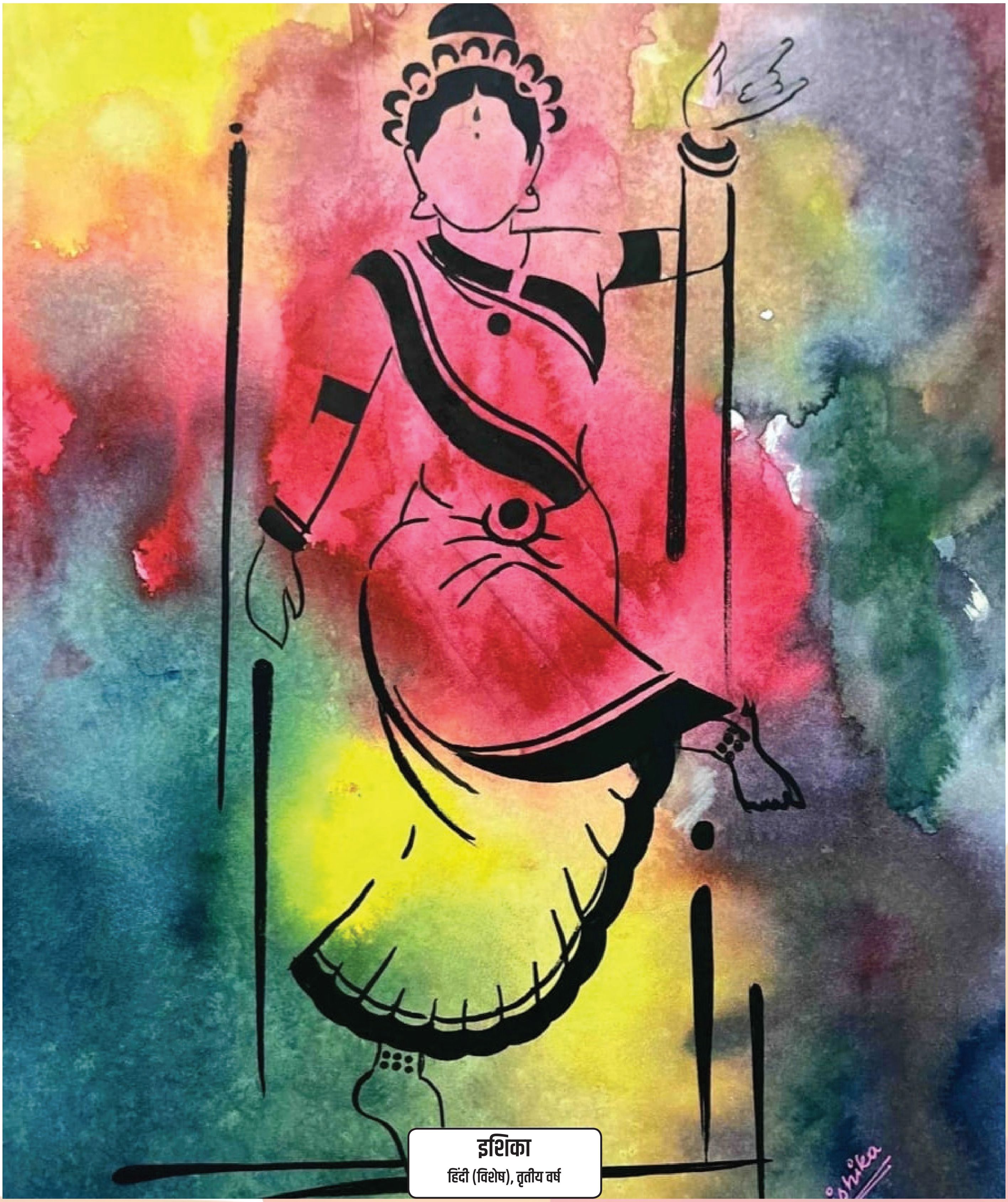

इशिका
हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

हिंदी खंड

संपादक

प्रो. राजमोहिनी सागर

छात्र- संपादक

जय प्रकाश
दिवेश चंद्र

विषयानुक्रमणिका

1. ग़ज़ल / डॉ.फ़रहत जहाँ "फरहत" ---- 10
2. ये प्यारा देश है लोगो / मोहम्मद अहमद बेग ---- 10
3. चार के बाद तीन कहना / आयुष आवर्त ---- 11
4. राजनीति / दिवेश चंद्र ---- 11
5. प्रेम / दिवेश चंद्र ---- 11
6. पतंग मांझा / अमन निर्मल ---- 12
7. असमंजस / अमन निर्मल ---- 12
8. हम दोनों के बीच / गौरव सिंह राठौर ---- 13
9. लंपी / गौरव सिंह राठौर ---- 13
10. तुम चींटी हो / शुभम मणि त्रिपाठी ---- 13
11. नारी का कर्त्तव्य / हिमांशु दुबे ---- 14
12. अवस्था परिवर्तन / अखिल यादव ---- 14
13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाएँ / नितेश कुमार पांडेय ---- 15
14. आज मेरे शहर में चुनाव है / यश ध्वज ---- 18
15. ज़िन्दगी / बलजीत सिंह सलूजा ---- 18
16. अनकही मोहब्बत / गौरव सिंह राठौर ---- 19
17. अमृत महोत्सव / हेमलता ---- 19
18. हालातों से मजबूर बाल मजदूर / अतुल कुमार श्रीवास्तव ---- 20
19. जीवन में बदलाव का स्वागत ख़ुशी से करें / गुंजन पारीक ---- 20
20. नियति / अतुल कुमार श्रीवास्तव ---- 21
21. महिमा की राहें मृत्यु तक जाती हैं / सचिन यादव ---- 23
22. मैं आपकी होना चाहती हूँ / अलका ---- 24
23. नयन निशा को भूल गई हैं / विजय भारती ---- 24
24. महाभोज उपन्यास : समकालीन राजनीति का जीवंत दस्तावेज / सोनू कुमार ---- 25
25. घर / अलका ---- 26
26. भू-विज्ञान : एक खोज / आदित्य कुशवाहा ---- 26
27. क्या करें यार माँ तो माँ होती हैं / वरुण ---- 27
28. ऐसा मानुष / जय प्रकाश ---- 27
29. अब वो बचपन कहाँ रहा / जय प्रकाश ---- 28
30. खुदीराम बोस / अंकित सिद्धांत ---- 28
31. स्त्री के हक में कबीर : पुस्तक समीक्षा / नितेश कुमार पाण्डेय ---- 29

ग़ज़ल

डॉ. फ़रहत जहां 'फ़रहत'
सहायक प्रोफ़ेसर, प्राणीविज्ञान विभाग

(1)

ज़रूरी तो नहीं पत्थर उठाओ तोड़ने को तुम
महज लहजा बदलने से बहुत कुछ टूट जाता है।

मनाने का हुनर आता मुझको, जानता है वो
मैं करूँ प्यार की बातें वो फिर भी रूठ जाता है।

एक मुद्दत हुई बिछड़े हुए, मगर लोगों से सुनती हूँ
वो मेरी याद में अब भी बहुत आँसू बहाता है।

डर-ए-रुसवाई है उसको, निकल जाता है चुपके से
पर मेरे ख़्वाबों में वो मुसलसल गश्त लगाता है।

चले आओ के अब ये साँसें भी रुकने को बैठीं हैं
क्या है नाराज़गी क्यू इस तरह मुझको सताता है।

ज़रूरी तो नहीं पत्थर उठाओ तोड़ने को तुम
महज लहजा बदलने से बहुत कुछ टूट जाता है।

(2)

एक मुद्दत से तू लड़ा ही नहीं,
इश्क़ में इश्क़ का मज़ा ही नहीं।

तेरी नाराज़गी लड़ना झगड़ना,
मैंने तो दिल में कुछ रखा ही नहीं।

मुसलसल तेरी ख़ुशबू आ रही है,
तेरी यादों का सिलसिला तो नहीं।

मुझसे नाराज़ है यादें तेरी,
ये मेरे दिल की कुछ सज़ा तो नहीं।

एक तुझे दे दिया ख़ुदा ने जब से,
अब उसके बाद कुछ दुआ ही नहीं।

एक मुद्दत से तू लड़ा ही नहीं,
इश्क़ में इश्क़ का मज़ा ही नहीं।

ये प्यारा देश है लोगों

मोहम्मद अहमद बेग
बी.ए. हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

हमारा हिंद हमारी जान, इसका माने हम फरमान,
यही है अपना तो ऐलान लुटा दें देश पे अपनी जान,
इसी में हम सबकी है शान नाम है इसका हिन्दुस्तान,
ये प्यारा देश है लोगों, हमारा देश है लोगों।

बोलें उर्दू अंग्रेजी भी हिंदी और पंजाबी हम
गुजराती बंगाली तेलगु बोले तमिल मराठी हम,
मगर ये सबकी एक जुबान
ये प्यारा देश है लोगों, हमारा देश है लोगों।

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई हम सब भाई भाई हैं,
एक हैं हम सब एक है मिट्टी एक के हम शैदाई हैं,
इसी पर हम सब हैं कुर्बान नाम है इसका हिन्दुस्तान,
ये प्यारा देश है लोगों, हमारा देश है लोगों।

कहे कबीर ने दोहे इसमें लिखा ग़ालिब ने दीवान,
सारी दुनिया प्यार हमारा देख देख कर है हैरान।
मोहब्बत बंटती है हर आन नाम है इसका हिन्दुस्तान,
ये प्यारा देश है लोगों, हमारा देश है लोगों।

गीता बाइबिल वेद पढ़ें हम दिल से पाक पढ़ें कुरान,
यहां आरती मंदिर में हो और मस्जिद में हो अज़ान,
है अहमद अपनी ये पहचान नाम है इसका हिन्दुस्तान,
ये प्यारा देश है लोगों, हमारा देश है लोगों।

चार के बाद तीन कहना था

आयुष आवर्त
बी.ए. हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

चार के बाद तीन कहना था
और फिर कर यक़ीन कहना था

कहा हमने अना परस्त उसे
जिस जगह नाज़नीन कहना था

अपने आप उसने रक्खे होंठ पे होंठ
हमने तो तब जबीन कहना था

अब समझ आया एक ज़रिया थी
ज़िंदगी को मुईन कहना था

उसी महफ़िल में एक को नादान
दूसरे को हसीन कहना था

टूट जाता तिलिस्म सहरा का
पानी को बस ज़मीन कहना था

सामने आता सब मगस का सच
लाओ इक ख़ुर्द-बीन कहना था

वो था यार एक अहमकों का दयार
हर किसी को ज़हीन कहना था

दोस्त को मतलबी कहा तुमने
दोस्त को दिल नशीन कहना था।

राजनीति

दिवेश चन्द्र
बी.ए.हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष

अपराधी,घोटाले बाज सीना ठोक संसद में जाते हैं।
देख जिसे गांधी, बिस्मिल,जफर बहुत पछताते हैं।।

भगत सोचते क्या इसके लिए मैं फांसी पर लटका था?
आजाद सोचते क्या इसके लिए मैं दर-दर भटका था?

रानी लक्ष्मीबाई को अपना व्यर्थ बलिदान दिखाई देता है।
जब पतित पति की रक्षा में पत्नी परिधान दिखाई देता है।।

मांगें गए खूनों का कहा सम्मान दिखाई देता है ?
हिंद फौज वाला कहा हिन्दुस्तान दिखाई देता है?

काले पानी की दिवारों का दिल तो रोता होगा।
सावरकर जैसे वीरों को वो कितना खोता होगा।।

दरबारो में, अखबारों में, बाजारों में जनता को मारा जाता है।
लंदन में विजयी ऊधम, अपने ही भारत में हारा जाता है।।

जेल के कैदियों ने लोकतंत्र को कैद कर रखा है।
तंत्र तोड़ने वालो ने ही कानून को मुस्तैद कर रखा है।।

हमने जाहिलो को ज्यादा ही आजादी दे रखी है।
हर हथियारें को हमने एक-एक खादी दे रखी है।

प्रेम

जौहर की गाथा प्रेम की अमिट निशानी है।
शंकर के त्रिशूल में रहती जगत भवानी है।।

तलवारों पर रक्त रिपु का, धमनियों में प्रवाह भरता है।
जब प्रेम की धरा पर कोई खिलजी आक्रमण करता है।

वन से ऊंचे महलों पर बाण चलाया जाता है।
त्रिलोक विजेता को निष्प्राण सुलाया जाता है।।

प्रेम में रास नहीं, इतिहास रचा है हमने।
भाई को गले लगाकर श्वास रचा है हमने।।

प्रेम नहीं है बंगला, गाड़ी, महंगी साड़ी, महल अटारी।
प्रेम है प्रताप का, मिली अकबर को जिसमें हार करारी।।

पतंग मांझा

अमन निर्मल
बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

तुम कागज़ की पतंग
मैं मांझा तुम्हारा
तुम पतंग का रंग
मैं तिरछा किनारा

तुम ताजमहल
मैं संगमरमर तुम्हारा
तुम कीचड़ का कमल
मैं व्यंग तुम्हारा
तुम रात की ठंड
मैं कंबल तुम्हारा
तुम अधूरा सफर
मैं मुकम्मल तुम्हारा
तुम कुदरती कहर
मैं अमन तुम्हारा
तुम सुगंधित पुष्प
मैं चमन तुम्हारा
तुम अहंकार मेरा
मैं नमन तुम्हारा
तुम टिमटिमाते तारे
मैं आसमान तुम्हारा
तुम जीवन मेरा
मैं मरन तुम्हारा

तुम कागज़ की पतंग
मैं मांझा तुम्हारा
तुम समुद्र की लहर
मैं साहिल तुम्हारा..।

असमंजस

स्थितियों का खेल
अस्थायी, शाश्वत
जैसे चलती रेल
आज हर्ष
कल विषाद
क्या चुनूँ
क्या गुनूँ
विकल्प अनेक

सीधे-टेढ़े
ऊँचे-नीचे
पाप-पुण्य
सत्य-असत्य
अँधेरा-उजाला
अशांत-अमन
कुछ बुरे, कुछ नेक

राह मेरी
अस्त-व्यस्त
छिन्न-भिन्न
बधाएँ उच्च-निम्न
काला-सफेद
धर्म-भेद
शब्दों को आँकू
या सुंदर लेख
विस्मयकारी विचार अनेक

विध्वंसक असमंजसपूर्ण
चुनी राह
शांत या हिंसक
मंजिल है या सिर्फ सीढ़ियाँ
पगों में बेड़ियाँ
हृदय चिंताओं से भरा
जैसे ठंड सवेरे का कोहरा
झिलमिल-सा जग दिखे
न कोई मंजिल
न कोई राह
असमंजस अथाह!

हम दोनों के बीच

गौरव सिंह राठौड़
बी.ए. इतिहास विशेष, प्रथम वर्ष

हम दोनो चल रहे हो एक ऐसी राह पर
जहां हो एक ऐसी सुनसान सड़क जंगलो के बीच

हम दोनो बैठे हो जहां
हो ठंडे पानी की दरिया की आहट पहाड़ों के बीच

हम दोनो देख रहे हो जहां
हो सूरज की लालिमा आसमान में बादलों के बीच

और हम आंखे मूंदे सुन रहे हो जहां
हो भंवरों की गुनगुनाहट कोमल कलियों के बीच
तितलिया मंडरा रही हो
फूलो के बीच, और

हम दोनो भाग रहे हो, हसीन वादियों में
जहां फसी हो उंगलियां तुम्हारी
मेरी उंगलियों के बीच
और हो वो वादिया ऐसी
जहां कोई भी ना हो
हम दोनो के बीच।

लंपी

घोर कलयुग का आरम्भ हुआ है
सरकार लंपी की वैक्सीन ना लाएगी
इसलिए
ये DP बदलना छोड़ो
ये स्टेटस लगाना छोड़ो
तुम्हारी ये कोशिशें गौ माता की स्थिति ना सुधार पाएगी
ये गौ हत्यारी सरकार है साहब
न जाने एक कुर्सी के लिए और कितना गिर जायेगी
लेकिन याद रखना एक दिन
तुम्हारी भी बारी आएगी
जब काले धन से बनी कोठियां
खाली पड़ी रह जायेगी
जिस कुर्सी के लिए भाग रहे हो
ये भी साथ ना जायेगी
जब तुम्हारी डोलियां बिन महूर्त उठाली जायेगी

और
हजार जतन कर लेना लेकिन
जाते वक्त मुट्ठिया तुम्हारी खाली ही जायेगी।

तुम चींटी हो

शुभम मणि त्रिपाठी
एम.ए. हिन्दी विशेष, प्रथम वर्ष

तुम चींटी हो
तुम मसल दी जाती हो
क्योंकि तुम में कोई स्वर नहीं
कोई विरोध नहीं, कोई ध्वनि नहीं

तुम्हें बड़े जन्तुओं सा मानवो को डराना नहीं आता
तुम इतनी छोटी हो कि
तुम्हें देखने मे कोई रुचि लेता नहीं
तुम बिल्ली सी प्यारी नहीं,
कुत्ते सी कामकाजी नहीं
मछली या झींगे सी भक्ष्य योग्य नहीं
साँप या बिच्छू सी भयहेतुक नहीं

क्या तुम्हें पता नहीं?
इस भू पर अस्तित्व के लिए
भयहेतुक या सार्थक बने रहना जरूरी है।

नारी का कर्तव्य

हिमांशु दुबे
बी. ए. हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

उठो नारी,नये युग का तुम्हें निर्माण करना है,
नए युग के भवन की स्नेह रस से नींव भरना है।

नए निर्माण से पहले, पुराना क्रम बदलना है,
हुआ जीवन जहां बर्बाद,उस पथ से निकलना है,
पुरानी रूढ़ियों को छोड़ने, बिल्कुल ना डरना है,
उठो नारी, नए युग का तुम्हें निर्माण करना है।

तृषित है आज मानवता,मनुज के प्राण रोते है,
यही क्षण तो युगांतर चेतना, आधार होते है,
अभी पहले करुण वात्सल्य रस से, यह पीर हरना है,
उठो नारी, नए युग का तुम्हें निर्माण करना।

सुधा- सौजन्य कि तुम, आज हर परिवार में भर दो,
चलो,सौहार्द से प्लावित,हृदय हर व्यक्ति का करदो,
मरुस्थल पीड़ितों को आज, नंदन में विचरना है,
उठो नारी,नए युग का तुम्हें निर्माण करना है।

अमृत सबको मिले संवेदना का, नव व्यवस्था में,
जिएं सब डूबकर, सुख-शांति में,विश्वास आस्था में,
स्नेह,आशीष की सरिता,तुम्हें रसधार झरना है,
उठो नारी,नए युग का तुम्हें निर्माण करना है।

कंगूरे और दीवारें बहुत से लोग,गढ़ लेंगे,
शिलाओं पर लिखे आलेख भी सब लोग पढ़ लेंगे,
तुम्हें ही इस भवन में,आज पहला दीप धरना है,
उठो नारी,नए युग का तुम्हें निर्माण करना है।

अवस्था-परिवर्तन

अखिल यादव
बी.ए. हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

भोर होते ही दादा का कहना कि
‘उठ जो रे सबेर हो गइल बा कबले सुतबे’
उसके बाद भी घंटों सोए रहना
फिर पापा का झकझोर कर उठाते हुए कहना
कि ‘पढ़ने वाले बच्चे कहीं इतना सोते हैं भला?’

मां का कितना भी लेट उठने पर प्यार से नाश्ता देना
और यदि कभी कम खा लिया तो बोलना कि
भर पेट नहीं खाओगे तो पढ़ाई में भी मन नहीं लगेगा
तब पापा का मां से बोलना कि
‘खाली खिला पिया के गदहा बना द एके’
इस पर मां का उनसे मेरे लिए लड़ जाना
यह कहते हुए कि
‘रउवा बाबू के खईला के बारे में कुछ ना बोलीं’
फिर पापा का मां से खींझते हुए कहना कि
‘तोहार दुलार एकरा के बिगाड़ देले बा’
और आखिर में मां के सामने अपनी पराजय स्वीकार कर लेना

वो समय बीत चुका है
और रिश्तों का मतलब भी बदल गया है
उस उपर्युक्त बच्चे से जो अब बड़ा हो चुका है
उम्मीद की जाती है कि वह उन सब जिम्मेदारियों को उठाए
जो बचपन में उसे छोटा मानकर उससे दूर रखी जाती थी

अब उस प्रेम का स्वरूप भी बदल गया है
जो मां-पापा उससे किया करते थे
मां अब बेटे की हर बात मान लेती है बिना कुछ कहे
पापा भी अब उसे न डांटते है और न ही उस पर झुंझलाते है
वो अब उससे ही विभिन्न मुद्दों पर राय मांगते है

इस बदलाव से उसे अधिकार तो मिले
किन्तु छिन गई बचपन की वह स्वछंदता
यह बदलाव किसी अस्थायी रासायनिक परिवर्तन जैसा है
जिसमें पदार्थ एक से दूसरी अवस्था मे बदलता रहता है
उसी प्रकार छिन जाएंगे उससे ये भी अधिकार
जब काल उसका यौवन हर कर बुढ़ापे में ढकेल देगा...

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय भाषाएं

नितेश कुमार पाण्डेय
एम.ए. हिन्दी विशेष, प्रथम वर्ष

भारत की सभ्यता एवं संस्कृति विश्व में सर्वाधिक प्राचीन है, जिसका मिसाल नहीं। अनादिकाल से भारत उच्च शिक्षा का आकांक्षी देश तो था ही, साथ ही यह व्यावहारिक ज्ञान की आकांक्षी भूमि थी।

"वाराणसी से रामेश्वरम तक सभी भाषाएं और उनके साहित्य समावेशी सांस्कृतिक प्रेरणा के स्रोत रहे हैं और लोगों की एकता एवं सौहार्द को बनाए रखने का मूलस्रोत हैं। भारत के सभ्यागत खजाने की इस अनूठी ज्ञान विरासत का अनुभव करने और उसकी सराहना करने का मार्ग है जो विविधता में एकता के साथ जुड़ा हुआ है। विश्व का कोई भी देश इसे प्रदर्शित नहीं कर सकता है।"

भारतीय भाषाएं सदियों से एक-दूसरे के सह-अस्तित्व, पूरक और पोषक के तौर पर बनी हुई है। भाषाएं समाज के मस्तिष्क और बौद्धिकता को साकार करती है। भाषाएं लोगों को एकजुट करती है। भारत बहुभाषाई समाज है। नागरिकों के लिए विभिन्न भाषाएं सीखना-समझना व इसके समृद्ध साहित्य, संस्कृति और विचारों को जानना आवश्यक है। "भाषाएं वक्ताओं द्वारा परस्पर सम्मानित, ज्ञानवर्धक पूरक व खुले दिल से अभिव्यक्त होती है। साथ ही यह लोगों के साझा अनुभवों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक, एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में और ज्ञानियों से आम जन तक पहुंचने का माध्यम है।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) एक ऐतिहासिक घटना है। इसे युगांतकारी कहा जा सकता है। विविधता में एकता पर केंद्रित NEP 2020 दिलों को एक साथ लाते हुए लोगों के चिरस्थायी बंधन को मजबूत करेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 प्रारंभिक जीवन की देखभाल और शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर केंद्रित है और सभी भारतीय भाषाओं में सीखने पर भी जोर देती है। नई नीति के तहत, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अनिवार्य किया है कि सभी भाषाएँ राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। भारत अपनी स्वतंत्रता का 75वां वर्ष मना रहा है, लिहाजा युवाओं को भी अपना ध्यान अधिकारों से हटाकर उत्तरदायित्वों पर केंद्रित करना चाहिए। युवा रोजगार प्रदाता बनने के लिए ज्ञान आधारित क्रांतियों में भाग लेकर समाज में बदलाव ला सकते हैं।

हमारे विश्वविद्यालय विचारों, नवाचारों और आकांक्षाओं के पात्र हैं और विश्वविद्यालयों को अनुसंधान के लिए एक विशेष स्थल होना चाहिए। समाज और मानव जाति के कल्याण के लिए और जीवन को सरल बनाने के लिए अनुसंधान होना चाहिए।

हमें एक मजबूत छात्र नेटवर्क बनाने की आवश्यकता है। हम जिस संस्थान से जुड़े थे, जिस संस्थान ने हमें इतना कुछ दिया, उसे भी उतना ही वापस देने का संकल्प लेना चाहिए। हम अपने राज्य, देश और मानवता की जिम्मेदारी भी लें। अपनी कर्मभूमि को वापस देने के लिए बेहतर समय कभी नहीं रहता।

शिक्षा मंत्रालय ने सभी राज्यों को राष्ट्रीय डिजिटल बुनियादी ढांचे, विशेष रूप से राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला (NDIAR) के एक भाग के रूप में एक छात्र पंजीकरण पोर्टल की स्थापना के प्रयासों का नेतृत्व करने और इसके संस्थानों को NIRF और NAAC ढांचे के तहत लाने का निर्देश दिया है। भारत का शिक्षा मंत्रालय इसे शिक्षा और उद्यमिता में विश्वगुरु बनाने के लिए हर संभव सहायता करेगा।

विद्यालय में भारत की भाषाई-विविधता की आवश्यकता

- भारत में बहुभाषावाद को बनाए रखने में विद्यालय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- इसलिए, नई शिक्षा नीति (NEP) विद्यालयों में भाषाओं पर अपेक्षाकृत अधिक जोर देती है, इसके लिए किसी औचित्य की आवश्यकता नहीं है।
- ऐसा करते हुए, NEP 2020 ने सभी भारतीय भाषाओं और मातृभाषाओं को उनकी स्थिति के बावजूद बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित किया है।
- उसी के लिए, NEP चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. के माध्यम से कुशल शिक्षकों के विकास की अनुशंसा करता है।
- विद्यालयों में त्रिभाषा सूत्र की निरंतरता और द्विभाषी और त्रिभाषी प्रारूप में शिक्षण-अधिगम
- सीखने के परिणामों को बढ़ाने और सीखने को सरल बनाने

के लिए शिक्षकों और प्रशिक्षकों का कौशल विकास और आधुनिक तकनीक की भागीदारी।

- संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और उड़िया जैसी शास्त्रीय भाषाओं का शिक्षण-अधिगम।
- भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली द्विभाषी पाठ्यपुस्तकें तैयार करने और विदेशी भाषाओं में पाठ्यक्रमों की पेशकश के प्रयास।
- विभिन्न स्तरों के लिए अभिनव शैक्षणिक सामग्री तैयार करना और ऑनलाइन भाषा पाठ्यक्रम शुरू करना।
- अनुवाद की भागीदारी और अनुवाद के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग।
- भाषा सीखने को आसान और रोचक बनाना। सेवारत/भावी स्कूल शिक्षकों के लिए भाषा डिप्लोमा पाठ्यक्रम की पेशकश करना और त्रिभाषा सूत्र के कार्यान्वयन को बढ़ावा देना।
- कम ज्ञात और जनजातीय भाषाओं सहित विभिन्न मातृभाषाओं के लिए बुनियादी व्याकरण, प्राइमर और ध्वन्यात्मक पाठकों की तैयारी।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास करना और भाषा केंद्रों की स्थापना का समन्वय करना।
- बाल साहित्य की खरीद के लिए राज्य सरकारों और प्रकाशकों के साथ समन्वय करना।
- CIIL में रखे गए LDC-IAL ने भाषा डेटा का पाठसंग्रह विकसित किया है जो भाषा पाठ्यपुस्तकों, विश्लेषण के लिए उपकरणों और शिक्षण सीखने के लिए अनुप्रयोगों के विकास में मदद कर सकता है।
- CIIL अपनी भारतवाणी परियोजना के माध्यम से कई भाषाओं के लिए पुस्तकों और शब्दकोशों सहित शैक्षणिक संसाधनों का डिजिटलीकरण और वेब-होस्टिंग प्रदान करता है।
- CIIL अपनी SPPL परियोजना के माध्यम से इन भाषाओं को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से कम-ज्ञात और लुप्तप्राय भाषाओं के डिजिटल अभिलेखागार का दस्तावेजीकरण और विकास कर रहा है।
- CIIL में स्थित राष्ट्रीय अनुवाद मिशन अनुवादकों को प्रशिक्षण प्रदान करता है और पाठ्यपुस्तकों के अनुवाद का काम करता है।
- CIIL में स्थित राष्ट्रीय परीक्षण सेवा – भारत ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के लिए परीक्षण और मूल्यांकन सुविधा विकसित की है और विद्यालय के शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया है।

NEP अंग्रेजी और विदेशी भाषाओं के साथ भारतीय भाषाओं के शिक्षण की अनुशंसा करती है।

NEP नियमित उपयोग, शैक्षणिक सामग्रियों की तैयारी, शिक्षकों के प्रशिक्षण, शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषाओं को अपनाने, नवीन विधियों, प्रौद्योगिकी के विवेकपूर्ण उपयोग और सभी भाषाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास और उनकी उल्लेखनीय एकता के माध्यम से भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने की परिकल्पना करता है। NEP स्थानीय किस्मों के साथ भारतीय सांकेतिक भाषा के शिक्षण के माध्यम से श्रवण-बाधित आबादी के भाषाई सशक्तिकरण की भी सिफारिश करती है।

वर्तमान दिशा और आगे की योजना:

नवंबर 2021 में शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से संबद्ध संस्कृत प्रस्तावक और पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित चामु कृष्ण शास्त्री के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं के प्रचार के लिए एक उच्चस्तरीय समिति, भारतीय भाषा समिति का गठन किया। समिति को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत निर्धारित भारतीय भाषाओं के विकास के लिए एक कार्य योजना तैयार करने का काम सौंपा गया है, जिसके लिए स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना आवश्यक है।

केंद्र सरकार विद्यालयों, उच्च शिक्षण संस्थानों और भाषा के अन्य क्षेत्रों, जैसे रोजगार में भाषाओं की वर्तमान स्थिति का अध्ययन कर रही है। उन्होंने पाया है कि शिक्षा के माध्यम के रूप में 35 मातृभाषाएँ हैं, और त्रिभाषा सूत्र के भाग के रूप में, 160 भाषाओं के साथ-साथ मातृभाषाएँ भी पढ़ाई जाती हैं (उदाहरण के लिए, हिंदी एक मातृभाषा और एक भाषा है, जबकि गढ़वाली एक मातृभाषा है लेकिन भाषा नहीं)। NEP को लागू करने में पहली चुनौती अध्ययन सामग्री प्रदान करना है, और प्रथम वर्ष के लिए उनका ध्यान कक्षा 1 से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षा की सभी धाराओं अर्थात् विज्ञान, मानविकी और वाणिज्य की पाठ्य सामग्री को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना।

शिक्षा मंत्रालय सक्रिय रूप से नियामक निकायों, विश्वविद्यालयों और प्रोफेसरों के साथ जुड़ रहा है और प्रशिक्षण में सहायता प्रदान कर रहा है, और कार्यशालाओं और अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) ने 12 भाषाओं में प्रथम वर्ष की इंजीनियरिंग पुस्तकें

तैयार की हैं और कुल 270 पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। द्वितीय वर्ष की पुस्तकों पर काम चल रहा है। इसी तरह, बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने भारतीय भाषा समिति और यूजीसी के साथ मिलकर भारतीय भाषाओं में विधिक पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए पूर्व सीजेआई शरद बोबडे की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है। मध्य प्रदेश सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्य की चिकित्सा परिषद ने भी प्रथम वर्ष की पुस्तकें [हिंदी में] तैयार की हैं। हाल ही में, तंजावुर में शास्त्र विश्वविद्यालय ने घोषणा की कि वे उच्च शिक्षा में तमिल में 75 विषयों में 75 पुस्तकों का प्रकाशन करेंगे।

पाठ्यपुस्तकों के अलावा, हमें शिक्षकों को द्विभाषी होने के लिए भी तैयार करने की आवश्यकता है। विद्यालय स्तर पर लगभग 1 करोड़ शिक्षक हैं, जिनमें से लगभग 30 लाख भाषा शिक्षक हैं। उच्च शिक्षण संस्थानों में करीब 2-3 लाख शिक्षक होंगे। फिर रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने की जरूरत है, न कि केवल भाषा के छात्रों के लिए शिक्षण कार्य। भारतीय भाषा परिषद ने योग्यता के रूप में भाषाओं को शामिल करने पर राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के अध्यक्ष के साथ चर्चा की है। भारतीय भाषाओं के लिए अधिक दृश्यता सुनिश्चित करने की भी आवश्यकता है।

किसी भाषा के विकास के लिए सात आवश्यकताएँ होती हैं; निर्देश या संचार या मनोरंजन या विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम के रूप में उपयोग करना; भारतीय भाषाओं में विश्व स्तर पर समकालीन साहित्य या सामग्री जैसे वर्तमान विकास, विचार या दैनिक ज्ञान का विकास करना; नए शब्दों के सृजन की सतत प्रक्रिया की भी आवश्यकता है; पाँचवाँ, हमें प्रौद्योगिकी के अनुकूल होने के लिए भाषाओं की आवश्यकता है क्योंकि 2,000 से 3,000 भाषाएँ जो प्रिंट तकनीक के अनुकूल नहीं थीं, लुप्त हो गईं; छठा, हमें शिक्षण और सीखने की सामग्री की आवश्यकता है; और अंत में हमें संरक्षण की जरूरत है, जो समष्टिगत, समाज और सरकारों से हो सकता है। इस तरह हम भविष्य की योजना की कल्पना कर रहे हैं।

अब तक किसी भी शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं में शिक्षा सुनिश्चित करने पर इतना जोर नहीं दिया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह पहली बार है कि हम भारतीय भाषाओं के लिए एक मजबूत प्रेरणा देख रहे हैं। भारतीय भाषा शब्द का प्रयोग 30 बार हुआ है। त्रिभाषा फार्मूले के लिए भाषाओं को चुनने के लिए राज्यों को स्वतंत्रता भी दिया गया है। कोई भाषा निर्धारित नहीं की गई है। राज्य तय करेंगे, उन्हें चुनने की आजादी है। यह एक लोकतांत्रिक और विकेंद्रीकृत प्रक्रिया होगी। किसी भाषा को थोपा नहीं गया है।

यह भाषा शिक्षण में एक महान प्रतिमान बदलाव है। अन्य प्रतिमान बदलाव मातृभाषा है- प्राथमिक और उच्च शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से होनी चाहिए, साथ ही तीन विकल्प हैं जो क्षेत्रीय भाषा या स्थानीय भाषा या घरेलू भाषा हैं। ये विकल्प भी दिए गए हैं।

यहां तक कि तमिल में भी 12-13 अलग-अलग बोलियां हैं। लेकिन कुछ खास वजहों से तमिलनाडु ने सिर्फ तमिल को बढ़ावा दिया है। अब उन्हें केवल तमिल सीखने के लिए [NEP को लागू करने में] समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। राज्य में तमिल का भी पतन हो रहा है। 2010 में 12वीं कक्षा में 75% तमिल माध्यम के छात्र थे और 2020 में यह आंकड़ा घटकर 55% रह गया है। तमिल भी उनकी नीति के कारण [गिरावट पर] है। उन्हें अपनी मानसिकता बदलनी होगी।

अन्य सभी भारतीय भाषाओं की तरह हिंदी को भी बढ़ावा देने की जरूरत है। लगभग 50% नागरिक हिंदी बोलते हैं, तो यह एक फायदा है। जहां अंग्रेजी माध्यम है, वहां हिन्दी माध्यम होना चाहिए। हिंदी सीखने की इच्छा या संकल्प होना चाहिए, जो देश को एक करेगा।

संस्कृत को अब तक या तो अंग्रेजी या हिंदी के माध्यम से पढ़ाया जाता रहा है, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बड़ा जोर संस्कृत के माध्यम से संस्कृत पढ़ाने के लिए है। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय सरल, मानक संस्कृत का विकास करेगा जिसका उपयोग शिक्षा और संचार के माध्यम के लिए किया जा सकता है। संस्कृत ज्ञान प्रणाली, या संस्कृत ग्रंथों में ज्ञान का भंडार भी है, जिसे शोधित और प्रकाशित किया जाएगा और सुलभ बनाया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह कहती है कि सभी भाषा संस्थानों को बहु-विषयक होना चाहिए। अतः संस्कृत को मुख्यधारा में लाने के लिए चिकित्सा, एसटीईएम, प्रबंधन पाठ्यक्रमों के साथ-साथ संस्कृत को भी उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के जरिए देश पहली बार उस शिक्षा व्यवस्था को तैयार कर रहा है जो दूरंदेशी और अत्याधुनिक है। हमारा देश विश्व में सबसे प्राचीन परम्पराओं का घर है। इसलिए, ये हमारी जिम्मेदारी भी है कि हम अपनी परंपराओं और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करें, उसका संवर्धन भी करें, और हो सके उतना आगे भी बढ़ाएं।

आज मेरे शहर में चुनाव है

यश ध्वज
बी.ए.हिंदी विशेष. प्रथम वर्ष

हाँ आज मेरे शहर में चुनाव है।
माना कि कल रात कुछ लोगों ने
चुनाव किया पैसों का,

कुछ लोगों ने चुनाव किया शराब का,
कुछ लोगों ने चुनाव किया अपनी जाति का,

कुछ लोगों ने चुनाव किया बाहुबल का,
और कुछ लोगों ने चुनाव किया चाटुकारिता का,

पर यह चुनाव कल रात हुआ,
और आज मेरे शहर में चुनाव है।।

हाँ आज मेरे शहर में चुनाव है,
चुनाव शहर की बागडोर संभालने वालों का,

चुनाव हैं जनता की सेवा करने वालों का,
चुनाव है भ्रष्ट और श्रेष्ठ उम्मीदवार का,

चुनाव है शहर को उन्नति की
राह पर ले जाने वालों का,
चुनाव हैं उस उम्मीदवार का
जो वास्तव में उम्मीदवार है।

आज मेरे शहर में चुनाव हैं
हाँ आज मेरे शहर में चुनाव है,

वह अलग बात है कि कल रात चुनाव हुआ
बेईमानी का,दुराचारी का, लोकतंत्र के हत्यारे का,

पर वास्तव में आज मेरे शहर में चुनाव है।।
हाँ आज मेरे शहर में चुनाव है,

चुनाव है जाति पाति से ऊपर उठने का,
चुनाव है रोजगार का,
चुनाव है परिवर्तन का
चुनाव है लोकतंत्र का,
चुनाव है शिक्षा, स्वास्थ्य,
और विकास की मांग करने का,
आज मेरे शहर में चुनाव हैं

हाँ आज मेरे शहर में चुनाव है,
पैसा, शराब, धमकी देने वाला उम्मीदवार
तो परेशान है ही,
परेशान है वह भी जो सच में
करना चाहता बदलाव है

आज मेरे शहर में चुनाव है
हाँ आज मेरे शहर में चुनाव है

ज़िंदगी

बलजीत सिंह सलूजा
बी. ए. हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

गरीबी देख मेरा रुख़ हां जब जब आह भरती है
फटी चादर को सिल मुंह पर मेरे वह ओढ़ जाती है

मै सौ सौ बार करता मिन्नतें यही पूछता रहता
खता मेरी न बतलाती, वह बस मुंह मोड़ जाती है

दबाकर मन में पीड़ा और दुख चुपचाप सहता हूं
वो आंखों की नमी, बेचैनी, भांडा फोड़ जाती है

मै जब जब हार कर परेशान हो उसे छोड़ना चाहूं
वो बेदर्दी मेरा दिल दूसरे से जोड़ जाती है

पता जब-जब भी पूछूं सुख और सुकून का ज़िंदगी से मैं
वो हर एक बार मुझको मेरे ही घर पर छोड़ जाती है।

अनकही मोहब्बत

गौरव सिंह राठौड़
बी.ए.ई इतिहास विशेष, प्रथम वर्ष

तुम्हारी इन काली अलको को
तुम्हारी इन प्यारी पलको को
जबसे हमने देखा
तुम्हारी जुल्फों के भंवर में दिल को फसाया है

इस दिल में होते दंगो को
तुम्हारी मोहब्बत के रंगों को
जबसे हमने देखा
तुम्हारे इश्क ने दिन का चैन और रातों का सुकून गवाया है
तुम्हारी इन झील सी गहरी आंखों को
तुम्हारी कलाई में बंधे इन काले धागों को
जबसे हमने देखा
खुदा को छोड़ तुम्हारे सजदे में सर झुकाया है

तुम्हारे इन रेशमी बालों को
तुम्हारे इन गोरे गालों को
जबसे हमने देखा
तुम्हारा नाम हमने अपने ओंठ पे सजाया है

तुम्हारे इस कोमल बदन को
तुम्हारे इस चंचल चितवन को
जबसे हमने देखा
तुम्हारा नाम हमने अपने होठों पे सजाया है

लेकिन
लेकिन
लेकिन

तुम्हे आराध्या मानकर हमने
खुद को संत किया है
जानते है खता हुई है हमसे
क्योंकि
तुमसे मोहब्बत कर हमने
अपने आरंभ को अंत किया है।

अमृत महोत्सव

हेमलता
बी.ए. हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

है नया विश्व यह नया सवेरा
जीवन का सूर्योदय, और नया बसेरा
आज़ाद परिंदा घूम रहा आसमां में
यह आज़ादी का अमृत महोत्सव नया सवेरा

देखना होगा हमें नया रूप आबादी का
हम मना रहे हैं जश्न आज आज़ादी का
कदम कदम पर खुशबू और किलकारी हैं
अब काम नहीं है इस भारत में, नारेबाजी का

हमारी संस्कृति अमृत के समान है
सभ्यता स्वरूप का इस भारत में मान है
बरसों से हमारा चमन आज भी है सलामत
यहां हर जाति - धर्म का बराबर सम्मान है

भारत के हर समुदाय के अलग महोत्सव हैं
मिलकर मनाए जाते सभी ये उत्सव हैं
बिना द्वेष के मिलते हैं सब आपस में
जिसका नाम 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' है।

हालातों से मजबूर : बाल मजदूर

अतुल कुमार श्रीवास्तव
बी.ए.हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

जिन मासूमो के नसीब में कभी नहीं होते,
कलम, किताब, खिलौने और प्यार

उनके पास हमेशा मिलेगा आपको,
ईंट, पत्थर और जिम्मेदारियों का भार

जिनकी दुनिया इस रंगीन दुनिया से हैं अलग,
सुकून, खुशियों और ख्वाहिशों के पार

उन्हें मेहनत के बदले में हैं दिया जाता,
लानत, गालियां और नफ़रत बेशुमार

और इससे बचकर जो हाथ में पैसे हैं आते,
उनपर भी आंखे लगाए हुए हैं लुटेरे हज़ार

उन्हें नहीं दिखती उनके चेहरों की मासूमियत,
उन्हें महज़ दिखता है पैसों के लिए एक शिकार

हाथ फेर, माथे पर चूमे कोई ज़रा प्यार से,
इन नन्हें बच्चों को हैं उस वक्त का इंतज़ार

इन्हें यूं मेहनत करता देख पूछता हैं "अतुल",
ये सच में बच्चे हैं या हैं कोई आदमी जिम्मेदार।

जीवन में बदलाव का स्वागत ख़ुशी से करें

गुंजन पारीक
बी.ए.प्रोग्राम, प्रथम वर्ष

1. हाउ तो विन फ्रेंड्स एंड इन्फ्लुएंस पीपल
लोगों के साथ सहज रहें या फिर दूरी बना लें।
दुनिया में हर तरह के लोग पाए जाते हैं। अगर उन्हें अनदेखा नहीं कर सकते, तो सहज रहें।सहज रहते हुए विनम्रता से बात करेंगे तो पाएंगे कि उनके पास आपसे मीठा बोलने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा।आपके शिष्टाचार के आगे उनकी मलिनता उन्हें बहुत छोटा महसूस करवाएगी। लेकिन फिर भी अगर उनसे बात करके आप परेशान होते हैं तो उनसे दूरी बना लें।

2. द मैजिक ऑफ़ थिंकिंग बिग
बड़ी उम्र में गलती करना ज्यादा तकलीफ देता है।
उम्र के साथ हमारा स्वाभाव जितना लचीला होगा,उतनी जल्दी हम नयी गलतियों को स्वीकार करना सीखेंगे। जितनी ज्यादा गलतिया हम करते हैं,उतनी कम संभावना नयी गलतियां करने की होती है। शोध बताते है कि एक उम्र के बाद गलती करना और उससे सिखना ज्यादा तकलीफदेह होता है। जबकि जवानी में गलती करना और उससे सीखना कम तकलीफ देता है।

3. थिंकिंग, फ़ास्ट, स्लो
विनम्रता अपने अंदर पैदा की जा सकती है।
विनम्रता या तो स्वाभाविक तौर पर आती है या धीरे धीरे जतन करने से अपने अंदर पैदा की जा सकती है। जब एक पेड़ पर फल लगते हैं तो वह झुक जाता है। इसी तरह विनम्र व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है तो उसमे भी विनम्र होकर चलने का एहसास पैदा होता है। जब व्यक्ति सोचता है कि जो उससे मिला है वो उसकी योग्यता से ज्यादा है, तो इससे विनम्रता कहते हैं।

4 पावर ऑफ़ पॉजिटिव थिंकिंग
बदलाव को बिना विरोध के अपनायें।
जीवन हर पल बदलता है। कभी बदलाव अच्छे होते हैं तो कभी विरुद्ध लगते हैं। बदलाव जीवन का हिस्सा है। हमें बदलाव को बिना किसी विरोध के अपनाना चाहिए। बदलाव किसी निश्चत तारीख या समय पर निर्भर नहीं करता,यह यो सतत प्रक्रिया है। जीवन में बदलाव का स्वागत ख़ुशी से करे।

नियति

अतुल कुमार श्रीवास्तव
बी.ए. हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

जब मझलिस गांव से आए किसी संत ने धीरज की हस्तरेखा को देखकर उसका लेखा जोखा सामने रखते हुए कहा की तुम्हारी होने वाली संतान तुम्हारे कुल और समाज में बदनामी का कारण बनेगा तब बहुत ज्यादा बल देकर कारण पूछने पर संत जी ने एक शब्द धीरे से कहा। उसी एक शब्द की चीख आज भी बाईस वर्षों बाद कानों में कंटक के भांति चुभती रही। आज इतवार हैं, और आज बाईस वर्षों का भय सत्य में बदलने के लिए सज्य हैं। संत जी के मुख से निकला वो एक शब्द धीरज और आशा की हंसती खेलती जिंदगी को बर्बाद करने के लिए काफी था। उसी एक शब्द को सीने में दबाएं दोनो दंपत्तियों ने आशा और धीरज की डोर कसकर पकड़ रखी थी।

"अब संयम का बांध टूट चुका हैं आशा"। धीरज ने जब झेपते हुए कहा तो आशा उठ खड़ी हुई और धीरे से मधुर आवाज़ में प्रश्नाभाव में पूछी "सूरज क्या कभी तपन छोड़ता हैं भला, अंधकार अपना तमस भुलाता हैं कही, तो धीरज अपनी धैर्यता कैसे छोड़ सकता हैं। अधीर न हो, धीरज धरो।" धीरज ने कुछ क्षण तक आशा को खूब ध्यान से देखा मानो वह आशा की आंखो को पढ़ना चाहता हैं या उसकी आंखों की गहराइयों का थाह मालूम करना चाहता हैं। अगले ही पल पुनः आशा ने प्रश्न का तीक्ष्ण बाण छोड़ा, "कहो, संयम क्या हैं धीरज?"। धीरज ने बिना कुछ सोचे झट से पलट कर जवाब दिया मानो कोई विद्यार्थी कक्षा में किसी एक ही प्रश्न का उत्तर अच्छे से तैयार कर आया हो, और उसी प्रश्न को सुनकर अपना समूचा ज्ञान प्रस्तुत कर दिया हो। धीरज ने उत्तर में कहा कि संयम एक युद्ध हैं जो की स्वयं के ही विरुद्ध हैं। आशा ने मंद रूप से मुसकाया तो धीरज के माथे पर बल पड़ा। उसने आशा के विचार जानने का प्रयत्न किया, इससे पहले वह उससे कुछ पूछता आशा धीरज के मन की बात जान गई और बोली, "मैं मानती हूं संयम युद्ध नहीं। युद्ध में दो ही विकल्प बचते हैं जय या पराजय। संयम जय और पराजय के मध्य की बात हैं, संयम का मसला युद्ध या क्रांति का नहीं बलिक मौन का हैं। न हम खुद से लड़ सकते हैं और न ही सुलह कर सकते हैं। इतना कहने की देरी थी की डाक बाबू की चिट्ठी आ गई। तुरंत ही आशा रसोई से पानी और गुड़ लेकर आई, और डाक बाबू से रोहित के नाम की चिट्ठी ले ली। चिट्ठी को पढ़कर आंखों में अश्रु भर आए परंतु आंख में ही सूख कर रह गए। काले काले अक्षरों में साफ साफ लिखा था, "मां मैंने कुछ नहीं किया हैं, मैं बेकसूर हूं। मुझे बचा लीजिए, मुझे यहा कुछ अच्छा नहीं लगता मां।"

दरअसल आज आशा और धीरज के बेटे रोहित को कारावास में गए एक हफ्ते होने को थे। नियमानुसार हर इतवार को गुनहगार से डाक चिट्ठी, तार आदि से बात हो सकती हैं। आशा ने चिट्ठी को पुचकारते हुए कहा, सब ठीक हो जायेगा। डाक बाबू ने पूछा, "बेटी आशा तेरी कोई चिट्ठी हैं तो बता दे, संदेशे पहुंचा दूंगा तेरे लाल तक"। आशा ने धीरे से कहा की कह देना उससे सब ठीक हो जायेगा। धीरज ने रुआसे स्वर में कहा, "ठीक कुछ नहीं होने वाला आशा, बाईस वर्ष पूर्व जो भविष्यवाणी हुई थी वो सच होकर रहेगी। तुम्हें पुनः स्मरण करा देता हूं कि ..... आशा5 ने बीच में रोकते हुए कहा की भविष्य क्या हैं धीरज ? भविष्य एक कल्पना हैं, एक अनहोनी हैं जिसकी खबर किसी को भी नहीं होती। हम अच्छे भविष्य की कामना कर सकते हैं, अच्छी भविष्य के लिए सुकर्म कर सकते हैं और यदि हम गलत नहीं तो हमारे साथ गलत कैसे हो सकता हैं। चलो आज रोहित की पेशी हैं, वकील साहब सीधे वही आएंगे।

दोनो अभी निकल ही रहे थे की मिश्रा जी ने झट से उनका राह रोकते हुए अपना सहानुभूति से भाव विभोर पीड़ा को प्रकट करते हुए कहा, " अरे भाभीजी सुनकर तो तनिक मुझे भी बुरा लगा, रोहित तो ऐसा नहीं था। उसे तो सभी गौ की तरह सीधा समझते थे परंतु ... एक बार चोरी के इल्ज़ाम में हवालात जाता तो मान भी लेता पर बलात्कार ... छी छी! राम राम! कभी नहीं कभी नहीं। मेरा हृदय मानने को तैयार ही नहीं। आशा ने पलट वार का सोचा परंतु देरी होने के कारण उसने वहा से निकल जाना ही उचित समझा।

आशा ने आवेग में आकर क्रोधित स्वर में कहा, "किस तरह घर पर आकर मिश्रा जी मिसरी सी मीठी बोली बोलते थे, आज अवसर मिला तो तीखे जवान छुरी की तरह चल रहे हैं। मैं न कहती थी यह जमाना खुद्दार और मतलबियों से भरा हैं, सभी मित्र और शुभ चिंतक के रूप में शत्रु ही तो हैं।" इतने में काले कोट पहने वकील साहिबा आशा के निकट चली आई। वकील साहिबा ने मुस्काते हुए अपने परिचय में कहा, " नमस्ते, मैं नियती आपके बेटे रोहित की वकील। दरअसल मेरे पिता जी की तबियत ठीक नहीं रहती, तो उन्होंने मुझे भेजा हैं। आप निश्चिंत हो जाए, मैंने केस का अच्छे से अध्ययन किया हैं। परिणाम आपके अनुकूल ही होगा। पहले आशा को महिला वकील पर संदेह सा हुआ, उसके स्त्रीत्व बुद्धि ने उसे यह सोचने पर मजबूर कर दिया की एक स्त्री भला कोट

कचहरी के काम कैसे संभाल सकती हैं, उसके हृदय में एक पल के लिए पराजय का भय सा आ गया परंतु वकील साहिबा की वाणी ने उसे भीतर ही दबा कर बुझा दिया। वकील साहिबा अपने साथ न केवल दस्तावेज़ और कानूनी कागज़ात लाई थी बलिक अपने साथ एक नवीन उम्मीद भी लेकर आई थी। ये वकील कौन हैं, कहा से हैं यह किसी को नहीं पता और न ही इन्हें किसी ने कचहरी में पहले कभी देखा था। सभी की निगाहें उसी पर टिक गई।

जज साहब, मेरे मुवक्किल रोहित पर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होंने अपनी सहपाठी तृषा का बलात्कार करने का प्रयास किया हैं। तृषा जी का कहना हैं की उन्हें जबरन कॉलेज के किसी सन्नाटे वाले इलाके में ले जाकर छेड़ छाड़ या बलात्कार करने का प्रयास किया गया हैं .....

रोहित के समूचे सहपाठियों ने रोहित के पक्ष में बयान दिया। और ऐसे ही देखते देखते तीन घंटों तक वाद विवाद चलते चलते अपने परिणाम की ओर बढ़ा। तृषा के समस्त सबूत झूठे निकले और उचित न्याय रोहित के पक्ष में आया। सभी ने जोर से तालियां बजाईं, आशा दौड़ती हुई अपने पुत्र के समीप गई और उसे खूब दुलारा। आभार प्रकट करने हेतु जब वह वकील साहिबा को ढूंढने लगी तो वो वहा से जा चूंकि थी। आशा को अचरज सा हुआ, उसके माथे पर बल पड़ गया। आखिर वह महिला वकील कहा चली गई। जब उसने अपने वकील को फोन किया तो वहा से जो पता चला वो आशा को और परेशान कर देने वाला था। आशा और धीरज को लगने लगा की जिस भविष्यवाणी के कारण दोनों मरे जाते थे वो आज झूठ साबित हुई, सब ठीक ही हुआ। नियती गलत साबित हुई, और आशा जीत गई। नियती ? आशा इससे पहले कुछ समझती वकील साहिबा की एक बात कानों में गूंज उठी, नियती कभी झूठ नहीं हो सकती, नियती में लिखा हुआ हो कर रहता हैं।

बहुत प्रयास के बाद जब दो माह बीत गए तब भी आशा की हृदय को चैन न पड़ा, उसकी सुई नियती नाम की बिंदु पर टिक सी गई। उसके मन में सैकड़ों प्रश्न उभरते बिखरते रहे। आशा जब घर के लिए सामान लाने दरिया बाजार गई, तो वही उसने फिर उसी वकील साहिबा को देखा। उसने उससे बात करने का प्रयास किया पर वह वहां से अपने निवास स्थान की ओर प्रस्थान कर चुकी थी। आशा को आज किसी भी कीमत पर अपने प्रश्नों के उत्तर चाहिए थे। धीरज के प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर देने वाली विदुषी आशा आज स्वयं प्रश्नों के घेरे में खड़ी थी। वकील के एक एक पग आशा के हृदय की गति को सौ सौ बार धड़काए दिए जाते थे। वकील साहिबा को शहर की बदनाम गलियों में उतरते देख आशा चौक गई। तो क्या ये वकील वैश्याओं के साथ रहती हैं ? तो क्या इसका उठना बैठना तबायफ के साथ हैं ? या यह स्वयं एक तवायफ.... नही नहीं ... ऐसे हजारों प्रश्न फिर कौंध उठे, और ये नूतन प्रश्न पुराने वाले प्रश्नों को ढके जाते थे।

आशा को यकीन नहीं हुआ, जब उसने वहा की किसी महिला से पूछा तो जांच पड़ताल से मालूम हुआ कि नियती कोई वकील नहीं एक तवायफ हैं, एक वैश्या। आशा के पैरों के नीचे से ज़मीन सरक गई, एक वैश्या ने उसकी मदद की ? क्यों ? आखिर क्या कारण रहा होगा ? आशा ने अपने प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए अपने डेग बढ़ाए। आशा ने दबे स्वर में पूछा, " तुम वकील नहीं हो ?", "कौन हो तुम?", "तुमने मेरे बेटे को किस स्वार्थ के लिए बचाया ?", "कहो, इसके बदले में तुम्हें कितने पैसे मिले और किसने दिए ?", "चुप न रहो, तुम्हारा मौन मुझे खाए जाता हैं। ईश्वर के लिए कहो, कौन हो तुम।"

नियति ने विनम्रता से उत्तर दिया, "मैं आपकी दोषी हूं, मैंने आपसे झूठ बोला कि मैं एक वकील हूं। असल बात तो यह हैं की मैं एक वैश्या हूं, मैं नियती हूं। मेरा नाम नियती हैं। पर आप निश्चिंत रहे, मैं जानती हूं कि आप कौन हैं। आपका अतीत, अपका वर्तमान और आपका समूचा भविष्य भी जानती हूं। आप जानना चाहती हैं कि मैं कौन हूं ? इससे पूर्व यह जान लीजिए कि आप कौन हैं। आशा नि:शब्द मौन होकर सब सुन रही थी, वह क्या कहे उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। वैश्या ने पुनः अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, "आपका अतीत हूं मैं, आपकी नियती हूं "। जिस बलात्कार और कुल की बदनामी की भविष्यवाणी के भय से आपने अपनी पहली संतान, अपनी बेटी को किसी गली गुचे में अकेला तड़पता छोड़ दिया था, वही जिंदा लाश हूं मैं। आपका अपना खून, जिस कुल और समाज के भय से आपने मुझे मार कर शराफत का लिबाज़ ओढ़ा था उसी का अंजाम हूं मैं। जिस नियती को बदलने के लिए आपने इस नियती को मरने के लिए छोड़ दिया था और जिस नियती को कभी नहीं झुठलाया का सकता हैं वही नियती हूं मैं। "

नियती के स्वर कानों को अप्रिय लग रहे थे परंतु सत्य सदा कठोर होता हैं, सत्य अप्रिय अवश्य लग सकता हैं परंतु मिथ्या कभी नहीं हो सकता। जिस एक बार के बलात्कार के भय से आशा और धीरज अपनी नियति को बदलने चले थे वो हिम की उच्च शिखरों की भांति अडिग और सत्य का चोला ओढ़े खड़ी थी। नियती ने मुस्काते स्वर में कहा, "आशा हार गई, नियती जीत गई। इस वैश्यालय की तंग गलियों में मेरा हर रोज़, हर पल बलात्कार होता हैं। आपने उस एक बार बलात्कार के भय से मुझे यहां हर रोज़ बलात्कार होने के लिए छोड़ दिया हैं। आशा भले ही स्वार्थी हो सकती परंतु नियती नहीं। मैंने आपके बेटे को नहीं बलिक एक निर्दोष को बचाया हैं, वह निर्दोषी था और बलात्कार की बदनामी मुझ तवायफ से अच्छा कौन जान सकता हैं। आपके भीतर संवेदना नहीं, आप सबने शराफत को ओढ़ लिया हैं परन्तु नग्न बदन दिखाने वाली तवायफ एहसास ओढ़ती हैं। अपनत्व, न्याय, सत्य का एहसास। आज आशा को संयम के युद्ध में पराजय मिला। नियति जीत गई और आशा हार गई।

महिमा की राहें मृत्यु तक जाती हैं

सचिन यादव
बी.ए.इतिहास विशेष, तृतीय वर्ष

कबीर दास जी का एक प्रसिद्ध दोहा है कि मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा। तेरा तुझ को सौंपता क्या लागे है मेरा। आज से 700 साल पहले रचित यह पंक्तियां वर्तमान समय में और अधिक प्रासंगिक हैं।मानव अनंत अभिलाषाएं पाले रहता है, ये सभी अभिलाषाएं कभी भी पूरी नहीं होती। बात ठीक भी है फिर ऐसा क्यों है कि हम इतनी अभिलाषाएं स्वयं से पाल लेते हैं मैने कहीं एक कहानी सुनी थी आपको भी सुनाता हूं कि एक भिखारी छोटे से किसान के पास गया तो उसने सोचा कि किसान कितना सुखी है जिंदगी तो इसकी है,परिवार है ना कोई चिंता है, जबकि मुझे तो ये भी पता नहीं की आज कुछ मिलेगा भी या नही।

जैसे ही भिखारी भीख लेकर जाता है, छोटा सा किसान एक बड़े किसान के पास जाता है और उसके ठाट बाट देखकर सोचता है कि हम तो एक कुएं के मेंडक की तरह जिंदगी जी रहे थे,इसके बाद वह बडा किसान व्यापारी के पास जाता है और उसकी सान वान,मान,सम्मान,देख अपने आप को छोटा महसूस करता है,जब यही व्यापारी शहर के सबसे अमीर व्यक्ति के पास जाता है तो अपने को बहुत ही छोटा महसूस करता है कि इसके पास तो अधिकारियों, मंत्रियों की भीड़ लगी रहती है लेकिन शहर का सबसे बड़ा अमीर अपनी खिड़की में से देखता है कि एक भिखारी अपनी मस्ती में जा रहा है,उसे देखकर यह सोचता है कि जिंदगी तो इसकी है,यह वही भिखारी था जो एक छोटे से किसान के पास भीख मांगने आया था।

कहानी प्रेरणामयी है जीने की सीख भी देती है कि जिंदगी में ज्यादा अभिलाषाएं मत पालिए जो मिला है उसी में खुश रहिए क्योंकि कुछ भी पाने कि इच्छा कभी खत्म नहीं होती है, यही वह पथ है जहां से महिमा रूपी राहें इंसान को मृत्यु तक ले जाती हैं। हम जीवन में बड़े बड़े लक्ष्य लिए रहते हैं,सम्मान, प्रतिष्ठा की लालसा रहती है,लेकिन कई बार हमारे साथ ऐसा होता है की हम स्वयं के अनुसार जीवन नहीं जी पाते हैं आपको एक उदा.देता हूं की जब कोई हमारी प्रशंसा करता है तो हम चाहते हैं की हमारी प्रशंसा और अधिक होने लगे।सम्मान पाने की इच्छा और लालसा भी बढ़ती चली जाती है लेकिन ये इच्छा यदि सीमा में रहे तो बहुत बेहतर होती है लेकिन कई बार इंसान को अपंग बना के रख देती है और इंसान खोखला हो जाता है,फिर हम स्वयं के अनुसार न चलके दूसरों के अनुसार चलने लगते हैं, दिखावटीपन हमारे अंदर ऐसे समा जाता है कि फिर हम सहजता और हमारे वास्तविक व्यवहार से कोसों दूर चलें जाते हैं जिसके कारण हम स्वयं का वास्तविक व्यक्तित्व खो देते हैं और हमारे चरित्र पर एक नई परत चढ़ जाती है अर्थात एक परत के ऊपर दूसरी परत इस परत की विशेषता होती है कि इससे इंसान के अंदर बैठे हैं " मैं " की मृत्यु हो जाती है आप समझ ही गए होंगे कि" मैं" का क्या तात्पर्य है,जब "मैं" ही नहीं रहता तो जीवन भी व्यर्थ सा लगने लगता है इन सबके पीछे वही दिखावट रुपी महिमा है।" में" की मृत्यु होने पर जीवन जीवन उद्देश्यहीन हो जाता है, इसीलिए स्टीव जॉब्स ने एक बात कही थी कि जीवन में सबसे कठिन है सरल होना। एक अर्थ के बाद हम दूसरे अर्थ पर भी आते हैं मैने कहीं एक क़व्वाली सुनी थी जिसका मुखड़ा था की चढ़ता सूरज धीरे धीरे ढलता है ढल जाएगा जीवन में कई बार समय आता है जब हम प्रसिद्धि की पराकाष्ठा पर होते हैं और यह पराकाष्ठा तुक्के से नहीं मिली तो इसकी कीमत भी बहुत चुकानी पड़ती है, कई लोग शिखर पर पहुंचने के बाद सागर की भांति हों जाते हैं उनके अंदर आत्म संयम, विश्वास, देने की क्षमता, लेने की क्षमता,अपनी गहराई पर कभी भी अभिमान न करने की अद्भुद कला होती है। इसके विपरीत भांति के लोग भी होते हैं जो यदि शिखर पर पहुंच भी गए तो उसे स्थाई मान लेते हैं, जैसे ही आपने उसे स्थाई माना उसी दिन से आपके पतन का रास्ता तैयार।हम यह बात ठीक तरह से जानते हैं कि जीवन में कुछ भी स्थाई नहीं है सब कुछ क्षणभंगुर और नाशवान है हमने इतिहास से सीख ले सकते हैं कि ऐसे ऐसे पुरोधा हुए हैं कि उनके बारे मे कहने के लिऐ हमारे पास शब्द नहीं होते हैं। हमने देखा है सूरज को तेज चमकते हुए फिर शामों के शहर में ढलते हुए।आए किसी और उद्देश्य के लिए उलझ किसी और उद्देश्य में गए।जैसे ही हम इससे भटकते हैं महिमा की ये राहें हमे मृत्यु तक पहुंचा देती हैं,जबकि यही राहें हमें अनंत की ओर भी ले जा सकती हैं।

हम में से अधिकांश कल पर जीते हैं जबकि आज,आज ही जीने के लिए दिया है, इस कल की चिंता में हम आज और अभी को गवा देते हैं और यह चिंताएं चिता की राहें तैयार करने लगती हैं।इसी को लेकर तुलसीदास जी ने कहा है कि

तुलसी भरोसे राम के, निर्भय होके सोए।
अनहोनी होनी नहीं, होनी है सो होय।।

मैं आपकी होना चाहती हूं

अलका
बी. ए. हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

मैं आपकी होना चाहती हूं,
खुद को आपमें डुबोना चाहती हूं।
ज़रा देकर तो देखिए एक मौका,
ढाल बनकर खड़ी रहूंगी सदा,
उस कैकेई की तरह।
चाहूंगी आपको,
उस दीवानी मीरा की तरह।
सह लूंगी दुःख-दर्द आपके वियोग का,
उस उर्मिला और यशोधरा की तरह।

क्योंकि आपका होना ज़रूरी है मेरे लिए,
आपके साथ रहने से अधिक।
नहीं चाहती आपकी धन-दौलत,
बस आपका ज़रा सा सोने सा वक्त चाहूंगी।

कर जाऊंगी अपनी जान कुर्बान और
बांधूंगी धागे मन्नत के मंदिर में,
अरदास करूंगी गुरुद्वारे में,
करूंगी फरियाद मस्जिद में,
आपकी तरक्की के लिए।
मम्मी पापा का भी रखूंगी ख्याल बेशक,
पर,
ज़रा आप इजाज़त तो दीजिए,
आपका सब अपना तो कीजिए।
कुछ भी कुर्बान करना पड़े,
करूंगी मैं।
और नहीं जानती कि अंजाम - ए - मोहब्बत क्या होगा?
पर हां जब तक ये जिस्म-ओ-जान रहेगी,
आपके नाम की ही होकर रहेगी।

नयन निशा को भूल गई है

विजय भारती
बी.ए.दर्शनशास्त्र विशेष, प्रथम वर्ष

शाम शून्य को साथ मे लेकर...!!
कुपित काल को हाथ में लेकर...!!
जग से अब वो दूर गई है ...!!
नयन निशा को भूल गई है ...!!

कोई जाता मन में राम लिए
कोई आता संग में काम लिए
कहते दोनो विपरीत पग है ...!!
इस भ्रम को पाले ही जग है..!!
ऐसे उन्मादों के पल में ...!
वो सत्य से भी अब छुट गई है...!!
नयन निशा को भूल गई है...!!

वो नश्वरता को ध्यान किए है...!!
फिर भी कुछ अरमान लिए है...!!
जो स्वप्न निंद्रा में आती है ...!!
उस निंद्रा से अब चुक गई है...!!
नयन निशा को भूल गई है ....!!

तन भी मस्ती में झूम रहा ...!!
मन तृष्णा को है चूम रहा...!!
सुख के सत्यों को लेकर भी....
दर दर है बस वो घूम रहा ...!!
नियमित नेहों को पाकर भी ...!
घर से ही अब रूठ गई है ...!!
नयन निशा को भूल गई है...!!

क्या काल का भी होता कोई रूप..?
जो हो जाए वो किसी के अनुरूप....!
इस सत्य को क्यों माने कुरूप....?
यहीं है इस जग का मूल स्वरूप...!!
इन बातो से ह्रदय मृदुल ये... !
अपने ही हाथों टूट गई है ....!
नयन निशा को भूल गई है...!!

महाभोज उपन्यास : समकालीन राजनीति का जीवंत दस्तावेज

सोनू कुमार
बी.ए. हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

महान लेखिका मन्नू भंडारी के महाभोज उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1982 माना जाता है। आलोचकों का यह मत है कि इस उपन्यास का केंद्रीय तत्व बिहार के बेलछी कांड पर आधारित है। जो 1977 में घटित हुआ, बेलछी कांड में दलितों और निम्न जातियों के लोगों के घर जला दिए गए थे ठीक इसी तरह महाभोज में भी इसकी खासी बानगी दिखलाई पड़ती है। महाभोज उपन्यास में सिर्फ तत्कालीन राजनीतिक दुराचारों की पोल का खुलासा ही नहीं बल्कि आज की राजनीति का पर्दाफाश भी हुआ है।

बीसू और बिंदा आदि अनेक लोगों द्वारा दलित उत्थान और दलितों में अधिकारों के प्रति जागरूकता आदि प्रसारित करने का पूर्ण प्रयास किया जाता है। किन्तु जोरावर और दा साहब जैसे दोहरे चरित्र के लोग बीसू और बिंदा की कोशिशों पर पानी फेर देते हैं, न सिर्फ पानी फेरते हैं बल्कि उन्हें खत्म करने का पूरा रोडमैप तैयार कर लेते हैं। आज भी अनेक बीसू और बिंदा समाज में दिखाई पड़ सकते हैं किंतु इसी तरह के जोरावर और दा साहब जैसे लोगों की भी कोई कमी नहीं है जो अनेक बीसू और बिंदा की दर्दनाक हत्या करवा देते हैं। राजनीति का अपराधीकरण और अपराधीकरण की राजनीति इससे भलीभांति स्पष्ट हो जाती है। समकालीन राजनीति में अनेक दा साहब जैसे नेताओं से आप रूबरू हो सकते हैं जिन का दोहरा चरित्र और दोहरा मुखौटा होना आम बात हो गई है। किस तरह दलित, शोषित, वंचित, पीड़ित आदि अनेक निम्न वर्गीय समूहों को वोट बैंक की राजनीति में घसीट कर मनुष्य से इतर मतदाता बनने की होड़ चल पड़ी है।

लोकतंत्र का प्रहरी और चतुर्थ स्तंभ कहा जाने वाला मीडिया किस तरह राजनेताओं के चंगुल में फंस जाता है और उनकी चरण वंदना और स्तुति करने में लगा रहता है इसकी बानगी महाभोज में भली-भांति देखी जा सकती है। समकालीन राजनीतिक परिदृश्य पर दृष्टिपात करने पर भी कुछ स्थिति परिवर्तित नहीं हुई है, बल्कि मैं तो ऐसा मानता हूं कि स्थिति और भी खराब होती गई है। आज भी अनेक दत्ता बाबू द्वारा मशाल जैसे अनेक अखबारों का संपादन किया जा रहा है और वह महिमामंडन और गाथा गाने की सुधीर परंपरा यूं ही आगे बढ़ रही है। जिस मीडिया को सशक्त विपक्ष माना जाता है उस मीडिया की चाटुकारिता हद दर्जे तक आगे बढ़ चुकी है। यह आरोप सिर्फ प्रिंट मीडिया को लेकर ही नहीं यह स्थिति इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तक में कमोवेश ऐसी ही बनी हुई है, कुछ ही लोग ऐसे दिखलाई पड़ते हैं जो आज ही लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रहरी बने हुए हैं।

21 वीं सदी के दा साहब और दत्ता बाबू का मेल मिला अब किसी से छुपा नहीं है आज के संपादक मशाल जलाकर समाज में प्रकाश नहीं वरण समाज में आग लगाने का कार्य भली-भांति करना सीख गए हैं। उपन्यास के पात्र सक्सेना के व्यक्तित्व से स्पष्ट होता है कि पुलिस में सभी लोग भ्रष्ट नहीं होते, सक्सेना की संवेदनशीलता इस बात का परिचायक है कि आज भी पुलिस व्यवस्था में अच्छे लोग विद्यमान हैं पर आज भी अनेक लालची डीआईजी सिन्हा दिखलाई पड़ जाएंगे जो अपने प्रमोशन के लिए किसी को तबाह करने में संकोच नहीं करते।

जिस प्रकार उपन्यास में राजनीतिक रसूख और आतंक जोरावर का है ऐसे अनेक जोरावर गांव कस्बों में मिल जायेंगे जिन के लिए लोकतंत्र का मतलब है दहशतगर्दी और आतंक फैलाना, जिस प्रकार महाभोज में दा साहब दोहरे चरित्र के व्यक्तित्व के धनी दिखलाई पड़ते हैं ठीक उसी प्रकार धर्म का चोला ओढ़े आज भी अनेक नेता राजनीति में सक्रिय हैं जो धर्म का आवरण ओढ़ घिनौने से घिनौना कार्य करने से नहीं चूकते।

इस उपन्यास को आप भारत के किसी भी राज्य की राजनीति से जोड़कर देख सकते हैं आपको स्थिति समान ही दिखलाई पड़ेगी, सत्ता, मीडिया, पुलिस, तंत्र और जोरावर जैसे आतंकियों की गठजोड़ से जनता कभी मुक्त न हो पाई है। इस तरह के गठजोड़ जनता को मूर्ख बनाने में लगे रहते हैं, यह मूर्ख बनाने की प्रक्रिया किसी एक खास दल या सरकार में नहीं होती यह सतत रूप से चलती रहती है। राजनीतिक परिदृश्य की बात करें तो कमोबेश स्थिति जस की तस बनी हुई है, इस धमाचौकड़ी और कुचक्र में सक्सेना जैसे लोग उम्मीद की लौ जलाएं दिखलाई पड़ते हैं। आज के बीसू और बिंदा कब समाज के निम्न वर्गीय लोगों की आवाज को बुलंद कर पाएंगे यह कहना तो अत्यंत मुश्किल है।

आज के परिवेश में भ्रष्ट नेताओं द्वारा फैलाई गयी भ्रष्ट राजनीति के इस दुरंगेपन को लेकर रजनी गुप्त महाभोज के संदर्भ में लिखती है – "नेताओं की खोखली नारेबाजी, कुत्सित इरादे और दमघोंटू साजिशों की अंतहीन सच्चाइयों को पूरी बेबाकी से चीरते 'महाभोज' की प्रासंगिकता आज भी बहुत जरूरी हस्तक्षेप है जो चमकते-चिकने चेहरों को समझने के लिए सार्थक बयान करते हुए आमजन की विवशता और उनकी असहाय स्थितियों का जीवंत दस्तावेज बन जाता है।"

घर

अलका
बी.ए.हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

कि अबकी बार जब घर गई,
सुकून तो बेहिसाब था पर,
पिता की आंखें,
मानो अनेकानेक सवाल कर रही हों।
मां की ढेर सारी उम्मीदें,
जैसे सवाल कर रही हों।
पिता के वो मजबूत कंधे,
जिनपर बैठकर जहां देखा,
वो भी थक रहे हैं।

एक अजीब सी कुलबुलाहट,
कलेजे को चीर कर रख देती है।
मालूम पड़ता है कि पिता,
कई दिनों से सुकून से सो नहीं पाए हैं,
बच्चे के भविष्य को लेकर ऊहापोह है।
मां भी बांधती है मन्नतों के धागे,
रखती है उपवास,
सलामती की दुआ करती है।
दोनों ही डरते हैं,
कहीं उठा ना लूं कुछ गलत कदम,
पर फिर भी दूर भेजा है शहर से,
ताकि संवार लूं अपना आने वाला कल।

भू विज्ञान: एक खोज

आदित्य कुशवाहा
बी.एस.सी भू विज्ञान, प्रथम वर्ष

लोग कहते हैं कि उनकी किस्मत में पत्थर हैं,
पर हमने तो पत्थर को ही अपनी किस्मत चुना।
Minerologist, Petrologist, Climatologists
कितने ही नाम हैं हमारे, पर
In general, हम हैं GEOLOGIST नाम तो होगा ही सुना।।

कभी पहाडों कभी पठारों तो कभी नदियों से गुजरते हैं,
हम तो बस अपने मतलब की चीजे ढूंढा करते हैं।
कभी मिलती है अपने काम में सफलता
तो कभी लगता है हमें चूना,
In general, हम हैं GEOLOGIST नाम तो होगा ही सुना।।

इस टेक्निकल दुनिया में चट्टानों में सर मार रहे हैं,
कभी-कभी लगता है कहीं,
अपना फ्यूचर तो नहीं बिगाड़ रहें हैं।
फिर कोई इक ऐसा इन्सान मिल जाता है,
जो हमारे इस फैसले को सही ठहराता है।
तब हमें तसल्ली मिलती है कि
हमने नहीं किया है कोई गुनाह,
In general, हम हैं GEOLOGIST नाम तो होगा ही सुना।।

लोग तो बस दिनों, महीनों,सालों तक रिश्तें निभाते हैं,
हमारे तो "millions of year" बस
एक ईवेंट में बीत जाते हैं।
इस धरती के इतिहास और गहराई से जूझतें हैं,
अनंत ब्रह्माण्ड के रहस्यों को भी बूझते हैं।
तब हमें एहसास होता है कि हमने क्या खूब चुना,
In general, हम हैं GEOLOGIST नाम तो होगा ही सुना।।

क्या करे यार माँ तो माँ होती हैं

वरुण
बी.ए.हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

दिल की सुंदर सूरत की माँ अनमोल होती है
अरे माँ तो एक प्यारी सी रूह होती है,
भोली तो बहुत पर
गुस्से में माँ शेरावाली का रूप होती है
क्या करे यार माँ तो माँ ही होती है,

हमें खाना ज्यादा खिलाती हो
माँ तुम खुद कम खाती हो
उस कम को भी तुम बांट कर खाती हो,
ना जाने माँ कैसे तुम
उस कम को भी ज्यादा दिखलाती हो
ये तुम कैसे कर लेती हो माँ
क्या करे यार माँ तो माँ ही होती है,

सारा दिन माँ तुम काम में लगी रहती हो
इस काम को तुम बिल्कुल भी नही जताती हो माँ,
हम भी जानते है माँ तुम मन ही मन
'हे भगवान हे भगवान' का नारा देती हो
फिर भी माँ हमारा सारा काम कर देती हो
तुम इतनी अच्छी क्यूं हो माँ
दिल यही सवाल करता है बस
क्या करे यार माँ तो माँ ही होती है,

खुद के बारे में कम हमारा ज्यादा सोचती हो माँ
लगता हैं माँ तुम सारा दिन सारी रात सोचती हो
माँ तुम तो हमारी एक छोटी सी
खुशी को भी अपना त्योहार समझती हो,
तुम माँ कैसे हमारे लिए
दुख में भी खुश रहने की कोशिश करती हो
क्या करे यार माँ तो माँ ही होती है,

पूरी ज़िंदगी माँ तुम हमे सवारती हो
हमारे सपनों को हमसे ज्यादा सज़ाती हो,
अपना ख्याल रखने का वक्त नहीं माँ तुम्हे फिर भी
उस वक्त में हमारा खयाल खास क्यूं माँ
आख़िरी सांस तक हमारा नाम क्यूं माँ,
क्या करे यार माँ तो माँ ही होती है......

ऐसा मानुष

जय प्रकाश
बी.ए. हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष

जब केवल सोना जगना ही जीवन की परिभाषा हो एक
नौकरी पा लेना ही मन भर की अभिलाषा होगली की
सैरो से जिसको आमोद विनोद मिले और सप्ताह की एक
छुट्टी में ही संपूर्ण प्रमोद मिले
दो-दो गज चलना ही जिसको रास सदा ही आता हो
स्वप्न रहित निद्रा लेकर ही जो जल्दी सो जाता हो
ऐसी बंद बोतल सा जीवन कौन कभी जी पाएगा
ऐसा मानुष मानुष होकर मानुष नहीं कहलाएगा

दूर सितारे देखकर जिसके नयन प्रफुल्लित नहीं होते
और किसी की पीड़ा में जो अश्रु संकलित नहीं होते
स्वयं का चिंतन मर जाता है दैनिक कालखंड में जब
इसकी उसकी सबकी परवाह मिट जाती घमंड में जब
जो संबंध बुना करता हो तानो की तुरपाई से,
पर केवल डर जाता हो आहट भर परछाई से
मुख मंडल पर हंसी रहेगी दांतो से मुस्काएगा
ऐसा मानुष मानुष होकर मानुष नहीं कहलाएगा

चेहरे भर की शोभा देखें मन का मोल लगाना पाए
अपने अंदर के भावों को जिव्हा से बतलाना ना पाए
बालक मन की उत्कंठा भी जिससे शांत नहीं होती
अनुचित गलत देखकर जिसकी देह क्रांत नहीं होती
मुट्ठी भर सपने हो जिसके फिर भी पूरे हो ना पाए
और विवशता इतनी हो कि कुछ भी और सहा ना जाए
उस मानुष को कौन सुनेगा कौन उसे अपनाएगा
ऐसा मानुष मानुष होकर मानुष नहीं कहलाएगा।

अब वो बचपन कहां रहा

जय प्रकाश
बी.ए.हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

कहां रहा अब वो बचपन कहां रहा!
बात–बात पर गुस्सा है वो समझाना कहां रहा
कहां रहा अब वो बचपन कहां रहा!

मिट्टी के घरों में खेलती हंसी
कंचों में कैद तराना था
हाथों की चोटें और छिले घुटने,
पेट दर्द का भी बहाना था
जिंदगी गलियों के मोड़ों सी,
यूं ही घरों में घुस जाना कहां रहा
कहां रहा अब वो बचपन कहां रहा!

खिलौनों के पीछे की ख्वाहिशें
मेलों में मन मतवाला था
जलेबी को घूरती लालच सी आंखें,
पर रूपियो का कहां ठिकाना था
बिजली के जाने पर हो-हल्ला होना
मोमबत्ती जलाना कहां रहा
कहां रहा अब वो बचपन कहां रहा!

वह बालू के टीले पर बंदर सा चढ़ना
नदी तालाबों में नहाना था
पढ़ाई की सनद किसे रहती,
पर बापू के डर से घर भी जाना था
मार पुरानी, डाली का झूला, कथा–कहानी
बच्चों को बताना कहां रहा
कहां रहा अब वो बचपन कहां रहा।

खुदीराम बोस

अंकित सिद्धांत
बी.ए.हिन्दी विशेष, प्रथम वर्ष

धन्य है वे जिन्हें मालूम है इस देश का इतिहास,
धन्य वे भी धरोहरों का कर रहे जो चतुर्दिक उपहास।
यह वक्त है प्रतिकार का,
आचरण के व्यवहार का,
जागृति के इहतिज़ार का,
पथ तो लंबी चौड़ी है,
मंजिल अभी अधूरी है।
कब तक पड़ी आग में संस्कृति इसी तरह अकुलाएगी,
किस अवसर की ताक में बैठे बन अवसरवादी हम,
चाहा तो यह था हमने प्रत्येक क्षण अवसर बन जाए,
लानत है उनकी भरी जवानी पर
जो सुख की नींद सो रहे,
लानत है उनपर जो कोटि कोटि बच्चों में गलत इतिहास बो रहे।
जब तक भोगी भूप प्रजा के नेता कहलाएंगे,
ज्ञान त्याग तप नहीं श्रेष्ठता का पद कब तक पाएंगे।
यह समाज जो बैठ गया है केवल अर्थ उगाने में,
सभी त्याग में भूल चुका है खाने और पकाने में।
कभी हुआ था इसी धरा पर,
नित्य कहा करते थे गुरुवर,
फिर उस जैसा कोई हुआ नहीं।
सहकर भी अपमान मनुजता की रक्षा करने वाला।
गुरुवर से एक दिन पूछा जब हम सब ने मिलकर।
ऐसा क्या उसने कर डाला,
गुरुवर का रुंधा गला,
आंखों में आ गया पानी,
बोले चलो सुनाऊं तुम्हें एक कहानी।

खुदी नाम था कहते उसका,
एक समय था कभी महाभयकारी।
चारों ओर लोभ की ज्वाला,
चारों ओर भोग की जय,
पाप भार से दबी धंसी जा रही,
संस्कृति पल-पल निश्चय।

वह था अद्भुत वीर,
बरस वही कोई अट्ठारह,

उसकी नहीं कल्पना कभी कनक,
वह तो उठा उज्वल चरित्र का कलाकार।

यूं ही नहीं उसे पूजता समूचा बिहार,
ध्येय उसका प्रतिकार था,
प्रतिकार, अन्याय का, अवशोष का,
धर्म के विरोध का,
खुद ही खुद में पुंज था,
वह क्रोध का,
वह धधक-धधक सा पदाघात,
वह दिग दिगंत का सिंहनाद,
वह प्रगति काल का शिलान्यास,
वह आह्वानों का महाकाव्य,
वह संकल्पों का युग चारण,
वह मसिमय असी का रक्तज्वार,
जिसका ऋणी समूचा मुजफ्फरपुर,
और प्रयाय पुरुष जो शोणित का,

मरता है केवल मर्त्य मनुज,
वह अमर कहां मर सकता है,
जिसने जेम्स अगस्तस के घर में,
घुसकर की गोलीबारी थी,
नहीं दूसरा देश ने देखा है ऐसा क्रांतिकारी वीर।
आज ह्रदय तब कहता है,
जब उनके वंशज केवल,
संवादों के शिलालेख पर,
शुभ संबोधन,
सजा सजा कर संबंधों के,
संधि पत्र पर केवल कर आडंबर,
एवं
वसनहीन मूर्ति का करते मंचन,
तब कहता हूं इन विभूतियों को समाज यदि नहीं पहिचानेगा,
व्यक्तितवो को जब तक मूर्तियों में ढालेगा,
वह पीढ़ी पैदा करता जाएगा,
वंशज कभी नहीं कहलाएगा।

पुस्तक समीक्षा

स्त्री के हक़ में कबीर

(लेखक : अनिल राय)

समीक्षक : नितेश कुमार पाण्डेय
एम.ए.हिंदी, प्रथम वर्ष

बीतें दिनों दरियागंज में स्थित हंस प्रकाशन जाना हुआ था। वहाँ से आदरणीय प्रो॰ अनिल राय की पुस्तक “स्त्री के हक़ में कबीर” प्रकाशित हुई है। कई दिनों से मन में था कि सर की पुस्तक पढ़ी जाए; लिहाजा वहाँ से मैंने ये पुस्तक ले ली। सर के स्वाक्षर से पूर्व मैंने कुछ पृष्ठों को पढ़ा था। बाद में सर के स्वाक्षर और आशीर्वाद के बाद ही इसे विधिवत रूप से पढ़ना शुरू किया।

इस पुस्तक को पूर्ण रूप से पढ़ लेने के बाद कुछ लिखने का मन हुआ, लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी कि इस पर कुछ लिखूँ। कबीर साहित्य पर मेरा उतना गहन अध्ययन नहीं है, फिर भी पं॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी जी की पुस्तक कबीर पहले से पढ़ रखी थी, भीष्म साहनी जी का नाटक ‘कबिरा खड़ा बाजार में’ भी पढ़ रखा था।

रचयिता नामक संस्थान का एक वीडियो सामने आया जिसमें प्रो॰ रामेश्वर राय ने कबीर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा की थी। बस इतने मात्र से इस पुस्तक पर कुछ लिखना मुझे काफी खटक रहा था, लेकिन मेरा जी नहीं माना।

साहित्य का मर्म वही समझ सकता है जो साधना और तपस्या का मूल्य समझे। मैंने कबीर को एक आलोचक के रूप में देखने का प्रयास किया है। जैसे एक आलोचक किसी कृति के गुण-दोषों का विवेचन और विश्लेषण कर उसके मर्म को पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास करता है, ठीक वैसा ही व्यक्तित्व कबीर का भी है।

भक्तिकालीन कवियों में कबीर अपनी प्रगतिशील चेतना के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि पंद्रहवीं शताब्दी में कबीर का व्यक्तित्व सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावशाली था। मुक्तिबोध ने इसी कारण कबीर को तुलसी की तुलना में अधिक आधुनिक भी माना है। कबीर को समग्रता में समझे बगैर लोगों ने उनकी स्त्री संबधी धारणा को लेकर घेरना शुरू कर दिया था। विमर्श के इस दौर में साहित्यकारों के भीतर नए ढंग से सोचने समझने की प्रज्ञा विकसित तो हुई परंतु कबीर के स्त्री के प्रति दृष्टिकोण की ओर नज़र बहुत कम गई। यह पुस्तक बहुत पहले तैयार हो चुका था।

लेखक इस इंतजार में था कि शायद कबीर पर नए ढंग से विचार करने वाली कोई पुस्तक सामने आए, परंतु किसी ने हिम्मत नहीं की। पुस्तक की आवश्यकता को समझते हुए लेखक ने हिम्मत की और कबीर पर पुनः विचार करने के लिए पाठकों को बाध्य किया। लेखक लिखता है, " कबीर स्त्री को माया और नरक का कुंड कहते हुए भी स्वयं अपनी अंतस्साधना में स्वयं स्त्री बन जाते हैं और अपने को राम की दुल्हिन और हरि की बहुरिया कहते हैं। इसके साथ ही वे प्रेमी-प्रेमिका की भाँति विरह और मिलन के आध्यात्मिक अनुभव के क्षणों का एहसास कराते हैं।" कबीर का यही व्यक्तित्व उन्हें एक आलोचक के रूप में स्थापित करता है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य के भक्त कवियों में कबीर का स्थान यदि अन्यतम है तो इसका कारण है उनका खरापन, स्पष्टवादिता और सर्व समावेशी चेतना। अपने समय के समाज की ज्वलंत समस्याओं का चित्रण कबीर साहित्य में है, वैसा अन्य किसी कवि के साहित्य में कम ही दिखाई पड़ता है। कबीर जब धर्म के ठेकेदारों को चुनौती देते हैं तो उसका एक महत्त्वपूर्ण आधार है स्त्री। स्त्री के पक्ष से ही वे काजी से जिरह करते हैं और धार्मिक आडंबरों पर चोट भी करते हैं। सच तो यह है कि कबीर स्त्री की ओर से ही नहीं, बल्कि स्त्री की तरह बोलते हैं। कबीर पेशे से जुलाहे थे। समाज में जुलाहे की स्थिति वही है, जो स्त्री की। चाहे इस्लाम हो, चाहे हिंदू धर्म – दोनों ही जगह स्त्री और दलित की दशा एक-सी है। स्त्री के साथ कबीर के तादात्म्य का बुनियादी कारण यही है।

प्रस्तुत पुस्तक को लेखक ने अपने पिताजी को समर्पित किया है। संभवतः लेखक को इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा अपने पिताजी से ही मिली होगी। इस पुस्तक को लेखक ने कुल 126 पृष्ठों में समेटा है जिसमें 300 से अधिक संदर्भ मिलते हैं। इस दृष्टि से यह पुस्तक आकार की दृष्टि से थोड़ा छोटा, परंतु शोध और अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण और उपयोगी साबित होता है। लेखक ने चार अध्यायों के माध्यम से यह साबित करने का प्रयास किया है कि कबीर स्त्री विरोधी नहीं बल्कि स्त्री के हक़ में खड़े दिखते हैं। यद्यपि इस पुस्तक में कई स्थानों पर प्रूफ-रीडिंग की समस्या दिखाई दी जिसे मैंने अपनी पुस्तक में पेंसिल से घेरा भी लगा दिया है।

कबीर के दृष्टिकोण को समझने के लिए भक्ति-आंदोलन की पृष्ठभूमि, इसके उद्भव और विकास, कबीर कालीन समाज और स्त्री, कबीर-साहित्य में स्त्री और उसके विविध रूपों को भी समझना अत्यावश्यक है।

कबीर पर चर्चा करने से पूर्व मेरा प्रश्न ये है कि कबीर किसके हैं? कुछ लोग कहते हैं कि कबीर अनुसूचित जाति के हैं, कुछ लोग कहते हैं कि वे अनुसूचित जनजाति के हैं, कुछ लोग कहते हैं कि वे अन्य पिछड़े वर्ग के हैं, कुछ लोग कहते हैं कि वे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के हैं के हैं या दलितों के हैं। हम सबके बीच भी एक कबीर दिखाई देते हैं; कैंपस में गुरु और शिष्य के रूप में, सड़कों पर फ़क़ीर के रूप में, दुकानों में जुलाहा के रूप में, और हम सब भी अपने भीतर अपने कबीर को देख सकते हैं। हम जिस कबीर की बात कर रहे हैं वह मनुष्य है। कबीर को मूलतः संत तथा दलित चेतना के कवि के रूप में देखा जाता है। सवाल यह है कि दलितकौन है? इधर एकतबका दलित को किसी वर्ग, वर्ण या जाति विशेष से जोड़ने का प्रयास कर रहा है। परंतु, मेरा मानना है कि दलित का कोई वर्ग, वर्ण या जाति नहीं होती। कोई भी व्यक्ति चाहे वो किसी भी वर्ग, वर्ण या जाति का हो यदि वह दबा हुआ है, शोषित है, पीड़ित है, उपेक्षित है, समाज के मुख्यधारा में नहीं है तो वह दलित है। इस बात का उल्लेख करने का उद्देश्य केवल यही था कि भक्ति आंदोलन जिसका उद्भव दक्षिण भारत से माना जाता है, इसे जनांदोलन बनाने में सभी वर्गों, वर्णों, जातियों और संप्रदायों का योगदान रहा है जिसमें पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लीं। इस भक्ति आंदोलन को व्यापक फलक प्रदान करने का काम कबीरदास जी ने किया, जैसा कि वे कहते हैं;

"भक्ति द्रविड़ उपजी, उत्तर लाए रामानंद
प्रगट कियो कबीर ने, सप्तद्वीप नवखंड"

भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर उपजा था, उसे उत्तर में लाने का काम रामानंद ने किया। कबीर ने उसे सातों द्वीप और नवखंड यानी पृथ्वी के नौ खंडों में अवतरित कर दिया।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भक्ति-आंदोलन के उद्भव के साथ इसके लोकोन्मुख पक्ष भी हमारे सामने रखा है जिसके अंतर्गत वे प्रमुख अलवार संतों के योगदानों पर चर्चा करते हैं। भक्ति आंदोलन का बीज तैयार करने में आलवार भक्तों का बहुमूल्य योगदान है जैसा कि लेखक ने कहा है कि "यह सर्वमान्य तथ्य है कि आलावर दक्षिण के भक्ति आंदोलन के पुरोधा हैं।" उत्तरी भारत में, महिला संतों को 'पागल' और 'बेशर्म' माना जाता था और उन्हें अपने जीवनकाल में पहचान नहीं मिली। हालांकि, दक्षिण भारत की स्थिति उत्तर भारत की स्थिति के बिलकुल विपरीत थी। उपमहाद्वीप के दक्षिणी भाग में, महिला संत उत्पीड़न और भेदभाव के माहौल में उभरी, एवं महान विदुषी एवं विचारक के रूप में

प्रतिष्ठित हुईं।

प्रमुख आलवारों में महिला संत आंडाल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह विश्वास करना कठिन है कि एक ऐसे युग में जब महिलाएं रेशम के पर्दे और अपने घरों की कंक्रीट की दीवारों के पीछे कैद थीं, अक्का महादेवी जैसी एक प्रमुख महिला संत – नग्न संत मौजूद थीं, जो वास्तव में दक्षिण में संतों की वीरशैव परिषद की एक प्रमुख सदस्य थीं। कहने की यह आवश्यकता नहीं कि दक्षिण भारत में जो भक्ति आंदोलन चल रहा था उसमें सभी वर्गों का योगदान रहा, जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं।

लेखक ने शंकर के अद्वैतवाद और रामानुज के विशिष्टाद्वैत में अंतर को बारीकी से रेखांकित किया है। आगे वे रामानुज के व्यक्तित्व पर गहरा प्रकाश डालते हैं, जिनके प्रयासों से अवरुद्ध से पड़े भक्ति मार्ग को एक नई दिशा मिलती है।

रामानंद जी के चर्चा से पूर्व लेखक ने राघवानंद जी, जो रामानंद के गुरु थे, उनके योगदान पर प्रकाश डालना उचित समझा, जिनका उल्लेख आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपने हिंदी साहित्य के इतिहास में करते हैं। राघवानंद जी ने भक्ति-आंदोलन को दक्षिण से उत्तर में ले जाने का सेतुवत कार्य किया। रामानंद ने जिस भक्ति-आंदोलन को व्यापक लोकभूमि प्रदान की, उसमें राघवानंद जी की भूमिका कम नहीं थी। इन्होंने भक्ति- भावना के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अपने संप्रदाय के सिद्धांतों की रक्षा पर भी विशेष बल दिया। किंतु रामानंद के उपरांत संप्रदाय के सिद्धांतों की अपेक्षा जनता की पीड़ा को पहचानने और उसके हृदय में भक्ति के संचार के ऊपर ही विशेष ध्यान दिया गया।

लेखक रामानंद जी के व्यक्तित्व व साधना पर प्रकाश डालते हुए कबीरदास से पूर्व अनंतानंद, धना, पीपा और संत रैदास की चर्चा करता है। कहने की ये आवश्यकता नहीं कि ये कबीर के समकालीन ही थें।

लेखक कबीर कालीन समाज और स्त्री की चर्चा करते हुए तत्कालीन राजनीतिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, मूर्ति-पूजा, आर्थिक स्थिति, साहित्यिक स्थिति से अवगत कराते हुए धर्मग्रंथों में नारी और शूद्रों का सह-उल्लेख करता है। इसके पश्चात वह सामंतवाद में स्त्रियों की दशा का वर्णन करते हुए "ढोल गँवार शूद्र पसू नारी" प्रसंग को हमारे सामने लेकर आते हैं। वस्तूतः यह मान लिया गया कि कवि के अनुसार सारी नारी-जाति उसके लिए भर्त्सना का पात्र हैं। यह दृष्टि काफी संकुचित और एकांगी है। सर्वप्रथम ताड़ना शब्द का अर्थ समझना अत्यावश्यक है। प्रो० रामनारायण शर्मा और प्रो० ए.के. मिश्रा जी से इस संदर्भ में मेरी बातचीत हुई थी जिसमें उन्होंने बताया था कि ताड़ना शब्द मूलतः अवधी और भोजपुरी का शब्द है, जिसका अर्थ पहचाना, परखना, कल्याण करना या उद्धार करना होता है। यह विद्वानों द्वारा मान लिया गया कि "ताड़ना" शब्द का अर्थ शोषित या प्रताड़ित करना होता है। परंतु वे अर्थ की गहराई तक नहीं पहुँचे। दूसरी बात ये कि "शूद्र गँवार" वाली बात समुद्र के मुख से कहलाई गई है जो नीचता और जड़ता के प्रतीकार्थ का द्योतक है। तुलसी अगर नारी-निंदक होते तो उसी पराधीनता को लक्ष्य कर यह न कहते:

कत विधि सृजी नारी जगमांही।
पराधीन सपनेहुँ सुख नाँही।

लेखक कबीर-साहित्य में स्त्री और उसके विविध रूपों का वर्णन करता है। कबीर माया का साधन,साधना में बाधक, दुराचारिणी और व्यभिचारिणी स्त्री की निंदा करते हैं। परंतु वे सदाचारिणी नारी, पतिव्रता, विरहिणी, प्रिया, सुहागन, सती, कन्या और माता के रूप में स्त्री की उससे अधिक प्रशंसा करते हैं। कबीर कहते हैं कि पतिव्रता स्त्री अगर काली, कुचिल और कुरूप है तब भी उस पर करोड़ों सुंदरियों को न्यौछावर किया जा सकता है;

"पतिबरता मैली भली, काली, कुचिल, कुरूप।
पतिबरता के रूप पर, बारौं कोटि स्वरूप ।।"

पतिव्रता नारी मैली क्यों न हो, उसके गले में कांच की गुड़िया ही क्यों न पड़ी हो, फिर भी अपनी अन्य सहेलियों में वह उसी प्रकार देदीप्यमान होती है जिस प्रकार सूरज और चंदा की ज्योति;

"पतिबरता मैली भली, गले काँच को पोत।
सब सखियन में यों दिपै, ज्यों रवि ससि की जोत ।।"

कबीर समदर्शी थें। वे समाज में स्त्री–पुरुष सबको एक समान देखना पसंद करते थे। इसलिए जहां उन्होंने स्त्रियों को पतिव्रत्य और सदाचार के लिए प्रेरित किया, वहां भ्रमरी वृत्ति वाले पुरुषों के लिए भी पत्नी व्रत धारी होने का संदेश दिया। पर नारी के साथ संलग्न होने की कबीर ने इसलिए निंदा की है। उनकी धारणा है कि पर नारी में अनुरक्त होने में बुराई है, अच्छाई नहीं। नदी के मधुर जल के साथ बहने वाले कितने ही मत्स्य अंततोगत्वा समुद्र के खारे जल में चले जाते हैं।

"पर नारी कै राचणै, औगुण है गुण नाँहि।
षार समंद मैं मंछला, केता बहि बहि जाँहि।।"

कबीर के अनुसार पर स्त्री के साथ अनुरक्ति छिपती नहीं है, वह लहसुन की गांठ के समान है। लहसुन खाने वाला व्यक्ति अगर छिपकर भी खाता है तो उसकी गंध प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार पर नारी में अनुरक्त व्यक्ति अपने दोष के लक्षण किसी न किसी रूप में अवश्य प्रकट कर देता है;

"पर नारी का राचना, ज्यूं लहसून की खान।
कोने बैठे खाइये, परगट होय निदान।।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि कबीर ने पर नारी निंदा पुरुषों की काम वासना की प्रवृत्ति को रोकने के लिए किया है। कबीर संवेदना के गहनतम धरातल पर स्वयं नारी की वाणी बोलने लगते हैं, प्रेम के समूचे प्रसंग को नारी की निगाह से देखने लगते हैं और विरह की व्यथा को स्त्री की तरह महसूसने लगते हैं। कबीर के कई ऐसे

पद हैं जो शुद्ध प्रेम के पद हैं और जिनमें दांपत्य के रूपक बार बार आते हैं;

"बालम, आवो हमारे गेह रे।
तुम बिन दुखिया देह रे।
सब कोई कहे तुम्हारी नारी, मोकों लागत लाज रे।
दिल से नहीं दिल लगाया, तब लग कैसा सनेह रे।
अन्न न भावै नींद न आवै, गृह-बन धरै न धीर रे।
कामिन को है बालम प्यारा, ज्यों प्यासे को नीर रे।
है कोई ऐसा पर-उपकारी, पिव सों कहै सुनाय रे।
अब तो बेहाल कबीर भयो है, बिन देखे जिव जाय रे॥"

कबीर ने सती स्त्रियों का नाम बड़े आदरपूर्वक लिया है तथा उनकी प्रशंसा साधु, शूर और भक्त की भांति की है। सती नारियों की प्रशंसा कबीर ने संभवतः दो कारणों से की होगी। प्रथम कारण तो यह कि पुरुषों की विलासिता की प्रवृत्ति को रोकने के लिए और द्वितीयतः इसलिए कि तत्कालीन समाज में वेश्यावृत्ति की प्रवृत्ति भी जोरों से चल पड़ी थी, जिसके कारण समाज की सदाचारिणी स्त्रियों की दशा अत्यंत सोचनीय हो गई थी। इस विसंगति को लक्ष्य कर कबीर ने कहा-

"सतवंती को गजी नहीं मिले, वैश्या पहरे खासा है।
सो घर साधु भीख न पावै,भड़वा खाए बताशा है।।"

कबीर मां का जैसा चित्र खींचते हैं वैसा किसी सगुण भक्त कवि के यहां भी नहीं पाया जा सकता है।

लेखक लिखता है, "नारीत्व की सर्वाधिक सफलता माता के रूप में ही है। संसार के किसी भी देश में उसके मातृत्व रूप की प्रशंसा की गई है। भारतीय वांग्मय में तो माता को उसके अन्य रूपों की अपेक्षा सबसे अधिक महत्व दिया गया है।" कबीर को स्त्री का मातृत्व रूप सर्वाधिक प्रिय रहा है। "संभवतः यही कारण है कि उन्होंने इस रूप की अभिव्यक्ति करने के लिए ईश्वर को अपनी मां, तो स्वयं को उनके पुत्र रूप में देखकर मां की सारी ममता को उड़ेल दिया है।"

"हरि जननी मैं बालिक तेरा, काहे न औगुण बकसहु मेरा॥टेक॥
सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहै न तेते॥
कर गहि केस करे जौ घाता, तऊ न हेत उतारै माता॥
कहैं कबीर एक बुधि बिचारी, बालक दुखी दुखी महतारी॥"

इस प्रकार लेखक कबीर के नारी विषयक समग्र दृष्टिकोण का विश्लेषण करते हुए कबीर के नारी विषयक कथ्य एवं सदृश्य-विधान पर चर्चा करता है। अंततः लेखक यह स्थापित करता है कि कबीर स्त्री विरोधी नहीं है बल्कि स्त्री के हक़ में खड़े होते दिखते हैं। कबीर ने स्त्री के जिस रूप की निंदा की है उसमें किसी न किसी रूप में लोकमंगल की भावना निहित है। दरसल, कबीर जहाँ निंदा करते दिखाई पड़ते हैं उन प्रसंगों और संदर्भों को ठीक-ठीक पहचान करने की आवश्यकता है। लेखक के ही शब्दों में कहें तो यदि युगीन संदर्भों को ध्यान में नहीं रखा जाएगा तो कबीर क्या भक्ति-साहित्य के अधिकांश रचनाकार स्त्री-विरोधी दिखेंगे। फिर यह आरोप कबीर पर ही क्यों?

स्त्री के माया और कामिनी रूप के बहाने जिस काम भावना को कबीर साधना के मार्ग में बाधक मानते हैं, उसी काम भावना के रूपक को अपनी भक्ति और प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनाते हैं। कबीर अपनी कविता में न सिर्फ स्वयं स्त्री बन जाते हैं बल्कि अपने आराध्य और प्रियतम के साथ एकमेव एक होकर एक ही सेज पर सोने की बात भी करते हैं। इसके अलावा कबीर 'हरि मोर पीव, मैं राम की बहुरिया' 'न हौं देखूं और कुं, न तुझ देखन देऊं', 'तन रति करि मैं, मन रति करिहौं' आदि जैसे पद भी लिखते हैं। नारी के कामिनी रूप की निंदा करना और फिर स्वयं नारी बनकर भक्ति करना, इसमें गहरा द्वंद्व और अंतर्विरोध दिखाई पड़ता है। कबीर के विशेषज्ञ डॉ० पुरुषोत्तम अग्रवाल इसे कबीर के संस्कार और उनकी संवेदना का द्वंद्व मानते हैं। संस्कारवश कबीर नारी की निंदा करते हैं लेकिन अपनी संवेदना की अभिव्यक्ति में स्वयं नारी बन जाने में भी उन्हें कोई आपत्ति नहीं। संस्कार और संवेदना का यह द्वंद्व ही कबीर को बड़ा कवि बनाता है। डॉ० पुरुषोत्तम अग्रवाल ने अपनी पुस्तक 'विचार का अंत' के एक लेख में इस बात का उल्लेख करते हुए लिखा है- "कबीर की नारी संबंधी दृष्टि में फांक इसलिए सर्जनात्मक है कि यहां हम संस्कार का रूप ले चुके विचारधारा के सामने सहज मानवीय संवेदना और बोध को पूरी तेजस्विता के साथ खड़े होते देखते हैं।"

इस चर्चा के बाद शायद हमें दिखाई पड़े कि कबीर में विश्व-मानवता और 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की भावना अंतर्निहित थी। इस पुस्तक का समीक्षक भी मानता है कि कबीर ने प्रेम और मानवता का संदेश दिया है। इस सृष्टि को यदि कोई बचा सकता है तो वह प्रेम और मानवता ही है। मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है और प्रेम धर्म से भी ऊपर है।

स्त्री संबंधी विषयों को लेकर कबीर एवं अन्य भक्तिकालीन कवियों पर लगाए रहे आरोप केवल इस बात से ही धूल जाते हैं कि संपूर्ण भक्तिकाल के कवियों में गुरु नानक देव को छोड़कर अन्य सभी कवियों ने स्त्री के किसी न किसी रूप की निंदा अवश्य की है। अतः यह आरोप कबीर पर लगाना बेबुनियाद है।

प्रख्यात आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी जी ने कबीर की प्रशंसा में लिखा है, "कबीर की रचना में कितने रंग हैं- अक्खड़ समाज चेता का, कटूक्तिकार का, एकदम भाव-विभोर होकर आत्मसमर्पण का, गहरी रहस्य चेतना का, प्रेम के तन्मय भाव का और चरम वैराग्य का, इन सभी रंगों में उनकी कला सक्रिय है और पूरी तरह संश्लिष्ट- इतना वैविध्य काम रचनाकारों में मिलेगा। जाहिर है, इसलिए फुटकर पद और दोहे लिखकर बिना महाकाव्य लिखे वे हिंदी में महाकवि हैं।

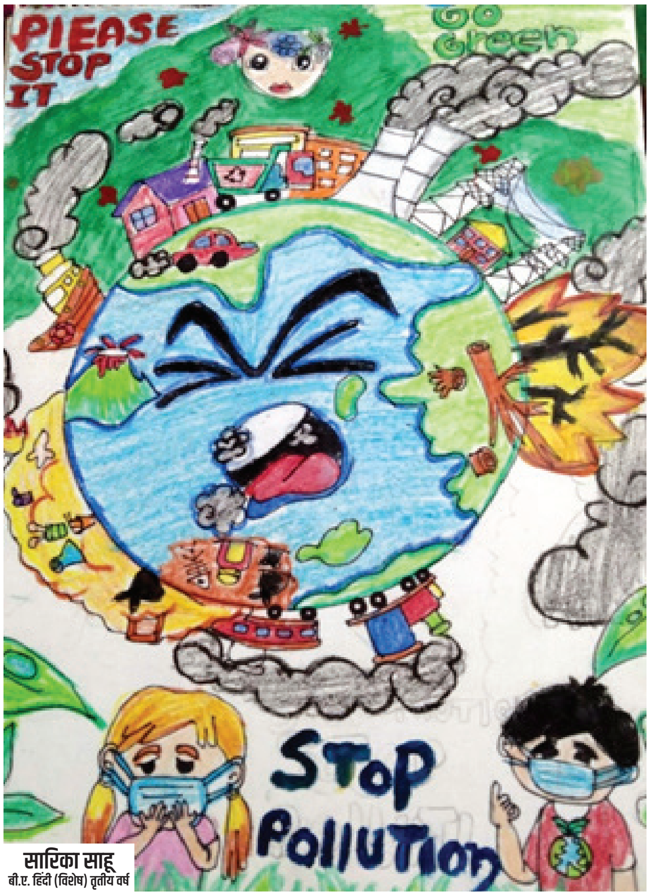

सारिका साहू
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

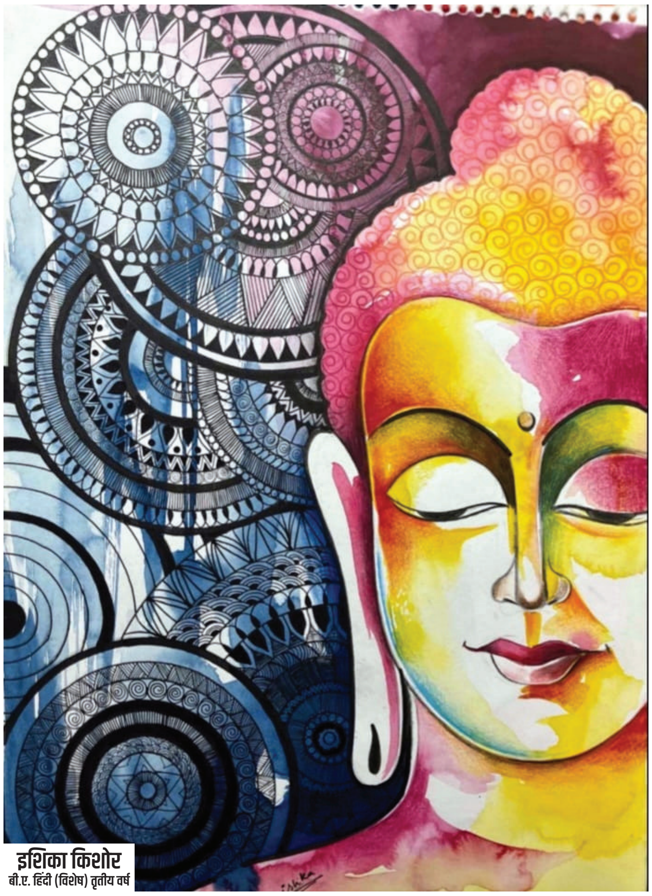
इशिका किशोर
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

इशिका किशोर
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

सारिका साहू
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

सारिका साहू
हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

तनिष अरोरा
बी.ए. हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

ENGLISH SECTION

Editorial Board

Dr. Prachee Dewri
Dr. Santoshi B. Mishra
Dr. Uplabdhi Sangwan

Student Editors

Aditi Gupta
Sharbani Garg
Kaavya Kapoor
Sanjivanie Bhalla
Arushi Sethi
Anushka Nanda
Rashika Singh

INDEX

1. GANA SANGHAS / RAHUL-- 37
2. DEVELOPING EMOTIONAL FIRST AID / JASMEHAR KAUR ---------------------------- 39
3. POEM / ANUSHKA NANDA-- 40
4. WATER / GULSHAN SANA -- 40
5. SHORT STORY / OM MAHESWARY -- 41
6. HOMESICKNES, NOT A WEAKNES / GUNJAN PAREK --------------------------------- 41
7. THE ONE / ABHIRAJ PARI HAR -- 43
8. ETHICAL DILEMAS AND MORAL CONFUSION DURING COVID-19 PANDEMIC / CHAITANYA SHARMA -- 44
9. BEING AND NOTHINGNES / SALONI BANSAL-- 46
10. POEM / DOLLY SONI--- 46
11. POEM / RASHIKA SINGH --- 47
12. FRIENDSHIP / ASTITVA SINGH -- 47
13. REMEMBRANCE / HIMANI SHARMA-- 48
14. RAISE HELL OR BEND HEAVEN / R. HARINI -- 49
15. LAND OF ICE / ANKIT SINGHANIYA -- 50

GANA SANGHAS

RAHUL
B.A. Programme, II Year

The Athenian democracy of ancient Greece and the ancient Roman Republic have served as models for democratic countries around the world. While India became the world's largest democracy on August 15th, 1947, few realize that India had its own tradition of ancient democratic republics more than 2,500 years ago. These polities, known as 'Gana Rajya' or 'Gana Sangha', give us a fascinating glimpse into political life in ancient India.

It was during the 'Second Urbanization' in North India, around 600 BCE, that a number of city-states, republics, and monarchies came into existence. Noted Banaras Hindu University historian, Prof Anant Sadashiv Altekar, in his book State and Government in Ancient India (1949), writes about how the earliest references to a semblance of democratic rule can be found in the Aitreya Brahmana section of the Rig Veda, in which there are references to 'Sabha' (Council) and 'Samiti' (Committee) electing chieftains.

According to Prof Altekar, most of the early republics and city-states were located in the Northwestern part of India. A passage in the Aitreya Brahmana of the Rig Veda states that the people in the vicinity of the Himalayas, like the Uttarakurus and the Uttaramadras, had a 'Virat' (Kingless) type of state. These city-states are said to have survived until the invasion of Alexander of Macedonia in 325 CE. Contemporary Greek historian Arrian of Nicomedia writes about how when Alexander and his army arrived at the city of 'Nyasa' somewhere in the Gandhara region of today's Pakistan, the 'President' of the city along with his 30 deputies went to meet him to discuss the terms of surrender.

In fact, Greek chroniclers emphasized the different forms of government they encountered in Punjab then. In the Greek chronicles, while the famed Porus has been described as a 'king', the city of Nyasa was ruled by an aristocracy. There is a reference to a tribe called 'Sabaracae', where according to the Greeks, 'the form of government was democratic and not regal'. Prof Altekar believes that references to 'Gramas' on the banks of the Indus River in the Mahabharata corroborate the existence of city-states in this region.

Historian Dr. K P Jayaswal extensively studied the political system in ancient India through references in Hindu religious texts such as the Mahabharata and the Rig Veda, and published them in his book Hindu Polity - A Constitutional History of India in Hindu Times (1924). While the Mahabharata, as we know today, evolved only around the 5th century CE, with verses and chapters being added over time, it is a rich source of information on the life and politics in ancient times.

For example, in the Shanti Parva section of the Mahabharata, Bhishma tells Yudhisthira about republican states referred to as 'Gana-Sanghas' known for their successful foreign policies, full treasury, standing army, skills in wars, good laws, and discipline. Based on his studies, Dr. Jayaswal also believed that Lord Krishna was actually the Chief of the Andhaka-Vrishni Sangha of the Yadavas, which was actually a democratic republic of four tribes named Vrishni, Andhaka, Kukura, and Bhojaka. It had political factions or parties called Vargas in their General Assembly.

In fact, in the Shanti Parva section of the Mahabharata, Lord Krishna has been mentioned as Sangha Mukhya, which could be translated as 'Head of the Council'. In this chapter of the Mahabharata, there is a reference to a conversation between

Krishna and Sage Narada, which tells us about how the Assembly worked. The Yadava Assembly had two opposing factions led by Ahuka and Akrura, respectively, who respected Lord Krishna as their leader but mistrusted each other. Lord Krishna had a hard time building consensus between the two. In his conversation with Narada, Lord Krishna compared himself to a mother who is torn between two sons gambling with each other. Narada was concerned their union would fall apart if consensus was not built and advised Lord Krishna to use sweet words to bind the factions together.

Types of Republics and How They Functioned

Interestingly, details of how the republics of ancient India functioned can be found in Buddhist canonical literature and the Sutras. Historians Jagdish P Sharma and A L Basham studied each of these republics in their book Republics in Ancient India c 1500 BC-500 CE (1968).

According to Sharma and Basham, there were two types of republican states. Some were unitary while some were a union or confederation of many republican tribes. States like Shakya, Koliya and Moriya followed a unitary republican model, while states like the Andhaka-Vrishni Sangha, and the Vajji Union were a federation of republican tribes. Most of these states were located in the foothills of the Himalayas and in the northern region of Bihar.

The Shakyas were a republican state, located on the present-day Indo-Nepal border, to which Gautama Buddha belonged. He was born Siddharth Gautama, son of the republic's president Suddhodana. The Shakya Council known as Santhagara had 500 members and their leader bore the title of 'Raja'. The most important and powerful republic during the time of Buddha was the Licchavi republic and Vajji Union which it formed, which again covered parts of Nepal and the present-day Tirhut division of Bihar.

The Vajji were a union of republics comprising the Vaidehas, Licchavis, Nayas and Mallas. Of these republics, the Licchavi was the most dominant. Their Assembly consisted of 18 members, of which nine alone were from the Licchavis. Their capital was in the city of Vaishali and they elected a President (Raja), Vice-President (Upa-Raja), Defence-Chief (Senapati), and Treasurer (Bhandargarika). Individually, the Licchavi also had their Assembly, with 7,707 members, probably from the founding aristocratic families. How these Ganas functioned is mentioned in the contemporary Buddhist text known as the Mahavagga, which also shows how similar these ancient republics were to modern democracies. Members of the Assembly voted via ballots, and a political whip called Ganapuraka was appointed to make sure voting was done correctly. Another officer called Salaka Grahapaka was entrusted with impartially collecting these votes. Voting was done either secretly, through whispering, or by the open method.

These ancient republics did not follow the strict social code of the Varna system of the Vedic religion. The Manusmriti refers to the Licchavis and Mallas as Vratya Kshatriya, while Satvata (Yadavas) as Vratya Vaishya. Vratyas were those who deviated from Vedic orthodoxy.

Society in these republics was divided into two classes. The first were citizens of the tribe called Kshatriya-Rajakula, who owned lands and had voting rights. The second were Dasa-Karmakara, who were landless labourers who tilled the land for the owners and had no voting rights. In some cases, citizenship had been extended to outsiders. We come across terms that distinguish a native citizen from an assimilated outsider. A Kshatriya member of the Malava Gana was referred to as Malavah, while a non-Kshatriya, non-Brahmin was referred to as Malavya. Similarly, a non-Kshatriya member of the Kshudraka Gana was called Kshudrakya. When Ajatshatru's Brahmin minister Vassakara came to the Vajji capital of Vaishali as a refugee, he was given a judgeship in the city.

By the 5th century BCE, most of the republican states began to disappear. The rising power of Magadha meant that these states were conquered, one after the other, and incorporated into the Magadha kingdom. According to the Mahabharata and Arthashastra, the reason for their downfall was their inherent weakness due to their lengthy decision-making process and mutual disagreements.

Democratic Republics in Modern Context

Centuries later, when India, Sri Lanka, Bangladesh, and Nepal became republics, they named their nations Ganarajya, Janatantra, and Ganatantra, keeping up with the legacy of ancient Gana-rajyas and Gana-sanghas. While the ancient republics give us a fascinating glimpse into the democratic polities of those times, one must be mindful of the words of Prof. Sharma and Basham, who warn: "It is a serious mistake on the part of the student of ancient political institutions to interpret ancient terms in modern context," but the concept of culture overrules it as an evolutionary factor.

DEVELOPING EMOTIONAL FIRST AID

JASMEHAR KAUR
B Sc (Hons) Computer Science, I Year

Whenever the human body finds itself in the throes of a malady, we promptly rush it to the doctors and find a hundred different treatments at our disposal. For bruises all big and small, the first aid kit with band-aids and antiseptic among other things is never too far. Most of us did have the preparation of this first aid kit in our academic curriculums itself, and almost ritualistically, we even followed it.

But unfortunately, the first aid we all have always been taught about is next to useless for treating the blisters and bruises on our hearts and minds. The contusions of the mind can't be magically cured with an antiseptic applied with the cautious finger of time. Even then, the first aid of the mind remains to this day, a taboo.

The internet defines emotional first aid as "a set of unique practices, behaviors and creative interventions designed to comfort, support, and bring relief to your own body, mind, heart, and soul and that of the people in need in particularly challenging times".

Suicide caused an average of 381 deaths daily in 2019 in India, with a total of 1,39,123 fatalities over the year, according to the latest National Crime Records Bureau (NCRB) data. According to another report, the total deaths across the globe due to the same were around 8,00,000. These alarming statistics and our country's enormous share in this number elucidate very well the importance of addressing the issue of mental health and developing emotional first aid.

Life is like that beautiful rose, the beauty and fragrance of which exhilarate us, but its sharp thorns can also be the cause of great pain; it can't all be sunshine and butterflies. Distress from interpersonal or intrapersonal conflicts, failure and the fear of it, financial issues among other things, can take a toll on our mental health. Keeping all this in mind, the psychologist Guy Winch has laid out several simple and useful methods to practice emotional first aid at the time of crises in his famous book, "Emotional First Aid: Practical Strategies for Treating Failure, Rejection, Guilt, and Other Everyday Psychological Injuries". He believes, and other psychologists agree, that one of the first and most important things to do is to identify the emotional pain. It is essential that the distress gets

identified and accepted before it becomes severe and causes brutal injuries to the heart and the mind. The other ways mentioned by him include practicing self-compassion when one is feeling low, not letting excessive guilt linger and distracting oneself by engaging in activities that require high concentration. Psychologists recommend a number of methods to ameliorate one's mental state in times of intense worry, distress and anxiety. From deep breathing to thinking of one's happy place, from focusing on a particular thing and meditating, to talking to some loved one, it is necessary to educate oneself about various techniques that can be used as first aid when tough times strike. Furthermore, when one is with people who need emotional first aid, it is important to listen to them and let them express themselves.

However, listening to them doesn't mean coercing them into telling the details they don't wish to share. One should try to calm them down and support them in whatever way possible.

Apart from all this, the most important thing is to reach out and seek help. If we can run to our doctors due to fevers and fractures and other physical injuries, we should also be able to reach out to psychologists and psychiatrists when the tyrannies of the world take a toll on our mental health.

Source: ideas.ted.com, www.anniewright.com, www.medicalnewstoday.com

POEM

ANUSHKA NANDA
BA (Hons) English, I Year

(An English sonnet)
Slender fingers, great burden- bear, wonder
Dying on, in holy matrimony;
When stakes of chastity rip asunder-
The grand notes of divine harmony.
Divinity against itself, warring-
Bared prodigal flesh to fire's death song;
Innocent proof, in evidence charring,
Un-criminal retying of threads strong.

Graceful mother of odd children uncouth,
The queen of all life, unrenewed.
The keeper of all the pain, all through youth-
Through death and decay, dirt's daughter new.
Ram, Sia-Ram, Sia-Ram, Jai Jai Ram.
Ram, Sia-Ram, Sia-Ram, Jai Jai Ram.

WATER

GULSHAN SANA
B Sc (Hons) Zoology, I Year

They threw dirt in me
But I kept flowing.
Their shit made me black
But I kept flowing.

They Killed so many lives I carry
But I kept flowing.
They made me look scary
But I still kept flowing.

They repeatedly wasted me
But I kept flowing.
They took me for granted
But I kept flowing.

Once when my patience
Could not hold anymore,
My anger turned into tsunami
And they shivered from my roar.

Thousands I killed
Millions I hurt.
I took away their everything
And bought them back to dirt.

Yes I did a bad act,
But that was the end of my suffering
I am both good & evil
You chose your side
And Let Karma do the rest.

SHORT STORY

OM MAHESWARY
B Sc (Hons) Mathematics, I Year

I developed stammering at the age of six. For years, my parents were unaware that I had a problem with my speech delivery. They thought my difficulty in speech would go away with growing up. However, when my friends began noticing the interruption in the flow of my speech, I realized it was abnormal to get stuck with words frequently. It was then that my parents got me into a 6-month long speech therapy to gain control over my speech. I could speak slowly over time, but my condition worsened when I was in the 9th class. It made my remaining school life horrible. I had been regularly bullied, ridiculed, and teased for the way I spoke.

My teachers thought I could not answer their questions because I was lagging in my studies, but in reality, I did not speak because my words took too long to come out. Instead of trying to understand my speaking disability, they made me stand outside the classroom for my delayed responses which was intensely humiliating. There were days when I had palpitations, and I felt invisible strings from the throat tying my tongue whenever I was asked to speak or read aloud to the class. So, I would skip those days with excuses or bunk the classes. I would even sit in the back rows during class hours to avoid getting noticed. When I tried to join my peers in their conversations, I felt utter embarrassment, merely talking to them and yet tripping over my words. They made nasty expressions and awful sounds after my slip-ups.

Stammering not only affected my flow of speech but also my flow of life. It affected my self-confidence, self-esteem, and life experiences. However, once I came across the fact that even Hrithik Roshan had to battle against stammering for 22 years and he defeated this major hurdle in his life, I was motivated. I thought if he could, then I would too. I realized I needn't be so hard on myself. With my parent's love and support, I began my speech therapy again, trying to articulate and speak effectively. It's not easy, but I have learned to accept myself and directed all my efforts to resolving my speech problem. Difficulties are not over for anyone, it just depends on how we deal with them and, I'm learning not to allow stammering to define me.

HOMESICKNESS, NOT A WEAKNESS...

GUNJAN PAREEK
BA (Programme) I Year

No matter how excited you are to start university, it's natural to feel a little homesick sometimes. You know your life will change and will never be the same again, but the change will happen for good. Moving away for university is a big transition, whether you've come from the other side of the world or half an hour down the road. If you're suffering from homesickness, just remember, you're definitely not the only one.

Feeling homesick is really normal, especially in the first few months of university. Those around you are probably feeling the burn too, but are just keeping schtum.

WAYS TO DEAL WITH IT & WHAT TO DO WHEN YOU ARE FEELING HOMESICK...

1. LET YOURSELF BE HOMESICK FOR A BIT

This is perhaps the most important message of all: feeling homesick is not a weakness, nor is it something to beat yourself up about. Missing home is something that affects most students, and you'll only make the situation worse if you think of it as something to feel guilty about.

Let yourself be homesick for a bit. A good cry is good for the soul! But put a time limit on your wallowing. Give yourself 24 hours and then pick up your phone and ask your new mates if they fancy a coffee. This will relax you and make you feel better.

2. GO OUT AND KEEP YOURSELF BUSY

It might be tempting to treat your room as your own little safe haven, but spending lots of time inside will only make the homesickness that much worse. Isolating yourself will make your feelings more intense as you'll spend even more time thinking about what you miss from home.

Try to keep yourself busy by organising day trips, studying at the library rather than your room, or even trying out some extracurricular activities.

3. BRING HOME-COMFORTS

Whether it's your favourite teddy or a rag of a blanket that your nan gave you when you were seven, we all have those objects that cheer us up when we're not feeling our best. Whatever your comfort things are, make sure to bring them with you.

Home comforts can massively help with feelings of homesickness while travelling. And don't be worried about getting stick for having cuddly toys in your bedroom. The chances are that your roommates have theirs hidden away somewhere too.

4. KEEP IN TOUCH WITH HOME (BUT NOT TOO MUCH!)

Whether it's a phone call or a WhatsApp group chat, keeping in touch with your friends and family is important. It will make you feel more involved with what's going on back home.

However, keeping in touch too much can actually make you feel the distance more. The trick is not to let it get to a stage where you're communicating with people back home more than you are with those near you. Remember, your friends and family will still be waiting for you back home during the holidays. Try to focus on the here and now at the university. You can go back and visit anytime. But try not to go too close to the start of the term as it could make your homesickness worse.

5. STAY OFF SOCIAL MEDIA

Constantly checking the social media pages of your family and friends from home will do more harm than good. Limit your time on social media and turn notifications off on your phone. That way you're not distracted by memories from your home when you do find yourself perking up. Choose IRL over IG!

6. EXPLORE YOUR NEW SURROUNDINGS

One of the main reasons we feel homesick is often to do with being in unfamiliar surroundings. That's why it's a great idea to set aside some time to explore your university town or city so you'll feel more at home. Go for walks, do some sightseeing, engage in voluntary work within the local community or just get to know your university campus. You're only around for a few years, so now's the time to make the most of it.

7. DON'T COMPARE YOURSELF WITH OTHER PEOPLE

It's easy to look at everyone else's Instagram and Snapchat stories and think you're not having as much fun as they are, or that you're doing something wrong. But don't forget that social media only shows a superficial snapshot of people's lives. Try not to compare your university experience to others and don't expect every single day to be the

best one of your life.

8. **PLAN ONE NICE THING FOR YOURSELF A DAY**

Staying positive can be easier said than done, but making a concerted effort to maintain a positive attitude will help you combat homesickness in a major way. Plan things that you enjoy doing and can look forward to each day. This could be socializing with friends or enjoying a nice hot bath and an episode of Bake Off. Being positive also makes you a pleasure to be around, so you'll probably find it easier to make new friends, which will help keep homesickness at bay. However, if you are struggling, don't feel like you can't tell people you're unhappy. Friends and professional organizations are always available to help.

9. **ASK FOR HELP**

The transition from school to university can be tough to get your head around at first, and there's no shame in asking for help. If you're having any issues with your course (or anything else for that matter), don't suffer in silence. If you're feeling homesick, worrying about your studies or finances will only make things worse. It's best to take steps to sort out any issues or get support as soon as they arise. In addition to approaching your lecturers directly, you'll also find that universities have counseling services available that you can use if you need mental health support.

10. **EXERCISE**

When you're feeling down, it can be tempting to lie on the sofa watching romcoms while crying into a massive tub of Ben and Jerry's. However, doing this will likely make you feel worse. Keeping healthy (and fighting off that freshers' flu) will keep you feeling much more positive about life. Remember, there's always help out there. If you're struggling with your mental health, there are free mental health services available at your university that you can access.

THE ONE

ABHIRAJ PARIHAR
B Sc (Hons) Zoology, I Year

You cannot imagine the pain, when all of your love is in vain. People say, "Love at first sight doesn't exist, It's mere attraction, you dimwit."

I remember the day she sat beside me; We didn't talk but I remember every word she said. My heart was locked and she had the key, But what a waste, a boy was already in her head. "I loved her but why can't she see me?", I wondered this every day and went to bed.

The time was not right for us to be side-by-side. So, I decided to wait, For either the right time, or the moment my feelings died. I made mistakes, I couldn't think straight, And she became the one I started to confide in.

I hid my feelings behind a gate.

With time, I realised, she is a lion in a cage, The boy in her head was actually a phage. The gate was locked but it opened another part—not love, but compassion from my heart.

She wanted to achieve great heights, And I, wanted to fill her life with lights. I didn't want to be her life's thorn, But someone, whom she could adorn.

So I reinforced the gates, to persist until she won, For I will always be waiting for my "The One."

ETHICAL DILEMMAS AND MORAL CONFUSION DURING COVID-19 PANDEMIC

CHAITANYA SHARMA
BA (Hons) Philosophy, II Year

INTRODUCTION

The COVID-19 pandemic ravaged a disaster whose miasma was predefined, and which wreaked havoc in a way that could be done no better any time soon. With everything changing the medical ethics branch of philosophy and with medicine undergoing significant changes, these alterations had to be put to a thorough examination of ethical scrutinization and reflection to comprehend things from the right perspective. Patient-doctor relationship, nurse and medical institution interactions had undergone a significant alteration- for good or for bad, it was the reality. I endeavor to highlight the medical ethics and the corresponding dilemmas that have surfaced during COVID-19 Pandemic. It is said that "MEDICINE is mercy-empathy-daring-integrity-care-ingenuity-ETHICS " and COVID-19 has placed tactile damage to it at its core. Medical ethics, steps incurred by clinicians, allocation of medical facilities, rendering assistance - all of this involves the question about "life" and has been brutally affected by the miasma unleashed by the COVID-19 pandemic. The allocation of ventilators, shifting medical culture in providing life-saving treatment, distribution of vials, inoculating the patients, and various other issues have been witnessed by ethicists and have posed a serious question of morality at the core. This has not acquired adequate attention from the administrators. Some of the ethical dilemmas promulgated during COVID-19 are first of its kind and moral intelligence was not ready to address such challenges with a strong footing. Even now, SARS-COV-2 is a virus that is rapidly unfolding at a faster pace as compared to its understanding with "beta, gamma", and various other stages and levels. It is increasing moral distress and thereby severely affecting the doctor-patient relationship, which in turn affects the stream of medical ethics.

CRITICAL EVALUATION

The essential question is resource allocation. We all know that there were scarce resources during COVID-19 Pandemic and various non-COVID-surgeries were being postponed indefinitely and were kept on hold because the staff of the hospital was preoccupied with COVID-related emergencies. This resulted in a heavy backlog of non-COVID-related operations and allocation of resources. Having COVID patients on one side and non-COVID patients on the other was something that required severe scrutiny, and ethics examination was indeed required so that equitable or rather the best possible conclusion could be drawn, and we don't leave anyone wandering in the hospital ward-rooms. This involved a serious question about life! Another major question arises from the theory or the postulation that calls the healthcare professionals to put themselves in risky-COVID-19 situations - this is cumbersome parlance we are getting into because there are grave emergencies where people are not abandoned to put their lives at stake and risk all for the demon, just like the doctors and health professionals who risk their lives to protect others during gut-wrenching situations caused by

the pandemic; and all we do is simply say that they are under oath and it becomes their solemn duty to protect us!

But let us ask the most elementary question here - for these doctors and nurses, or anyone in general terms, will the oath and codes be "unconditional, absolute, and consistent"? Many doctors died- their family members got affected by this disease, but they still went ahead to protect the life of that man lying low on the stretcher. Why is it so, and what binds them to this duty? It, I suppose, requires extensive moral scrutiny. We need to understand it through the perspective that the duty to treat when you, yourself, are not safe from the life-threatening entity is something that even Kant's morality would stop and could not answer. Another issue that arises here is whether the healthcare professionals who fall prey to the COVID-19 pandemic and are not in good health be given priority treatment and medication because they are doctors and helpers who save others' lives and work with insufficient PPE care kits. Should we have an institution-wide, single obligation and mandate to allocate resources such as ventilators and other necessary equipment to sufferers so that they can get better and can we amend, if we have to, and to what extent, the "triage-protocol"? But what is the one-point answer to this elongated discussion from Hippocrates to hospitals and the situation which personifies the line: "all gave some and some gave all"?

CONCLUSION

Hospitals are called the place that secures human life in the best possible way. But imagine the situation of the son admitted to hospital A, whose father is admitted to some other hospital and who gets a phone call about his mother who was admitted to hospital Z being no more! What the fate is of the medical institutions and clinics in and after the menace of the COVID-19 pandemic is something that not only requires elected representatives and administrators but also ethicists to scrutinize and rapidly understand the changing roles and responsibilities of the doctors vis-a-vis patients. Thereby, they have to acknowledge the pertinent evolving nature of medical ethics.

The utilitarian approach will not prove to be useful in order to cast out the gray clouds that overpowered hospital institutions, but the use of universal reason i.e., objective, universal in context to Rawls' theory of justice and social contract theory might seem prudential to rely on. But such topics require even more elongated non-exhaustive discussions. A patient is prioritized because he requires heavy medical treatment or because he is at high risk. This is something that clinicians and ethicists have to brainstorm and come to an ethically sound conclusion with. With this, I bring down the curtains of this elaborate discussion.

REFERENCES

1. https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/33553555/#:~:text=-COVID%2D19%3A%20Public%20health%20issues%20and%20ethical%20dilemmas
2. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7847409/#:~:text=COVID%2D19%3A%20Public%20health%20issues%20and%20ethical%20dilemmas
3. https://www.mygov.in/covid-19
4. Normative Ethics lecture by: Prof. Sharma Bhanu Bhupendra, Associate Professor, Department of Philosophy, Hansraj College, University of Delhi, 110007
5. http://icpr.in/

BEING AND NOTHINGNESS

SALONI BANSAL

BA (Hons) English, III Year

Distant dreams and pervasive thoughts
Analysing life as a mixture of floods and droughts
Curating certainties and still longing for surprises
Running for goals amidst all this crisis
Falling and getting up with the dream to fly
Least do we know it goes hand in hand, the try and cry
Going out and about to lose that anxiety
Only for it to chase us in some new variety
They say not all those who wander are lost
But for them the definition of home comes at what cost
Bizarre words by our loved ones
Juxtaposing the thinking which goes beyond in tons When I can be drowned by hurtful words
Do these people matter who themselves walk in herds Submerging in an endless loop of wishful thinking Trying hard about life to save it from sinking
Years shall pass by, the merciless traumas remain there
They say time heals but how much of it is gone in the healing process, does that even care Just like
Using the camera to capture moments full of now
The moments gone busy in capturing,
I wanna get them will someone please tell me how
Tagging emotions to places
Not wanting to be a part of the worldly races
Falling in love w the chaos this place offers me everyday Contemplating and testing my patience more day on day My heart goes back to searching life
Wish I could just pierce the past through a knife
Beyond the visual interpretation of this smiling face Embracing the unknown without any map, without any trace

Grateful that life gave synopsis of what poison tastes like
Not wanting to taste the elixir anymore, is that thought now nice Crazy should I be called that I loved the sour
What kind of a human to be called who wants of it more
The joy of being you
Suddenly evades your heart without giving any cue
What used to fill you once w peace
Now just lies there as if to tease
Handling your dreams in a silver platter
Are you yourself aware of your dreams, does that question matter Nonetheless,
Only for those dreams to be snatched away
Feels like you kept them in an illegal place and they just toed-away Ambitious and goals so lustrous
They say look once at thyself
Still
Creative, confident and chivalrous
Is that really what I like to call myself?
Proud that I evade meaning
Taking support of that wall which itself is leaning

POEM

DOLLY SONI

B.Com (Hons) I Year

Songs I write someday
knowing you will never read them ...
feelings which taught me
tears aren't sign of weakness...
but the courage to keep going
each and every day, giving me hope,
why then it feels like someone is pulling my
mind with ropes? I know it's a mess here!
But I wrote everything down to feel warm...
So I thank my desires to heal more and more,

And trying each second not to harm!
Yes, this is the changing me!
Thanks, dear diary, for always blessing me!

POEM

RASHIKA SINGH
BA (Hons) English, I Year

It is not so much my inability to love Delhi as much as it is the constant need to forget you, look at you, dispel you. i am living rent free in this big, new city and you are living charge free in the cesspit of my mind—many fluids and idiosyncrasies there, along with you. always you. from the back of my head to the tips of my hair, from the tips of my fingers to the back of my legs—so pervasive, much persuasive. i guess i do have this propensity to not love a healthy amount (but what is the healthy amount? the type of love you give to your mom? nah, that's just inadequate, call her back. the type of love you give to your best friend? they never complained. the type of love you have for that little puppy of 14 months? he'd die smiling today if you smothered him with love) (so maybe the last one is the clue after all) (not to the healthy love of the epics but the love i hold in my chest) (for you, all for you, always you).

This is a wild city, a cry-at-night-for-your-mind city, a not so selfish but way too blind city. not really a crime city but will attack you if found flying city. in the minarets at the juncture of the ancient and the modern, i find you. at the little shops of beautiful but useless souvenirs, i find you. the trinkets they sell at red fort, the flowers that grow in lodhi gardens; from the blaring sounds found on the streets to the cheap thrills on any green field: there's you. with the pen in my hand, i wake up to write an ode to the city but even there, i found you. from the dip of the ink to the end of the sentence, there's you. there's no way to end this ode to delhi because it was never an ode to delhi. just you, consuming and spitting me out every week, every day, every hour.

FRIENDSHIP

ASTITVA SINGH
BA (Hons) English, III Year

Like a Yellow leaf in the autumn days
Like a single flower in the Vast land of desert Like a single kite flying in the bright sky Similar is our friendship of invincible heights.

Mighty lawns and dry classrooms Cold breezes and haughty summers Small fights and vast tours
These moments of goodness Will survive together

Unique are these memories which open new boundaries Unique is this friendship which cannot be traded
Unique we have grown and Unique we have failed
At last our journey was full of good days

Do you remember that day of laughter? Do you remember that day of sorrow?
With Unprecedented, unpredictable situations We hailed the storm with almost valour.

What if today is the last day of our gathering?
What if we forget the memories we have cherished together? Will our friendship still exist?
Will we be changed within growing years?

Let's promise to not forget each other,
For even Achilles fought a battle over Patroclus death,
Like a wind that never forgets to jiggle tree leaves when it passes through, We will meet again with innocent smiles.

Today we are departing Not with painful feelings
Not with erroneous relations Not with sour emotions
We are going
With fruitful memories With love and power
With a promise of meeting again For we live forever.

REMEMBRANCE

HIMANI SHARMA
BA (Hons) English, III Year

For remembrance, it must be known.
For one to die, to die forever,
It takes two deaths.
Buried, first. Forgotten, second.
The accommodation of the alive with dark
Makes it hard to survive the light.
Light of the truth, which is crumbled but can cripple the powerful,
Or sometimes, can be run over by cars, gunshots
Or poison? For the might to remain intact,
Power of the powerful by suffocating the truth.
The small are still made to wear the dark glasses
To make it soft and comfortable.
The truth not recollected, is buried and is forgotten.
And is dead.

This evening
Here I am, my throat is choked, eyes yearning to be dry, very little idea of where to go to not feel suffocated,

Black and peach buildings, new and alien,
Surrounded, I feel caged

Just a year
And this time, my world has fallen apart
The building was cemented but homely
On the terrace, I could see
The brevity of the bricks and life. I'm afraid to go now,
Go there to find peace.

What if this sky brings up what I want to forget?
What if the sand reminds me of the crippling reality?
What if that humanly nature of remembering destroys me?
For remembrance, it must be known.
To not know when she died, is the pain.
I could not see, the eyes were dead.
Still frightened of what happened.
I'm here trying
To wipe my tears
To understand my fears
Amongst others'
Trying to find some space to breathe
Through these bricks
To the new air
Which I might be afraid of
The next time
Fearing the fear of today.

RAISE HELL OR BEND HEAVEN

R. HARINI
B.Sc (Hons) Anthropology, I year

Drunk in sorrow; drowning and wafting as the song of pain echoes; Drunk in sorrow, does life dance to the tune of the fate of eternal agony? Hues of crimson and cerulean frolic on the stage,

The dancer submerged in the euphonious tunes spilling, Spouting out of the massive speakers as the hall drowns, In a sublime silence as the dance of doom itself entranced, Their souls; Deafening applause drowning unshed tears.

Vicious splotches of red, brown and yellow bloom on her marred skin, Tears stain her heart as vermillion bleeds onto stark white tiles,

Caked up foundation attempting to hide the blows of his crumbling ego, On the stage she was the deity of death itself; in her house, she trembled, Whispering silent prayers for salvation; if not death.

The glimmering plastered smiles on her face begin to fray at the edges, Her ears echoed with the voices of the tumultuous cosmos now blending, Into a frightening nothingness as the bruises turned blue and black,

She wept onto them; the people she opened her heart to; only for them, To break in and crush it down; with accusatory tones and pointed fingers. She continued to dance; only now a lifeless doll held by invincible strings, Her parents looked her in the eye as they questioned her very being,

The burden of honor weighing on her soul as it tumbled into dust, Dust that swirled and swam; enclosing her in an unseen mound, Of abject loneliness; of dire helplessness; of pain.

Today; she steps onto the stage again, swaying to the unending rhythm, Finally breaking the bonds that had shackled her; choked her,

Unshed tears still gleamed abound; only now were they of unbound joy, The joy of freedom; the pride of emancipation; the mirth of liberty, Justice had been served by her very hand; on this fateful dawn.

For somewhere in an apartment bed did crimson stain the sheets, Did cruel eyes remain frozen as his breath etched out painfully, Today; the goddess of death had weighed in her last move,

The last strand had snapped for today was justice served as death, Death itself danced as mirth flooded the hall; blooming in her veins

Drunk in mirth; drowning and wafting as the song of life echoes; Drunk in mirth, does death dance to the tune of fate; of freedom?

LAND OF ICE

ANKIT SINGHANIYA
B.A. (Hons) Economics

Dancing around with a flower in her hands
Talking to the animals and watering the plants
But strangely enough I see death lurking nearby
Silencing the animals and sucking out the plants dry

For split of a second I close my eyes
And find myself in a land of ice
Its cold and it stings, the chilled gust of wind
The garden's gone and the woman can't be seen

A vastness in front of me
I'm the only spot in this snowy white
The space-time here disapproves of me
So I wait for the eclipse to take over the light

Oh the wonderful sight it'll be for the eyes
When the woman comes around to test my might
And this demon blood with its fire ablaze
Will bring upon hell to this land of ice.

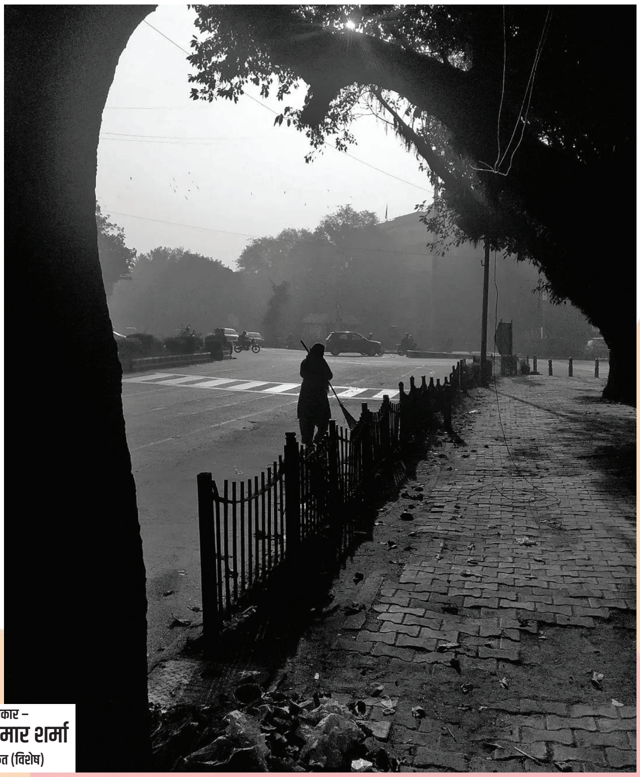

– छायाकार –
विशाल कुमार शर्मा
बी.ए. संस्कृत (विशेष)

संस्कृत खण्डः

संपादकः

डॉ ब्रह्म प्रकाशः
डॉ भारत कुमारः

विद्यार्थिसम्पादकमण्डलम्

शिवांशी मिश्रः
सुभाष झा
शुभम पाण्डेयः

अनुक्रमणिका

1. रामायणस्य वैशिष्ट्यम् / शिवांशी मिश्रः ---------- 54
2. जनतंत्रवादः / सुभाष झा ---------- 54
3. प्रकृतिः च ममानुभवम् / कुमार आदर्शः ---------- 55
4. संस्कृतभाषायाः महत्वम् / श्याम किशोरः ---------- 56
5. स्त्रीशिक्षायाः महत्वम् / शुभम पाण्डेयः ---------- 56
6. आयुर्वेदः / शिवम कुमार मिश्रः ---------- 57
7. सत्यम् / ऋषभ सुंदरियालः ---------- 58
8. भारतीया संस्कृतिः / आदित्य कुमार मिश्रः ---------- 59
9. नारी सशक्तिकरणम् / कुमार आदर्शः ---------- 60
10. श्रीअटलबिहारीवाजपेयी / भुवनः ---------- 61
11. सुविचाराः / शिवानी ---------- 61
12. अहिंसा परमो धर्मः / खुशी ---------- 62
13. महिला सशक्तिकरणम् / आर्यनः ---------- 63
14. स्त्रीशिक्षाया : आवश्यकता / सोनू ---------- 63
15. राजनीतौ नारीसंघर्षः / नेहा ---------- 64
16. मम महाविद्यालयः / ओमकार नाथ झा ---------- 64
17. सदाचारः / सुशांतः ---------- 65
18. व्यायामः / जयदीपः ---------- 65
19. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् / अनंत पाण्डेयः ---------- 66
20. शिवराजः / आदित्य अभिषेकः ---------- 66
21. वर्तमान युगे संगणकस्य/कम्प्यूटरस्य उपयोगिता / नैन्सी ---------- 67
22. शिक्षायाः महत्वम् / मनीषः ---------- 69
23. मम महाविद्यालयः / प्रीतिः ---------- 69
24. पुराणानां महत्वं / मोहित पालः ---------- 70
25. पृथ्वी / वैभवः ---------- 71
26. डॉ एपीजे अब्दुलकलामः / खुशी शर्मा ---------- 72
27. मातृ देवो भव / हिमांशु कौशिकः ---------- 72

रामायणस्य वैशिष्ट्यम्

शिवांशी मिश्रा
स्नातक तृतीयवर्षः

वैदिकसाहित्यं, लौकिक साहित्यमिति, साहित्यं द्विविधम्। वैदिकसाहित्यं तु वेदमाधारीकृत्य भवति। लौकिकसाहित्यस्य विषये आलोच्यमाने सर्वादौ रामायणं,महाभारतम् इति महाकाव्यद्वयं दृष्टिपथमायाति। तत्रादौ रामायणं प्रमुखस्थानमावहति। रामायणं महाभारतवत् कश्चिदितिहासग्रन्थो भवति। रामायणं संस्कृतसाहित्यस्य उच्चवर्गीयमहाकाव्यम् अस्ति। महर्षिः वाल्मीकिकृतरामायणं संस्कृतसाहित्यस्य आदिकाव्यं खलु। वाल्मीकिः संस्कृतभाषायाः आद्य कविर्विद्यते।

रामायणवत् प्रसिद्धः लोकप्रियः च अन्यः ग्रन्थः संस्कृतसाहित्ये नास्ति। सीतारामयोः वियोगः रामायणस्य मुख्यं कथावस्तु। रामायणे चतुर्विंशतिसहस्त्राणि श्लोकाः सन्ति। अतः 'चतुर्विंशतिसाहस्त्री संहिता' इति रामायणस्य नामान्तरम्। रामायणं कदा आसीत् इति विषये मतभेदा बहवः सन्ति। महाभारते रामायणस्य कथा वर्णिता दृश्यते। पाणिनेः अष्टाध्याय्याम् अपि कैकेयीकौसल्यादयः शब्दाः दृश्यन्ते। अतः रामायणं महाभारतात् पाणिनेःच पूर्वम् आसीत् इति स्पष्टम्।

रामायणस्य प्रतिसहस्त्रतमस्य श्लोकस्य आदौ गायत्रीमन्त्रस्य एकैकम् अक्षरं प्राप्यते। रामायणे भारतीयसंस्कृतेः सुन्दरतमरूपं वर्णितम् अस्ति। अस्याः भाषा परिष्कृता प्रसाद-गुणाः च आदौ अन्ते यावत्। अस्मिन् काव्ये रसानां परिपक्वता अपि सिद्धाः अस्ति।

तत्र आश्रितानि काव्यानि नाटकानि च बहूनि सन्ति। रामायणमाश्रित्य विरचिताः ग्रन्थाः- भासस्य प्रतिमानाटकम् अभिषेकनाटकम् च, कुमारदासस्य जानकीहरणमहाकाव्यम् च आदि। विश्वस्य अनेकभाषासु अस्य अनुवादः कृतः अस्ति। वाल्मीक्याः कार्यम् अद्यापि अजरम् अमरः च अस्ति।

रामायणं सप्तकाण्डेषु विभक्तः अस्ति- अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम्, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्डम्, युद्धकाण्डम् तथा उत्तरकाण्डम्। प्रत्येकं काण्डं सर्गेषु विभक्तं भवति। सर्गेषु संख्यायाः विभागः यथा- बालकाण्डे – 77 सर्गाः, अयोध्याकाण्डे–119 सर्गाः, अरण्यकाण्डे– 75 सर्गाः, किष्किन्धाकाण्डे– 67 सर्गाः, सुन्दरकाण्डे– 68 सर्गाः, युद्धकाण्डे– 128 सर्गाः, उत्तरकाण्डे 111 सर्गाः सन्ति।

सर्गेषु संस्कृत श्लोकाः सन्ति। अधिकतमं संख्या अनुष्टुपश्लोकानां भवति रामायणं पठित्वा जनस्य तृप्तिर्न भवति। पुनः पुनरपि पाठे जनो नवं रसं प्राप्नोति। हिन्दीसाहित्ये महाकविना तुलसीदासेव रामचरितमानस्य रचनापि इदमेव ग्रन्थरत्नमाधारीकृत्य कृता। एतस्मिन् लेखकेन समाहितानां जीवनस्य अनेकाः समस्याः समाहिताः। अन्यायस्य उपरि न्यायस्य परमविजयस्य प्रतिनिधित्वं रामायणस्य मुख्यः आशावदी च पक्षः अस्ति।

वाल्मीकिः रामस्य शारीरिक-मानसिक- नैतिक – चरित्र गुणान् सूत्रेण चित्रयित्वा विस्तृतं कृतवान्। एतेषां गुणानाम् कारणात् भारते अपि विदेशेषु अपि रामकथायाः बहुप्रचारः अभवत्। अस्मात् दृष्ट्या भारतस्य सर्वेषु साहित्येषु वाल्मीकिरामायणम् उत्तमम्

उपजीव्यग्रन्थः अस्ति। अन्ते च ऐतिहासिकदृष्ट्याऽपि इदं करुणरसप्रधानः महाकाव्यमत्यन्तं महत्त्वपूर्णम् वर्तते।

जनतंत्रवादः

सुभाष झा
स्नातक तृतीयवर्षः

लोकतन्त्रशासनपद्धति प्रजातन्त्र शासनविधिः सर्वेषां राजतन्त्राणां लोकतन्त्रं विशिष्यते।

जनतन्त्रशासनस्य प्रारम्भः – वैदिकं वाङ्मयम् अनुशील्यते चेत् तर्हि दृग्गोचरताम् आयाति यद् राजतन्त्रशासनेन सममेव लोकतन्त्र शासनमपि वैदिककाले प्राचरत्। ऋग्वेदे राज्ञो निर्वाचनस्य वर्णनं प्राप्यते। अथर्ववेदेऽपि राजो निर्वाचनस्य जनतायाः समर्थनस्यावश्यकतायाश्च वर्णनम् उपलभ्यते।

विशो न राजानं वृणानाः। (ऋग्.)

त्वां विशो वृणतां राज्याय। (अथर्व.)

यजुर्वेद स्फुटमेव महतो जनराज्यस्य द्विवारम् उल्लेखो विधीयते। राज्ञः परामर्शदातृरूपेण सभा-समिति नाम्नयोः परिषदोर्वर्णनमपि प्राप्यते। यजुर्वेदे राष्ट्रपतेः कर्तव्यरूपेण जनतन्त्र संरक्षणम् विश्वहित संरक्षणम् स्वराज्य संरक्षणं च निर्दिश्यते।

किं नाम जनतन्त्रम् – जनानां लोकानां प्रजानां वा तन्त्र शासनं जनतन्त्रम् इत्याभिधीयते। जनतन्त्रस्य बह्व्यः परिभाषा उपलभ्यन्ते। तत्र अमेरिकादेशराष्ट्रपतेः अब्राहम लिंकन महोदयकृता परिभाषा प्रथिततमा हृद्या च। जनतन्त्रम् जनतायाः शासनम् जनताद्वारा संचालितम्, जनहितार्थं च भवति। सीलेमहोदयो लक्षयति यत् तत् प्रजातन्त्रं वा कथ्यते यत्र सर्वस्यापि लोकस्य शासने भागो भवति। डायसी महोदयस्तु लक्षयति यत् तत् प्रजातन्त्रं यत्र शासनसूत्रं राष्ट्रस्य बृहत्तर लोकहस्ते निपतति।

लोकतन्त्रस्य वैशिष्ट्यम्– लोकतंत्रशासनस्य सूत्र लोकायत्तं भवति। लोकतन्त्रे जनर्निवाचिताः शासनसूत्रं गृह्णन्ति। यद्यभिर्लोकहित न सम्पाद्यते, जनमानोऽनु कूलं च न कार्यं निष्पाद्यते, तर्हि ते आगामिनि निर्वाचने पदच्युताः क्रियन्ते। एवं जनविश्वासं अवाप्ता एवं जनप्रतिनिधियस्तत्र शासनं विदधति। जनप्रतिनिधि शासनत्ववाद एतद् उदारदायित्वपूर्णं शासनं भवति। प्रतिमानवं भेदाभावात् समानत्वम् अत्रोररी क्रियते। अत्र जनो न समाधानमात्रम् अपि तु साध्यमेव। जहितार्थमेतत् शासनम्। लोकहस्तेषु प्रभुत्व शक्तेः सत्तया प्रजायाः प्राधान्यम्। अत्र नागरिकेभ्यः समाजिकी राजनीतिकी आर्थिकी च स्वतन्त्रता भवति।

प्रजातन्त्रपद्धतेर्लाभा वैशिष्ट्यं च – अत्र राज्यापेक्षया व्यक्तेर्महत्वम् वैयक्तिकविकासस्य च पूर्णोऽधिकारो लभ्यते। राज्यम् अत्र साधनम् , जनोऽत्र साध्यश्चा। अतो व्यक्तेः स्वातन्त्र्यम्। मतदानेऽपि स्वातन्त्र्यलाप्रतिनिधिनिर्वाचनेऽप्रतिहतं स्वातन्त्र्यम्। भाषणे, लेखने, विचाराभिव्यक्तौ चात्र पूर्णं स्वातन्त्र्यम् इदृशं स्वातन्त्र्यं लोकहितघातकं न भवितुर्महति। विविधाः क्रान्तयोः जनशोषणेन अत्याचारादिभिर्वा प्रादुर्भूताः। अत्र स्वाभियत प्रकाशन- स्वातन्त्र्यात् न रक्तमयी क्रान्ति सम्भाव्यते।

जनतन्त्रशासनस्य दोषाः – जनतन्त्र शासनस्य केचन दोषाः अपि संलक्ष्यन्ते सिद्धान्त रूपेण जनतन्त्रवादः सर्वोत्तमः। परं व्यवहारे न तथा सुखावह : सिद्धान्त व्यवहारयोः सर्वत्र वैषम्या वेक्षणात्। व्यवहारे परीक्षिता एते गुणाः दोषरूपेण परिणमन्ते। वर्तमानं जनतन्त्र क्षुधायै दुःखावप्तये, कष्ट सहनार्थं च स्वातन्त्र्यम्। समाजे मुर्खानां बहुल्याद मूर्खराज्यमेतद् व्यादिश्यते।

प्रकृतिः च ममानुभवम्

कुमारादर्शः
स्नातक प्रथमवर्षः

करोति प्रकृतिः स्नानं दृश्यते सर्वत्र हरितीमा
भवन्त्यानन्दिताः पशुपक्षयश्च वातावरणे शीतलता
आकाशे दृश्यन्ते कृष्णाः मेघाः धान्यानि उपजायन्ते कृषकैः
आतुरतया प्रकृत्या सह करोमि प्रतीक्षा वर्षाकालस्याहम्।

विस्मृत्वा प्रकृत्याः सुखं वसन्ति प्रकोष्ठे सदा
कदा भवति सूर्योदयः च भवति सूर्योस्तं कदा
कथं कूजन्ति कोकिलाः च प्रवहति गंगधारा
वर्षाजले सिक्तं भूत्वा परिवर्तनं भवति मनः स्थिते

नीलवर्णस्य आकाशे दृश्यन्ते कदापि लालिमा भवद्भिः
कदापि नक्षत्राणां गणना भूयन्ते तस्मिन् एव आकाशे

विस्मरन्ति मानवाः स्वस्य मूलस्वभावान् वसित्वा गृहे तथैव
शुकेन विस्मरते स्वस्य गतिं पिंजरबद्ध भूत्वा यथैव

किम् भवति पुष्पानां स्पर्शं च घासेस्थितं जलं शीतकाले
कथं पादेन च हस्तेन अनुभूयते मृत्तिकायाः कृत्वा स्पर्शं
कथं प्रकृतिः वदति हसति क्रीडति च आनन्देन नृत्यति
एतैः आनन्दक्षणैः सन्त्यानिभिज्ञाः नगरेषु स्थिताः जनाः

ग्रामिणजनाः कुर्वन्ति वर्षाकालस्य अभिनन्दनं च स्वागतं
भवन्ति प्रसन्नाः दृष्ट्वा धारायाः हरितवर्णात् शृंगारं
प्रस्तरैः युक्तानि मार्गाणि वृष्ट्यात् भवन्ति नगरेषु जलमग्नं
क्रोधेन निन्दन्ति नगरेस्थिताः जनाः वर्षां च फलं प्राप्तनुवन्ति स्वकर्मणां

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

श्याम किशोरः
स्नातक तृतीयवर्षः

संस्कृतम् भारतस्य विश्वस्य च पुरातनतमा भाषा। अन्यासां भाषाणां तथा पुरातनं साहित्यमद्य नोपलभ्यते यथा पुरातनं संस्कृतसाहित्यम्। विश्वस्य पुरातनतमो ग्रन्थः ऋग्वेदः संस्कृतभाषयैव निबद्धः। इयमतीव वैज्ञानिकी भाषा, अस्या पाणिनिमुनिप्रणीतं व्याकरणमतीव वैज्ञानिकं यस्य साहाय्येन अद्यापि वयं तान् पुरातनग्रन्थान् अवबोधुं शक्नुमः।

संस्कृतमेव हि भारतम्। यदि वयं प्राचीन भारतमर्वाचीनं वापि भारतं ज्ञातुमिच्छामः तर्हि नास्ति संस्कृतसमोऽन्यः उपायः। भारतीयजनस्य अद्यापि यत् चिन्तनं तस्य मूलं प्राचीनसंस्कृतवाङ्मये दृश्यते। यदि च तत् चिन्तनं वयं नूतनविज्ञानाभिमुखम् कर्तुमिच्छामः तस्य मूलं पृष्ठभूमि च अविज्ञाय विच्छिन्नरूपेण कर्तुं न शक्नुमः। यदि वयमिच्छामो यत् भारतीयजनः परिवर्तनम् आत्मसात् कुर्यात् तदा तेन परिवर्तनेन आत्मरूपेण संस्कृतिमयेन संस्कृतमयेन च भाव्यम्।।

संस्कृतस्य शब्दाः सर्वासु भारतीयभाषासु कासुचित् वैदेशिकभाषासु च प्रयुज्यन्ते। अतः यदि वयं भारतीयजनानामेकीभावं, तेषां भाषागतम् अभेदं सौमनस्यं च इच्छामः तदा संस्कृतज्ञानेनैव तत सम्भाव्यते। संस्कृतं सर्वाः-भारतीयभाषाः सर्वं जनमानसं च एकसूत्रेण संयोजयति। प्राचीनभारतीयेतिहासस्य भूगोलस्य च समीचीनं चित्रं संस्कृताध्ययनं विना असम्भवम्।

संस्कृतसाहित्यम् अति समृद्धं विविधज्ञानमयं च वर्तते। अत्र वैदिकं ज्ञानमुपलभ्यते, यस्य क्वचिदपि साम्यं नास्ति। महाभारतं तु विश्वकोशरूपमस्ति। रामायणशिक्षाः दिशि दिशि प्रचरिताः। उपनिषद्भिर्वैदेशिकैरपि विद्वद्भिः शान्तिः प्राप्ता। कालिदासादीनां काव्यानाम् उत्कर्षस्य तु कथैव का।

चरकसुश्रुतयोरायुर्वेदः, भारद्वाजस्य विमानशास्त्रम्, कणादस्य परमाणुविज्ञानम्, गौतमस्य तर्कविद्या, शुल्बसूत्राणां ज्यामितिविज्ञानम्, आर्यभट्टस्य खगोलशास्त्रम् इत्येवमादीनि अनेकानि विज्ञानानि शास्त्राणि च संस्कृतभाषोपनिबद्धान्येव। अद्यापि राजनीतिविषये शासनतन्त्रविषये च कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रं मनुस्मृतिश्च मार्गप्रदर्शके स्तः।

वयं भारतीयाः। अस्माभिः स्वकीयं गौरवमयं वाङ्मयमधीत्यैव तदाधारे भविष्यनिर्माणं कर्तव्यं, तदैवात्मोत्कर्षः सम्भाव्यते। स च उत्कर्षः आत्माधिष्ठितो हृदयग्राही वास्तविकोन्नतिकारी भविष्यति। यानि राष्ट्राणि स्वगौरवं न विस्मरन्ति तान्येव सफलतायाश्चरमोत्कर्षं प्राप्नुवन्ति।

अद्यत्वे केचित् मूढाः संस्कृतं मृतभाषां कथयन्ति ते न जानन्ति यत् ये संस्कृतस्य रसेन ज्ञानेन, संस्कृति बलेन अद्यापि कृतकृत्याः भवन्ति कि तेभ्यः संस्कृत भाषा मृता? पुनरपि यदि केचित् कुपुत्राः स्वजननी सदृशीम् इमां भाषां मृतां कथयन्ति येन च भारतवर्षे संस्कृत भाषा उपेक्ष्येत, तर्हि गीर्वाण वाणी एवं क्षमयतु तेषाम् अपराधः। यतो हि-

"कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति"

स्त्रीशिक्षायाः महत्त्वम्

शुभम पाण्डेयः
स्नातक तृतीयवर्षः

अस्माकं भारतदेशे नारीनां स्थानं महत्वपूर्णं मन्यते।। नरः नारी च इति सृष्टिस्वरूपस्य भागद्वयम्। गृहे निवसन्ति अपि नारी अनेकरूपाणि धारयन्ति-

कार्येषु मन्त्री करणेषु दासी, भोजनेषु माता शयनेषु रम्भा।

मानवजीवनस्य किमपि क्षेत्रं एतादृशं न विद्यते यस्मिन् स्त्रियाः सहयोगं न विद्यते। अधुना नारी पुरुषेण समं सर्वाधिकारेण सम्पन्ना

दरीदृश्यते। सरोजिनीनायड्यू – सुभद्राकुमारीचौहान – कमलादेवीचट्टोपाध्याय – अरुणा -आसफअली – विजयलक्ष्मी-इंदिरागांधी-राबड़ी-प्रभृतिभिः - स्त्रीभिः राजनीतौ उच्चपदम् अलंकृतम्। भारतीय संस्कृतौ नारीणां पूज्यतमं स्थानं विद्वद्भिः कथ्यते।अस्मिन् विषये आचार्यमनुना उक्तम्-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया।"

"शिक्षयति या सा शिक्षा शक्तुं शक्तो भवितुमिच्छा शिक्षा।" शिक्षा मानवजीवने विनयप्रदायिनी, शुभ-अशुभभावबोधनी, पुण्य – अपुण्यविवेचनी, हित-अहितबोधनी, कृत्य – अकृत्यनिर्देशनी, समुन्नतिसाधिका, अवनतिनाशनी, अपूर्वा शक्तिः ईह निखिले अपि संसारे। अर्थात् शिक्षा मानवजीवनस्य एका यादृशी प्रक्रिया वर्तते। इयं शिक्षा यथा नराणां हितसाधिका वर्तते तथैव नारीणामपि। यदि नरः तु विद्वान् स्यात् परन्तु भार्या चेत् मूर्खा भवेत् तदा जीवनं सुखावहं न भवितुमर्हति।

अस्मिन् स्वतन्त्रे भारते स्त्रीशिक्षायाः महत्वपूर्णं स्थानं वर्तते। स्त्रियः एव एताः मातृशक्तेः प्रतीकभूताः। निसर्गाद् एवं एतासु पत्युः उत्तरदायित्वं शिशोर्भरणस्य पोषणस्य च गृहस्य संचालनस्य संस्थापनस्य च। गृहकुटुम्ब संचालनस्य गृहस्थजीवनस्य सुखशान्त्योः श्वशुरयोः सेवायाः शिशूनां शैशवावस्थायां पाठस्य तेषु सच्छीलनिधानस्य पदे – पदे भर्तुः सहयोगस्य, सद्भावोन्नयनस्य अभ्यागतातिथीनां सपर्यायाश्च प्रभारो गृहपत्नीरूपायाः स्त्रियः एवोपरि आपतति।

ईदृशानां कार्यभाराणाम् उत्तरदायित्वं वहनकर्तुं ताः एव स्त्रियः समर्थाः भवितुमर्हन्ति याः सच्छिक्षायाः पुतजलेन अभिषिक्ताः भवन्ति। पुरातने समाजे ऽपि स्त्रियः शिक्षिताः बभूवः परं तासां संख्या भूयसी न दृश्यते। वैदिककाले स्त्रीभ्यः अनेकानि धार्मिक – कार्याणि विहितानि आसन्।

ऋग्वेदे उक्तम्-

"सा गार्हपत्यकर्मणि जागरुकाभूत्, पुत्रादिलाभेन समृद्धिञ्च अगच्छत् इति।"

ज्ञानविज्ञान कौशलमधिगच्छति चेद् द्वय्यपि नरनार्योस्तर्हि न केवलं तेषामेव जीवनं सुखशान्तिसमन्वितं भविताऽपि तु समाजहितं राष्ट्रहितं विश्वहितं च सम्भाव्यते तैः सम्पादयितुम्।

ऋग्वेदे श्रद्धा, कामायनी, यमी, शची, इन्द्राणी, अदितिः, आत्रेयी, अपाला, रोमशा, घोषा, उर्वशी, सावित्री, गोधा, विश्ववारा, सिकता, निवावरी, लोपामुद्रा-प्रभृतयः स्त्रियः मन्त्रदर्शनेन स्वकीयानां वैदुष्यं गौरवश्च प्रकाशयाञ्चक्रुः। इत्थं इदं स्पष्टरूपेण कथयितुं शक्यते यत् स्त्रियः अपि शिक्षायाः सत् पात्राणि अभूवन् सन्ति भविष्यन्ति च। तासामपि शिक्षणं अत्यावश्यकम् अनिवार्यञ्च विद्यते।

यथा पुरुषाणाम् कृते शिक्षायाःअधिकारोऽस्ति तथैव स्त्रीणां कृतेऽपि। सुशिक्षितैव नारी सद्गृहिणी सती साध्वी कर्मपरायणा वंशप्रतिष्ठास्वरूपा च भवितुमर्हति।

देशस्य समाजस्य च समुन्नत्यै स्त्रीशिक्षा नितरामावश्यकीत्यवगन्तव्यम्।अतः अस्माभिः सर्वैः स्वकीयानां कन्यकानां पठनपाठनोपरि गाम्भीर्येण विचारणीयं तदनुसारं च समाचरणीयम्।

आयुर्वेदः

शिवम कुमार मिश्रः
स्नातक तृतीयवर्षः

आयुर्वेदस्य इतिहासः वैदिककालादेव आरभ्यते। अतः पश्चात्सहस्रवर्षेभ्योऽपि प्राचीनोऽयं इतिहासः। विशेषतः क्रिस्तपूर्वचतुर्थशतकादारभ्य क्रिस्तशकस्य ११ शतकपर्यन्तम् आयुर्वेदस्य उत्कृष्टपरम्पराः न केवलं प्रचारे आसन् अपि तु तत्कालीनेषु प्रख्यातेषु नालन्दा, विक्रमशीला, वल्लभी इत्यादिषु विश्वविद्यालयेषु प्रमुखविषयत्वेन पाठ्यन्ते स्म। भारतीयैः सह विदेशीयच्छात्रा अपि अस्य प्रयोजनं प्राप्तवन्त आसन्।स्वास्थ्यरक्षणे आयुर्वेदस्य प्राधान्यमभिलक्ष्य आयुर्वेदः अथर्ववेदस्य उपवेदत्वेन प्रथां भजते। मतमिदं चरकसुश्रुतवाग्भटादिभिः प्रमुखायुर्वेदाचार्यैरेव प्रकाशितम्।

हिताहितं सुखं दुःखं आयुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तं आयुर्वेदः स उच्यते ॥ च.सू.३.४१॥

मानसिकशारीरकरोगरहितस्य ज्ञानिनः सुदृढ़व्रतः मानवस्य आयुः सुखायुः। एतद्विपरीतं दुःखायुः। अरिषड्वर्गविजितस्य सर्वभूतहिते रतस्य आयुः हितायुः। तद्विरोधे अहितायुः भवति। आयुश्च शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगः। इत्थं हि शरीरं तु नानाविध-आधि-व्याधिनाम् आगारमेव। अतः व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः, स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं च आयुर्वेदस्य द्वे प्रयोजने।

चरकाचार्यविरचिता 'चरकसंहिता', सुश्रुताचार्यप्रणीता 'सुश्रुतसंहिता', वाग्भटग्रथितम् 'अष्टाङ्गहृदयम्', माधवकरस्य 'माधवनिदानम्', शार्ङ्गधरस्य 'शार्ङ्गधरपद्धतिः' इत्यादयः आयुर्वेदस्य प्रमुखग्रन्थाः। चरकसंहितायां ३४१ सस्यजन्यद्रव्याणां, १७७ प्राणिजन्यद्रव्याणां, ६४ खनिजद्रव्याणां च उल्लेखः कृतोऽस्ति। ग्रन्थस्यास्य महत्त्वमभिलक्ष्य अस्य नैकानि व्याख्यानानि रचितानि।चरकसंहितायां 8 स्थानानि सन्ति। मूलतः एषा अग्निवेशेन रचिता संहिता।तत्र चरकमहर्षिणा प्रतिसंस्कारः कृतः। ततः दृढबलनाम्ना अपरेण वैद्येन संपूर्णं कृतम्। एवम् अद्य उपलब्धायां चरकसंहितायाम् एषां त्रयाणां कर्तृत्वं विद्यते।

सत्यम्

ऋषभ सुन्दरियालः
स्नातक तृतीयवर्षः

'नहि सत्यात् परो धर्मः' वस्तुतः कथनं एतत् पूर्णतया सत्यं शाश्वतं चास्ति। सर्वेषां धर्माणां सर्वेषु ग्रन्थेषु सत्यस्य सर्वोत्कृष्टं स्थानमस्ति। अनेनैव मनुस्मृतिकारेण धर्मस्य लक्षणं उल्लेखयन् सत्यं अन्यतमं स्वीकृतं वर्तते-

'आहुः - सत्यं हि परमं धर्म, धर्मविदो जनाः।।'

मानवैः सदैव सत्यस्य पालनं कर्तव्यम्। सत्यसंभाषणेन जनस्य समाजे सम्मानं प्रतिष्ठा च वर्धेते। तं कीर्तेः, सफलतायाः, शान्तेः सुखस्य च प्राप्तिर्भवति। सर्वेषु वेदेषु शास्त्रेषु च सत्यस्य महिमा वर्णितः दृश्यते, मानवजीवने यादृशं महत्त्वं सत्यस्य न अन्यस्य कस्यापि वस्तोः तादृशं वर्तते। सत्यवादिनः जनाः सदैव निर्भयाः प्रसन्नवदनाः च भवन्ति।

ये जनाः सत्यं वदन्ति समाजे ते प्रमाणं भवन्ति। तेषां पूजा भवति। विषयेऽस्मिन् सत्यवादी-हरिश्चन्द्रस्य उदाहरणं दरीदृश्यते। तेन सत्यस्य पालनाय अनेकानि कष्टानि अनुभूतानि। अनेनैव तस्य नाम अद्य सम्मानपूर्वकं गृह्यते।

एवमेव महाराजदशरथेन स्वप्राणप्रियः रामः वनं प्रेषितः आसीत्। महाभारतस्य सत्यवादिनं युधिष्ठिरं को न जानाति। सत्य-बलेनैव तेन विजयश्रीः लब्धा। रामायणे रामोऽपि सत्यमाश्रित्य वै लंकां विजितवान्।

उपनिषत्सु कथितं दृश्यते "सत्यं वद धर्मं चर", अत्रापि सत्यस्य महत्ता परिलक्ष्यते। सत्यवादी जनः केवलं ईश्वरादेव बिभेति, नैव अन्यस्मात् कस्मादपि जनात् जीवात् वा। यो जनः सत्यं वदति, तस्य मनसि नैव छललोभस्य वा स्थानं लेशमात्रमपि दरीदृश्यते। ईदृशः जनः नैव कदापि अनुचितं आचरति।

वस्तुतः धर्मस्य मूलमपि सत्यमेव अस्ति। भारतवर्षस्य तु राष्ट्रचिह्न अपि 'सत्यमेव जयते' स्वीकृतम्। अतः अस्माकं संविधाननिर्मातृभिः विद्वद्भिः सत्यस्य महत्ता स्वीकृता। अनेनैव शिक्षायाः समाप्त्यनन्तरं आचार्योऽपि शिष्याय सत्यसंभाषणस्य उपदेशं ददाति।

अस्य सम्पूर्णस्य संसारस्य अस्तित्वमपि वस्तुतः केषाञ्चिदेव सत्यवादीजनानाम् सत्याचरणे वर्तते। अन्यथा यदि सर्वे जनाः दुष्टाः असत्यवादिनः च भवेयुः, तर्हि जगत् एतत् नष्टं भवेत्। अतः अस्माभिः सदैव सत्यसम्भाषणं कर्तव्यम्।

सत्यस्य आचरणेन वै समाजस्य राष्ट्रस्य वा अस्माकं कल्याणं भविष्यति। 'सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्' इति कथ्यते शास्त्रविद्भिः जनः।

किन्तु विषयेऽस्मिन् एतदपि अवधारणीयम्, यत् सत्यं अप्रियं न वक्तव्यम्। अनेन यः शृणोति सः आहतो भवति, क्लेशञ्च,, प्राप्नोति। अतः शास्त्रेषु कथितम् –

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् नब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

प्रियं च नानृतं ब्रूयात्, एष धर्म सनातनः।।

अद्य तु प्रायः दृश्यते यत् बहवः जनाः सत्यभाषणात् विमुखाः सञ्जाः। अधिकसंख्याकानां जनानां प्रवृत्तिः असत्ये प्रतिष्ठिता दरीदृश्यते? किन्तु नैव एतत् सर्वं शुभं वर्तते। यदि वयं स्वराष्ट्रस्य, देशस्य समाजस्य स्वस्य वा उन्नतिं कर्तुं वाञ्छामः, तर्हि सदैव सत्यभाषणं कर्तव्यम्, अनेन समाजे एकस्य स्वस्थवातावरणस्य निर्माणं भविष्यति।

भारतीया संस्कृतिः

आदित्य कुमार मिश्रः

स्नातक तृतीयवर्षः

सम् उपसर्गपूर्वकात् कृ धातोः क्तिन प्रत्ययेन संस्कृतिः शब्दो निष्पद्यते। देशस्य राष्ट्रस्य वा जनैः योऽपि व्यवहारः, आचारो वा क्रियते तत् तस्य देशस्य संस्कृतिः कथ्यते।

अस्माकम् अतीव प्राचीनः राष्ट्रः अस्ति। अतः अस्माकम् संस्कृतिः अपि अतीव प्राचीना अस्ति। संस्कृतिः राष्ट्रस्य आत्मा भवति। भारतीय संस्कृतेः वैशिष्ट्यम् तदैव यत् अनेकैः वैदेशिकैः अस्याः विनाशाय प्रयत्नम् कृतम्, किन्तु नैवेषा विनष्टा, अपितु अद्यापि अक्षुण्णा एव दृश्यते।

वस्तुतः अस्यां संस्कृतौ ईदृशानि महत्त्वपूर्णानि तत्त्वानि सन्ति कानिचित्, यैरेषा दीर्घकालः अनन्तरमपि अद्य सर्वोत्कृष्टता अक्षुण्णतां च भजते। अतः अस्याः सम्यक् अस्माभिः संस्कृतसाहित्यस्य अध्ययनम् अपेक्षितम् वर्तते।

संस्कृतभाषायां निबद्धं काव्यम् भारतीय-संस्कृते उदात्तरूपम् प्रख्यापयति। अतः संस्कृतेः तत्त्वानि संस्कृत-वाङ्मये निबद्धानि सन्ति। तनैव उच्यते– "संस्कृतिः संस्कृताश्रिता"।

भारतवर्षस्य प्रतिग्रामेऽस्याः स्वरूपम् द्रष्टुं शक्यते। वस्तुतः अद्यापि वयं स्वसंस्कृतिं प्रति महत्गौरवम् अनुभवामः। अस्या मूलाधारा ज्ञान-विज्ञान–आगार स्वरूपाः वेदाः सन्ति। वेदाः अखिल विश्वस्य भूमण्डलस्य वा प्राचीनतमानि पुस्तकानि सन्ति। अनेनैव संस्कृति एषा विश्वसंस्कृतिषु प्राचीनतमा अस्ति। ऋग्वेदे वर्णितम् :- " सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा "

वस्तुतः इयं संस्कृतिः लोकमंगलकारी विश्वबन्धुत्व भावनया च परिपूरिता दृश्यते। अहिंसा अस्याः मूलमन्त्रः एव अस्ति। परोपकार भावनापूरिता च विद्यते। "कर्मानुसारेणैव पुनर्जन्म भवति" सिद्धान्ते अस्मिन् अस्याः संस्कृतेः महती आस्था दृश्यते। समन्वयभावना अस्याः महत् वैशिष्ट्यम्। विदेशेभ्यः आगताः बहवाः जातयः अत्र आगत्य अनया सह सम्मील्य एकीभूताः सञ्जाताः।

वर्णाश्रम व्यवस्था अपि अस्या एका अन्या मौलिकी महत्त्वपूर्णं च विशेषता, अनया व्यवस्थया भारतीयसमाजः चतुर्षु वर्णेषु विभक्तः:- ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्राः इति।

अस्याः व्यवस्थायाः उद्देश्यम् यत् समाजे विविधेषु कार्येषु सौख्यं स्यात्। प्रारम्भे व्यवस्थैषा कर्माधारिता आसीत्, किन्तु अद्यत्वे जन्माधारिता सञ्जाता। मानवस्य सर्वांगीणत्वेन विकासो भवेत् इति आश्रमव्यवस्थायाः उद्देश्यम् आसीत्। आश्रमव्यवस्थायाम् जीवनं चतुर्भागेषु विभक्तं कृतम् आसीत् ब्रह्मचर्यम् गृहस्थः वानप्रस्थः सन्यासश्च। भारतीया संस्कृतिः कृषिप्रधाना संस्कृतिः, अस्यां संस्कृतौ कृषेः अतीव महत्त्वम् अस्ति। अत्र गोः गंगायाः च वैशिष्टयं महत्त्वम् अपि च परिदृश्यते। अत्र तीर्थानां देवानां च वन्दनं भवति।

अस्यां संस्कृतौ ये जनाः निवसन्ति, ते सर्वे परमं संतोषम् अनुभवन्ति।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" इति भावनया इयं संस्कृतिः ओतप्रोता च परिदृश्यते।

मानवतायाः अत्र पूजा भवति। अस्याः मूलमन्त्रः एषोऽस्ति–

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥"

अतः उच्चजीवनयापने प्रतिपदं संस्काराणां महत्त्वम् अस्ति।

नारी सशक्तिकरणम्

कुमारादर्शः
स्नातक प्रथमवर्षः

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण विद्यारूपेण दयारूपेण भावरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः!

कथमस्ति आवश्यकता नारी सशक्तिकरणस्य? किं सा अबला अस्ति, दुर्बला अस्ति निर्बला अस्ति वा? अरे! नारी तु जननी भवति, सा जन्मं ददाति. यया एकस्य नूतनस्य जीवनस्य प्रादुर्भावः भूयते!

सा कथमस्ति अबला निर्बला दुर्बला च?

पाठकाः!

किंचित् दिवसपूर्वमेव वयं नवरात्रिं मन्यामहे स्म, यस्मिन् काले वयं देवीनाम् स्तुतिं कुर्मः, अर्थात् नारी तु अस्माकं समाजे पूज्यनीया अस्ति!

" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताःयत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः" – मनुस्मृति

इयमस्ति अस्माकं विचारधारा। तथापि कथमस्ति आवश्यकता नारी सशक्तिकरणस्य?

यदि वयं कल्पनां कुर्मः ब्रह्मदेवस्य संसदि तर्हि महत्वपूर्णाः विभागाः कुत्र सन्ति?

शिक्षामंत्रालयः कस्याः समीपे अस्ति? मातुः सरस्वत्याः समीपे। वित्तमंत्रालयः कस्याः समीपे अस्ति? मातुः लक्ष्म्याः समीपे। रक्षामंत्रालयः कस्याः समीपे अस्ति? मातुः दुर्गायाः समीपे।

अर्थात् अस्माकं धर्मेषु वा समयेषु नारी असशक्ताः नासन्। प्रमुखेषु पदेषु महिलाः राजन्ते शोभन्ते च।

विश्वस्य इतिहासेषु प्रथमा महिला न्यायधीशा का? सासीत् भारतीमिश्रः।

अद्वैतवेदान्तस्य प्रणेताः शिरोमणयः शंकर्याचार्यमहाभागाः यदा बिहारे श्रीमंडनमिश्रेण सह शास्त्रार्थं कर्तुमागतवान् तदा तस्मिन् शास्त्रार्थे मंडनमिश्रस्य पत्नीः स्थापितासीत् न्यायधीशरूपेण!

यदि वर्तमानकाले पश्यामः तर्हि अति सौभाग्यस्य वार्तास्ति इयम् यत् अधुना भारतस्य राष्ट्रपतेः पद्यपि एका महिला विराजते, सास्ति अस्माकं प्रथमा नागरिकी श्रीमति द्रौपदीमुर्मुः।

न केवलं अत्रापि तु वित्तमंत्रालयस्य संचालनमपि एका महिला करोति, सास्ति श्रीमति निर्मलासीतारमणः। इदं अस्ति नारी सशक्तिकरणस्य उदाहरणं। भारतस्य इतिहासेषु प्रथमवारं संसदि अष्टसप्ततिः महिलाः प्रतिनिधयः सन्ति च भारतस्य विकासे योगदानं ददति।

दिल्लीविश्वविद्यालय अनेकेषु महाविद्यालयेषु महिलाः प्राचार्याः सन्त्यधुना। इतिहासे यदा राष्ट्रं आवश्यकतासीत् तर्हि समक्षे आगत्य महारानीलक्ष्मीबाई, रानीचिन्नमा, अहिल्याबाईहोलकरः इत्यादयः मातुः भारतेः सेवां कृतवन्तः।

मैत्रेयी गार्गी अपाला च तु मन्त्रद्रष्टारः आसन्।

अस्माकं कल्पनाचावला संतोषयादव सुनिताविलियम्स च वर्जनानां भेदनं कृत्वा अंतरिक्षे हिमालये च गत्वत्यः ।

राजनीतिषु सुषमास्वराजः, इंदिरागान्धिः प्रतिभापाटिलः सरोजिनीनायडु स्मृतिईरानी चास्माकं गौरवाः।

इदमस्ति स्वर्णिमं मधुरं सुन्दरम् च चित्रं किन्तु आगच्छन्तु पश्यामः अन्येऽस्मिन् पक्षे अपि।

अस्मिन्नेव देशे यत्र नार्यः पूजनीयाः सन्ति ताभिः सह प्रतिदिनं दुष्कर्माणि जायन्ते, ताः न केवलं असुरक्षिताः सन्ति मार्गे वा समाजे अपितु मातुः गर्भे अपि ताः सुरक्षिताः न सन्ति।

कियत् विडम्बना एषा यत् मंदिरेषु प्रस्तरस्यमूर्तिनां पूजनं भवति समाजे भ्रूणहत्वा इव जघन्यकर्माणि भवन्ति।

किमर्थः अस्य प्रकारस्य पूजनस्य?

सर्वकारेण अधुना ग्रामेषु महिलाप्रधानाः भवन्ति किन्तु ताः केवलं नाममात्रस्य कृते, अधुनापि सर्वं कार्यं तासां पतिभिः क्रियते। शिक्षायां अपि बालकबालिकयोः द्वयोः भेदभावं भवन्ति। अधुना पर्यन्तमपि संसदि महिलाः त्रयस्त्रिंशत् आरक्षणं न लब्धवत्यः।

अरे! अस्मिन् काले तु पुरुषस्त्रियोः द्वयोः कोऽपि भेदः नास्ति। महिलाधुना न केवलं गृहे कार्यं करोति अपितु बहिरगत्वा राष्ट्रस्य

संचालनमपि करोति चाधुना ते अशक्ताः नापितु सशक्ताः सन्ति।

अस्माकं जनसंख्यासु ताः अर्धाः सन्ति, ताः परित्यज्य यदि चिन्तयन्ति यत् भारतं स्वर्णखगं महाशक्तिः आत्मनिर्भरं च पुनः भविष्यति तर्हि इदम् तु केवलं मनोहरं स्वप्नमात्रमेव !

अन्ते अहं कथयितुमिच्छामि यत् नार्यः अस्माकं आधारस्तंभाः यतोहि सीतां विना रामः अपूर्णः, राधां विना कृष्णः अपूर्णः, लक्ष्मीं विना नारायणः अपूर्णः पार्वतीं विना परमेश्वरः अपूर्णश्च।

अतः नारीणां उत्थानं विना समाजस्य उत्थानं भवितुं न शक्यते!

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

भुवन विक्रमः
स्नातक तृतीयवर्षः

अतीव साधारण परिवारे जन्म लब्ध्वा अपि मानवः राष्ट्रस्य सर्वोत्तम नायकः भवितुं शक्नोति। एतस्य उदाहरणं भारतस्य पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी महोदयः अस्ति। सः महोदयः निर्धन परिवारे 1926 तमे वर्षे जातः। तस्य जन्मस्थानं मध्यप्रदेशस्य ग्वालियरजनपदे अस्ति। तस्य पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी उत्तर प्रदेशस्य आगरा जनपदे कस्यचिद् विद्यालयस्य शिक्षकः आसीत्। यथा विद्यालये अनुशासनम् तथैव गृहे अपि अनुशासनम् आसीत्। महोदयस्य पिता कविः अपि आसीत्। अटलबिहारी वाजपेयी महोदयः अनुशासनत्वं कवित्वं च पितुः सकाशात् एव प्राप्तवान्। अध्ययने अपि अटलः कुशलः। प्रतिवर्षम् अपि उत्तमान् अंकान् प्राप्य उत्तीर्णतां प्राप्तवान्। बाल्यकालतः एव राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघस्य सेवकः आसीत्। 1942 तमे वर्षे भारत छोड़ो आंदोलने भागं स्वीकृत्य कारागृह गतवान्। अनन्तरं संघस्य प्रचारकः अभवत्। साहित्य- कौशलकारणतः 'राष्ट्रधर्म' पत्रिकायाः सम्पादनं कृतवान्। यदा 'पाञ्चजन्य' पत्रिका आरब्धा तदा तस्याः आद्य सम्पादकः अपि सः एव। श्रीमतः श्यामाप्रसादमुखर्जी महोदयस्य निर्देशेन सः स्वकीयं राजनैतिक जीवनम् आरब्धवान्। 1957 तम वर्षारभ्य वाजपेयी संसद जीवनस्य आरम्भं कृतवान्। आकर्षक वक्तृत्व क्षमतया सः सर्वेषां प्रीतिपात्रम् अभवत्। विदेशनीतिविषये संसदि तस्य भाषणं तु प्रसिद्धम् एव। पंडित नेहरू महोदयः अपि तस्य भाषणस्य प्रसंशां कृतवान् आसीत्। तस्य प्रशन्सायाम् नेहरूमहाभागः उक्तवान् "धन्या सा माता या अटल बिहारी वाजपेयीनं प्रसूतवती आपातकालानन्तरं यदा जनता दलैः शासनम् रचितं तदा अटलमहोदयः विदेशमंत्री अभवत्। अनन्तरं भारतस्य प्रधानमंत्रीपदं प्राप्तवान्। इदानीं भ्रष्टराजनीतौ अपि यथा कमलपुष्प जलतः उपरि भवति तथैव अटलबिहारी वाजपेयी महोदयः राजनीतौ निर्लिप्तः आसीत्। सः महोदयः देशस्य सर्वोत्तमं पुरस्कारं प्राप्तवन्।

सुविचाराः

शिवानी
स्नातक प्रथमवर्षः

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।1।

बलवानप्यशक्तोऽसौ धनवानपि निर्धनः।
श्रुतवानपि मूर्खोऽसौ यो धर्मविमुखो जनः।।2।

जाडयं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।3।

चन्दनं शीतलं लोके, चन्दनादपि चन्द्रमाः।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतलता साधुसंगतिः।।4।

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव. कुटुम्बकम्।।5।

अहिंसा परमो धर्मः

खुशी
स्नातक तृतीयवर्षः

अहिंसायाः स्वरूपम् — हिंसनं हिंसेति। प्राणिनां शारीरं मानसं वा परिपीडनं हिंसेति। त्रिविधा हि हिंसा मनसा वाचा कर्मणा च। न प्राणिवध एवं हिंसा, अपितु मनसा परापकृतिचिन्तनम् वाचा कटुवाक्यप्रयोगोऽपि हिंसेव परिगण्यते। सर्वविध परित्याग एवाहिंसेति।

अहिंसाया धर्मसाधनत्वम्- विविध वाद-विवाद-विपतिले लोके अहिंसाया महत्त्वविषये सर्वेषां निगमागमानाम् ऐकमत्यम्। अतएव मुनिना मनुना अहिंसायाः महत्त्वम् उपस्थाप्यते।अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः। महर्षिणा पतञ्जलिना योगदर्शने यमं व्याख्यायमानेन अहिंसायाः प्राधान्यं निरूप्यते यत्-

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः। यमानां महत्त्वं वर्णयता पतञ्जलिना तेषां सार्वभौमहाव्रतत्वम् उद्घोषितम्- 'जातिदेशकालसमवानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम्' (योग० २-३१) अहिसैव विश्वस्मिन् जगति शान्तिसंदात्री, अभ्युदयसाधनी, गुणोत्कारिणी, सच्चारित्र्यमूला, धर्माभिवृद्धिहेतुः भवति।

अहिंसाया उपयोगिता-अहिंसाया जीवनोपयोगित्व प्राचीन ऋषिभिर्महर्षिभिः शास्त्रकारैश्च तस्योपादेयत्वम् उद्घोष्यते। न केवलं वेदादिषु, जैन-बौद्धमेवापि, अहिंसाया अनिवार्यत्वम् उपदिश्यते। यजुर्वेदे मित्रत्वेन सर्वप्राणिहितसाधनं स्नेहव्यापारश्चादिश्यते। तद्यथा-

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य वा समीक्षामहे।।

प्रेमभावनया एव राष्ट्रहितं विश्वहितं च संपादयितुं शक्यते। अतएव गीता- यामपि देवीसम्पद्वर्णने भगवता कृष्णेन तत्र अहिंसागुणोऽपि प्राधान्येन समाविश्यते।

अहिंसा सत्यमकोषस्त्यामः शान्तिरशुनम्। दया भूतेष्वलोलुपत्वं मार्दवं हीरचापलम् ॥

देवी सम्पदि न केवलम् अहिंसाया एवोपादानम्, अपि तु तद्व्याख्यान- रूपेण दया भूतेषु' इत्यनेन प्राणिमात्रे सदवत्वं समुच्यते। भगवान् बुद्धोऽपि अहिंसाया कारणेनैव आर्यत्वम् उद्घोषयति न हि जातु हिंसाश्रयणेन।न तेन अरियो होति येन पानानि हिसति। अहिंसा सम्बपणानं बरियोति पपुष्यति।

भगवता मनुनाऽहिंसाया उपयोगित्वं प्रति- पादयता निगद्यते यद् अहिसयैव मानवः सर्वमपि कार्य साध्यम्। मधुरया वाचा यथा कार्यसिद्धिः संभाव्यते, न तथा प्रकारान्तरेण। वाक् चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता। मनु० २- १५९ न केवलमेतदेव, अपि तु आपद्यपि कटुभाषणं परद्रोहवृत्तित्वं च निषिध्यते। न च तादृशी वाक् प्रयोक्तव्या यया जन उद्विजेत। नायन्यः स्यादातऽपि न परद्रोहकर्मधीः।ययाऽस्योद्विजते वाचा नालोक्यां तामुदीरयेत् ॥

अतएव पतञ्जलिना योगदर्शने समस्यते यत्- 'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्संनिधौ वैरत्यागः। यत्रेव अहिंसायाः प्रतिष्ठा न केवलं मानवेषु अपितु तिर्यग्योनिष्यपि अहिंसावृत्तित्वं अवलोक्यते। अतएव पुरा महर्षीणाम् आश्रमेषु हिंस्रेषु सिंहादिष्वपि हिंसावृत्तिः परित्यागोपलक्ष्यते।

अहिंसया विश्वबन्धुत्वम् अहिंसा स गुणो येन विश्वबन्धुत्वं विश्वप्रेम विश्वहितसाधनं च संभाव्यते। अहिसैव धर्मं मार्गः। अहिसायाः परिपालनार्थं- मेव भगवान् बुद्धः, भगवान् महावीरः महर्षिर्दयानन्दः, महात्मा गांधिश्च स्वजीवनं समर्पयामासुः। अहिंसा प्रचारे एवैतेषां जीवनं व्यतीयाय। अहिंसा- शस्त्रेणैव महात्मा गांधिः भारतवर्षं स्वाधीनताम् अलम्भयत्। अहिंसाश्रयेणेव महर्षि दयानन्दो विषप्रदं ब्राह्मणं जगन्नाथम् अमुञ्चत। अहिंसायाः महत्त्वम्-अहिंसायाः गौरवम् अवलोक्यैव मनुना प्रतिपाद्यते यत् स्वसुखसाधनाय न प्राणिवधम् आचरेत्। हिसको नेह न चामुत्र सुखम् अयनुते।

न हिस्यात् सर्वभूतानि एतदवचनमपि पूर्वाभिप्रायात्मकम्। हिंसया मानवे क्रूरत्वं निर्दयत्वं निर्गुणत्वं सद्भावहीनत्वं च संजायते।

अहिंसयेव सद- यत्वं सौजन्यं सद्भावसमवेतत्वं च संलक्ष्यते। अहिंसयैव स्वोन्नतिः परोन्नतिः राष्ट्रहितं विवहितं च संभाव्यते।

अतएवोच्यते-अहिंसा परमो धर्मः।

महिला सशक्तिकरणम्

आर्यनः
स्नातक तृतीयवर्षः

प्राचीनयुगात् अस्माकं समाजे स्त्रीणां विशिष्टं स्थानं वर्तते। यथा ऋग्वैदिककालेषु लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, आपला एवं विश्वारा इति विदूषी स्त्रीणां वर्णनं विद्यते। अस्मासु पौराणिक ग्रंथेषु उक्तं - "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" ताथापि व्यंगम् इदं दृश्यताम् नारीणां सशक्तिकरणस्य आवश्यकता अनुभूयते। स्त्रियः एव मानववर्गस्य अस्तित्व भूता इति मन्यते। सरलशब्देषु महिला सशक्तिकरणं परिभाषितं कर्त्तु शक्यते। स्वजीवने निर्णय ग्रहणस्य या शक्ति नारीषु वर्तते, तस्याः शक्तेः बोधः उपयोगश्च नारी कुर्यात्।। अस्माकं समाजः न केवल पुरुषाणां, किन्तु नारीणामपि अस्ति। अतः सुसंस्कृते समाजे पुरुषाणां शिक्षा आवश्यकी अस्ति तथा स्त्रीणामपि। स्त्रीणाम् समाजे स्थान समानरूपेणास्ति। समाजस्य द्वे चक्रे स्तः। यथा एकेन चक्रेण रथस्य गतिः असंभवा, तथा जीवनस्य गति नारीणाम् विना असंभवा। अशिक्षिता नारी संसाररथ कथं चालयति। अतः स्त्रीशिक्षा अतीवावश्यकी।

स्त्रीशिक्षायाः आवश्यकता

सोनू
स्नातक तृतीयवर्षः

शिक्षा मनुष्ये स्वकर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानमादधाति। शिक्षयैव जनाः शुभं कर्म कुर्वन्ति, अशुभं च परित्यजन्ति। शिक्षिता एव जनाः देशसेवां राष्ट्ररक्षां राष्ट्रसंचालनं पठनं पाठनं विज्ञानोन्नतिं च कुर्वन्ति। यथा पुरुषेभ्यः शिक्षा श्रेयस्करी वर्तते, तथैव स्त्रीभ्योऽपि शिक्षायाः महती आवश्यकता वर्तते।

स्त्रीणां कृते शिक्षाया महती आवश्यकता एतस्मात् कारणाद् वर्तते यत् ता एव समये प्राप्ते मातरो भवन्ति। यथा मातरो भवन्ति, तथैव सन्ततिर्भवति। यदि मातरोऽशिक्षिताः विद्याशून्याः कर्तव्यज्ञानहीनाश्च सन्ति, तर्हि पुत्राः पुत्र्यश्च तथैवाविद्याग्रस्ताः कुशलतारहिताश्च भविष्यन्ति। यदि नार्यः शिक्षिताः सन्ति, तर्हि ताः स्वपुत्राणां पालनं रक्षणं शिक्षणादिकं च सम्यक्तया करिष्यन्ति, एवं तासां सन्ततिः विद्यायुक्ता हृष्टा पुष्टा सद्गुणोपेता च भविष्यति। अतएव महानिर्वाणतन्त्रेऽप्युक्तमस्ति —

कन्याऽप्येवं लालनीया, शिक्षणीया प्रयत्नतः ॥१॥

विवाहे संजाते कन्याः गृहस्थाश्रमं प्रविशन्ति। यदि पुरुषो विद्वान् स्त्री च विद्याशून्या भवति तर्हि तयोः दाम्पत्यजीवनं सुखकरं न भवति। विद्याया अभावात् स्त्री स्वकीयं कर्तव्यं न जानाति, अतएव बहवो रोगा व्याधयश्च तत्र स्थानं कुर्वन्ति। अतः स्त्रीणामपि शिक्षा पुत्राणां शिक्षावदेव आवश्यकी वर्तते। स्त्रियो मातृशक्तेः प्रतीकभूताः सन्ति, अतस्तासां सदा सम्मानः करणीयः। यस्मिन् देशे समाजे च स्त्रीणामादरो भवति, स देशः समाजश्चोन्नतिं प्राप्नुतः। उक्तं च मनुना-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ॥२॥

बालिकानां शिक्षा बालकैः सहैव स्यात्, पृथग् वा, इत्येष विषयः साम्प्रतं यावद् विवादास्पदमेवास्ति। स्त्रीशिक्षाया भारते प्रथमं बहुविरोधोऽभवत्। साम्प्रतं स समाप्तप्राय एव।

स्त्रीणां शिक्षाऽद्यत्वे विशेषतो लाभप्रदा विद्यते, यथा ताः गृहकर्मप्रवीणाः कुलाङ्गनाः सत्यः पतिव्रताः साध्व्यो विदुष्यो मातरश्च भवन्ति।

देशस्य समाजस्य चोन्नत्यै श्रीवृद्धये च स्त्रीशिक्षाऽत्यावश्यकी वर्तते।

राजनीतौ नारी-संघर्षः

नेहा तिवारी
स्नातक तृतीयवर्षः

सम्पूर्ण विश्वे राजनैतिक व्यवस्था अतीव जटिला। मृदुप्रकृतीनां महिलानां सहभागिता सम्पूर्णे विश्वे न्यूना अस्ति। राजनीतौ सहभागिता न केवलं भारते अपितु सम्पूर्णे विश्वे अपवादः अस्ति। अस्माकं राष्ट्रस्य जनसंख्यायाः अर्धभागः महिलाः सन्ति। ५० प्रतिशतं जनसङ्ख्या महिलानां अस्ति। तदपि अस्माकं राष्ट्रस्य राजनीतौ संसदि च महिलानां स्थितिः उत्तमा नास्ति अद्यत्वे अपि संसदे महिलानां कृते ३३ प्रतिशतं आरक्षणं वर्तते। महात्मा गान्धी उक्तवान् यत् यदि भवान् कस्यचित् राष्ट्रस्य स्थितिं ज्ञातुम् इच्छति तर्हि महिलानां स्थितिं पश्यन्तु। ग्रामपञ्चायतेषु महिलाः सक्रियताम् अवाप्तवन्तः, परन्तु नियुक्तिः केवलं नाममात्रस्य कृते एव, कोऽपि विशेषनिर्णयः तेषां पत्युः कस्यचित् पुरुषस्य वा भवति।

राजनीतौ स्त्रिणां स्थितिः पुरुषाणाम् अपेक्षया न्यूना भवति। नारीसङ्घर्षः न केवलं भारते अपितु समग्रे विश्वे अपि राजनीतिषु दृश्यते। राजनीतिषु महिलानां एतादृशी स्थितेः कारणं न केवलं राजनैतिकदलानि अपितु अस्माकं समाजः अपि अस्ति। अद्यत्वेऽपि बहवः जनाः स्त्रीः राजनैतिकक्षेत्रे न स्वीकुर्वन्ति। यदा कश्चन बालिका अस्माकं क्षेत्रे राजनीतिं प्रविष्टुम् इच्छति तदा तस्याः मित्राणि, परिवारजनाः, बन्धुजनाः, समाजः तां न स्वीकुर्वन्ति, न च समर्थयन्ति। परन्तु एतावता कठिनतायाः अनन्तरम् अपि सुष्मास्वराजः, निर्मला सीतारमणः, स्मृति इराणी अस्माकं सम्मुखे एकं दृढं उदाहरणं प्रस्तोतयन्ति। यदि संविधानस्य सम्यक् अनुसरणं भवेत् तर्हि महिलानां शिक्षायाः प्रवर्धनं अपि भविष्यति, तासां अधिकाराणां रक्षणं च। तदैव विकासः सम्भवति।

मम महाविद्यालयः

ॐकारनाथ झाः
स्नातक प्रथमवर्षः

आलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम्।।

अस्माकं हंसराजमहाविद्यालयः २०२३-२४ यावत् वार्षिकपत्रिकां प्रकाशयति इति अस्माकं कृते आनन्दस्य विषयः अस्ति। वार्षिकपत्रिका महाविद्यालयस्य विविधक्रियाणां दर्पणम् भवति। महाविद्यालयेऽस्मिन् केवलं शिक्षणकार्यं न भवति, अपितु बालकानां सर्वांगीणविकासाय वर्षपर्यन्तं बहुनि कार्याणि निरन्तरं प्रचलन्ति। अस्याः पत्रिकायाः माध्यमेन भवन्तः पाठकाः ज्ञास्यन्ति यत् महाविद्यालये विविधकौशलविकासाय प्रतिसप्ताहं विविधाः कार्यक्रमाः, क्रीडाः, विविधाः स्पर्धाः च आयोज्यन्ते। यस्मिन् छात्राः भागं गृह्णन्ति, स्वप्रतिभां वर्धयन्ति च। अन्ततोगत्वा मम विश्वासः अस्ति यत् भविष्ये अस्माकं सहपाठिनः विविधकौशलेन पूर्णाः देशभक्ताः नागरिकाः भविष्यन्ति, समाजस्य देशस्य च विकासाय यथाशक्ति सक्रियरूपेण योगदानं दत्वा स्वस्य मानवजीवनं सफलं करिष्यन्ति।

~ इति शिवसंकल्पमसतु~

सदाचारः

सुशान्त पुष्पाकरः
स्नातक तृतीयवर्षः

(आचारः परमो धर्मः / आचारस्य महत्त्वम्)

अस्माकं भारतीया संस्कृतिः आचार-प्रधाना अस्ति। आचारः द्विविधः भवति-दुराचारः सदाचारः च। सताम् आचारः सदाचारः इत्युच्यते। सज्जनाः विद्वांसो च यथा आचरन्ति तथैव आचरणं सदाचारो भवति। सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टतापूर्वकं व्यवहारं कुर्वन्ति। ते सत्यं वदन्ति, मातुः पितुः गुरुजनानां वृद्धानां ज्येष्ठानां च आदरं कुर्वन्ति तेषाम् आज्ञां पालयन्ति, सत्कर्मणि प्रवृत्ता भवन्ति।

जनस्य समाजस्य राष्ट्रस्य च उन्नत्यै सदाचारस्य महती आवश्यकता वर्तते। सदाचारस्याभ्यासो बाल्यकालादेव भवति। सदाचारेण नरः धार्मिकः, शिष्टो विनीतो बुद्धिमान् च भवति। संसारे सदाचारस्यैव महत्त्वं दृश्यते। ये सदाचारिणः भवन्ति, ते एव सर्वत्र आदरं लभन्ते यस्मिन् देशे जनाः सदाचारिणो भवन्ति तस्यैव सर्वतः उन्नतिर्भवति। अतएव महर्षिभिः “आचारः परमो धर्मः” इत्युच्यते। सदाचारी जनः परदारेषु मातृवत्, परधनेषु लोष्ठवत्, सर्वभूतेषु च आत्मवत् पश्यति। सदाचारीजनस्य शीलम् एव परमं भूषणम् अस्ति।

व्यायामः

जयदीपः
स्नातक तृतीयवर्षः

एतत् कथ्यते शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्’। स्वस्थशरीरेण एव धर्माचरणं कर्तुं समर्थः नरः। स्वस्थशरीरं कथम् प्राप्यते। अस्य स्वास्थ्यस्य अनेकानि साधनानि सन्ति। तेषु ‘व्यायाम’ इति महत्त्वपूर्णं साधनमस्ति।

यदि मनुष्यः दीर्घायुः वाञ्छति, तर्हि तेन नियमित व्यायामः करणीयः। स्वास्थ्य- रक्षायै व्यायामः अतीव आवश्यकः अस्ति। नियमित व्यायामनैव शरीरं नीरोगं जायते।

व्यायामस्य अनेके लाभाः सन्ति। अनेन बलं वर्धते, शरीरस्य सर्वेषां अंगानां विकासो भवति, तथा शरीरे रुधिर- संचारः सम्यक् भवति। प्रातःकाले वायुः प्रदूषणरहितो भवति। अतः प्रतिदिनं व्यायामेन शुद्धवायुं लभते। प्रातःकाले वातावरणमपि उत्साहवर्धकम् भवति। अतः प्रातःकाले एव व्यायामः करणीयः। व्यायामः गृहे न कर्तव्यः। सदैव क्रीडा स्थाने, उद्याने वा करणीयः। नियमित व्यायामेन शरीरे रोगाः न उद्भवन्ति। शरीरस्य रोगेभ्यः रक्षणाय व्यायामः आवश्यकः।

यथा व्यायामः आवश्यकः तथा उचित आहार सेवनमपि आवश्यकम्। व्यायामेन क्षुधावर्धनं भवति, किन्तु उचितं भोजनमेव सेवितव्यम्। चरकसंहिताया कथितम् ‘न अदेशे, न अकाले, न प्रतिकूलोपहित, न पर्युषितम् अन्नं सेवितव्यम्।’ यदि आहारः उचितो नास्ति तर्हि व्यायामस्य किम् उपयोगः अतः मानवेन सर्वान् स्वास्थ्यनियमान् पालनीयाः। स्वस्थशरीरस्य द्वे प्रमुखे साधने स्तः। उचितः व्यायामः, श्रेष्ठं भोजनम्। रुग्णः मानवः किमपि कार्यं कर्तुं असमर्थः। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष एते चत्वाराः पुरुषार्थाः। तेषां प्राप्त्यर्थम् शरीरस्य स्वास्थ्यं आवश्यकम्। स्वस्थे शरीरे स्वस्थ आत्मा निवसति इति मन्यते।

आरोग्यशालिनां जीवनम् आनन्ददायकं भवति। ये जनाः दीर्घजीवनं, स्वस्थजीवनं वाञ्छन्ति तैः व्यायामः अवश्यमेव करणीयः। एतदेव अन्ते कथनम्।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

अनंत पाण्डेय:
स्नातक तृतीयवर्ष:

वर्गचतुष्टयस्य प्राप्तिरेव मानवजीवनस्य लक्ष्यम्। धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्। रुग्णो मानवः किमपि कार्य कर्त्तुं समर्थो न भवति। स्वस्थो मानवः एवं धर्माचरणम् सम्पादयितुं समर्थः शिवप्राप्त्यर्थम् मृणालि-कापेलव स्वाङ्गं कठोरतपसा अहर्निशं ग्लपयन्ती पार्वतीम् ब्रह्मचारिवेशस्थितः शिवः कथयति—

अपि क्रियार्थ सुलभं समित्कुश, जलान्यपि स्नानविधि क्षमाणि ते अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे, शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।।

यदि मानवस्य शरीरम् स्वस्थम् नास्ति तदा महत्याम् समीहायाम् सत्यामपि सः किमपि कर्तुम् न शक्नोति। ऋते शरीरात् परोपकारत्यागदानादिधर्मकार्याणि अपि न सम्भवानि दुःखार्त्तानां सेवायाः तु का कथा सर्वारम्भत्यागी निरासक्तः मुनिरपि स्वशरीररक्षणार्थमेव आहारस्योपयोगं करोति। धनपालकृत तिलक- मञ्जरीग्रन्थे इदं वर्णनमस्ति यत् पुत्रहीनो चिन्ताग्रस्तो नृपमेधवाहनो पदा एकस्मै मुनये सर्वस्वं दातुमिच्छति तदा मुनिः कथयति अस्माकं राज्येन धनेन वा किं प्रयोजनम् यतो हि "ये च सर्वप्राणिसाधारणमाहारमपि शरीरवृत्तये गृह्णन्ति, शरीरमपि धर्मसाधनमिति धारयन्ति। स्वस्थशरीराय युक्ताहारविहारस्य अत्यावश्यकता भवति।

यजुर्वेदभाष्ये श्रीदयानन्देन कथितम् —

"ये प्रतिदिनमग्निहोत्रादिकं यज्ञे युक्ताहार विहारं च कुर्वन्ति तेऽरोगा भूत्वा दीर्घायुषो भवन्ति"

गीतायामपि उक्तम्-

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

शारीरमाद्यम् खलु धर्मसाधनम् इन्द्रियाणां संयमं विना शरीररक्षणं न सम्भवम् सद्वृत्तेन हि मानवः जितेन्द्रियः भवति

उक्तमपि चरकसंहितायां-

"तस्मादात्महितं चिकीर्षता सर्वेण सर्वं सर्गदा स्मृतिमास्थाय सद्वृत्तम- नुष्ठेयम् तद्धयनुतिष्ठन् युगपत् सम्पादयत्यद्वयमारोग्यमिन्द्रिय विजयश्चेति"। स्वस्थशरीराय युक्ताहारविहारेण सह योगाभ्यासस्य व्यायामस्य चापिआवश्यकता भवति।

किं बहुना आरोग्यमेव स्वास्थ्यमस्ति। स्वास्थ्यमेव च सर्वोत्तमं सुखम॥ स्वस्थः निर्धनोऽपि परिश्रमेण सुखीजीवनं जीवितुं धर्म चरितुं च समर्थः। परं रुग्णः धनवान् अपि दुःखी दरीदृश्यते। धनेन सः स्वस्वास्थ्यं क्रेतु न शक्यते। अतः शारीरिकोन्नतिः मानवस्य सर्वप्रथमं कर्त्तव्यमस्ति। स्वस्थः मानवः एव धर्माचरणे समर्थः भवत। स्वस्थशरीरं बिना साधनसम्पन्नोऽपि जनः धर्ममार्गे चलितुम् असफलो विद्यते अतः उचितमेव कथितम्- शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

शिवराजः

आदित्य अभिषेक:
स्नातक तृतीयवर्ष:

शिवराजः एकः आदर्शः राजा आसीत्। हिन्दूनाम् इतिहासे सः अद्वितीयो राजा बभूव। तस्य पराक्रमस्य कथाः शौर्यस्य गाथाः अद्यापि गीयन्ते।

शिवराजस्य जन्म शिवनेरी नाम दुर्गे अभवत्। अस्य पितुः नाम 'शहाजी, मातुः नाम 'जीजाबाई' आसीत्। जीजाबाई धर्मपरायाणा नारी आसीत्। सा स्वपुत्रं रामायण-महाभारतयोः गाथां श्रावयति स्म। शिवराजस्य पिता शहाजी बीजापुरराज्ञः सकाशात् कार्यं करोति स्म। शिवराजेन स्वगुरोः दादोजी कोंडदेव महोदयात् विद्या प्राप्ता। अल्पावस्थायाम् एव अश्वारोहणस्यापि शिक्षा प्राप्ता। तस्य सुहृदः

तानाजी, येसाजी प्रभृतयः वीरवन्तः आसन्। शिवराजेन एका विशाला सेना एकत्रीकृता। तेषां साहाय्येन तेन अनेके दुर्गाः विजिताः। शिवराजस्य पराक्रमं, तस्य बलं दृष्टवा मुगलनरेशः चिन्तितोऽभवत्। तेन प्रेषितः अफजलखाँ शिवाजीं हन्तुम्।। किन्तु शिवराजः तं व्याघ्रनखैः विदारितवान्।

शिवराजेन मुगलसाम्राज्यस्य विरोधः कृतः। मुघलनरेश औरंगजेबेन शिवराजः दिल्लीमाहूय कपटेन बन्दीकृतः। किन्तु कतिपय दिवसानन्तरं शिवराजः मिष्ठान्नस्य कण्डोले उपविश्य कारागृहात् निर्गतः।

अनन्तरं 'रायगढ़' स्थाने शिवराज्यस्य अभिषेकः अभवत्। अस्मिन्नवसरे तेन बहुधनं व्ययीकृतम्। तस्य तिस्त्रः राज्ञः आसन्। शिवराजस्य पुत्रः संभाजी अपि अतीव वीरः आसीत्। शिवराजस्य पश्चात् स एवं हिन्दूनां राजा बभूव।

शिवराजः सच्चरित्रः धार्मिकः च राजा आसीत्। एतादृशः महापुरुष भारतभूम्याः सुपुत्रः एतत् भाग्यं खलु।

वर्तमान युगे संगणकस्य/कम्प्यूटरस्य उपयोगिता

नैन्सी

स्नातक तृतीयवर्षः

कम्प्यूटर (Computer) शब्दः आंग्लभाषायाः गणनार्थकात् कम्प्यूट (Compute) शब्दाद् निष्पद्यते अतः कम्प्यूटरस्य कृते संगणक-शब्दः प्रयुज्यते आधुनिकेषु आविष्कारेषु कम्प्यूटरस्य विशिष्टं महत्त्वं वर्तते। वर्तमान युगः संगणक-युगः (Computer-age) इति निगद्यते। संगणकेन मानव-जीवने नवीना क्रान्तिः विहिता। संगणकस्य यादृशी तीव्रा प्रगतिः संलक्ष्यते, न तादृशी प्रगतिः अन्यस्याः कस्याः अपि क्रान्तेः संलक्ष्यते। प्रारम्भ-काले अस्य केवलं गणनाकार्ये प्रयोगः समभवत्, परन्तु साम्प्रतम् अस्योपयोगः प्रायः सर्वेषु कार्येषु अनिवार्यतां धत्ते। साम्प्रतं कम्प्यूटरस्य उपयोगो यन्त्राणाम् आकार-प्रकार-निर्धारणे, भवनानां निर्माण-प्रक्रियायाम्, ऋतुनिर्देशने, विमानादीनां दिशा-निर्देशने, रेल- विमानादिषु आरक्षणकार्ये, रोगाणां सूक्ष्म-परीक्षणे विश्लेषणे च, वैज्ञानिक-शोधकार्ये, वाणिज्य-व्यवसाये, वेतन-गणनायाम्, कार्यालय प्रबन्धने, भण्डागार व्यवस्थापने, कार्मिकानां वेतनादि-निर्धारणे विधीयते। एवमेव बीमा शेयर प्रभृतिषु उद्योगेषु, शिक्षाक्षेत्रे, मनोरञ्जन-विधौ, ललित-कला-कार्य-कलापे महत्त्वपूर्णा भूमिका वर्तते कम्प्यूटरस्य।

सर्वप्रथमं सांख्यिकी – कम्प्यूटरस्य निर्माणं पेनसिलवानिया विश्वविद्यालये १९४६ ईसवीये अभवन्। तदा एतस्य भारः त्रिंशत्-टन-परिमितम् आसीत्। साम्प्रतं कम्प्यूटरः अतिद्रुतगत्या विकासं कुर्वन् लोकस्य उपयोगितां साधयति। आकार-प्रकार-दृष्ट्या कार्यक्षमत चाश्रित्य कम्प्यूटरः चतुर्वर्गेषु विभाज्यते।

१. मेन फ्रेम-कम्प्यूटरः
२. मिनि कम्प्यूटरः
३. माइक्रो-कम्प्यूटरः
४. सुपर कम्प्यूटरः

१. मेन फ्रेम-कम्प्यूटरः एष संगणको महतीं क्षमतां धत्ते। अत्र अनेके जनाः कार्यं कर्तुं शक्नुवन्ति। एते संगणकाः उपकेन्द्रैः सह संयोजनेन माइक्रोवेव-माध्यमेन भू- उपग्रह-संचार-व्यवस्थायाम्, वायुयान आरक्षणे, रेलयान आरक्षणे च प्रयुज्यन्ते एते बहुमूल्याः भवन्ति।

२. मिनि कम्प्यूटरः एष मध्यमश्रेण्याः भवति। एते संगणकाः बीमा-बैंक- होटलादि-उद्योगेषु उपयुज्यन्ते।

3. माइक्रो कम्प्यूटरः - एष साम्प्रतं सर्वाधिकं प्रयुज्यते। अत्रैको जनः कार्यं कर्तुं प्रभवति। एते संगणकाः लघवोऽल्पमूल्यकाश्च भवन्ति व्यक्तिगत कार्येषु उपयोगाद् एते संगणकाः (Personal Computer, P.C.) नाम्ना निर्दिश्यन्ते। एते लघ्वाकारा अपि उपलभ्यन्ते आकार-दृष्ट्या लघवोऽप्येते कार्यदृष्ट्या महतीं क्षमतां दधति।

४. सुपर कम्प्यूटरः एते आकारदृष्ट्या विशाला भवन्ति। कार्य दृष्ट्या एते अन्यसंगणकापेक्षया तीव्रतमा भवन्ति एतेषु गणना कार्यम्

एकत्रैव सर्वं संपाद्यते एतादृशानां संगणकानाम् ऋतुविज्ञानकार्ये, अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी कार्ये, उपग्रह प्रक्षेपणे, प्रक्षेपास्त्र निर्माणे, प्रक्षेपास्त्र-प्रक्षेपणे, परमाणु-बम-निर्माणे, तस्य विस्फोटादि-कार्ये च विधीयते।

शिक्षा-क्षेत्रे संगणकानां बहुविधा उपयोगिता संगणकानां साहाय्येन जटिल समस्यानां निराकरण सरलतया संभवति प्रशिक्षण कार्येऽपि संगणकानाम् उपयोगो भवति। शोधकार्येऽपि संगणकानाम् उपयोगिता महत्त्वपूर्णा वर्तते विविधविषयाणां स्वयं शिक्षणेऽपि संगणकानाम् उपयोगो विधीयते सर्वमपि पाठ्यं विभज्य संगणके स्थाप्यते तच्च सर्वं पाठ्यं क्रमशः उपतिष्ठति एवम् अनेका विद्याः संगणक-माध्यमेन शिक्षितुं शक्यन्ते। एता विधाः CAL (Computer Assisted Learning), CAI (Computer Aided Instruction) इति च नाम्ना निर्दिश्यन्ते।

परीक्षाकार्येषु अपि संगणकाः बहुधा प्रयुज्यन्ते परीक्षा तिथि निर्धारणे, परीक्षाया आयोजने, परीक्षा परिणाम संगणने, परीक्षा परिणाम प्रकाशने च संगणकानां महती भूमिका पुस्तकालय विषयका सर्वाऽपि सूचना संगणक-माध्यमेन सरलतया प्राप्तुं शक्यते। पुस्तक-प्रकाशने पुस्तकानां व्यवसाये च संगणकानाम् उपयोगो महत् सौविध्यं विदधाति इलेक्ट्रिक- पुस्तक प्रकाशनेन पुस्तकानाम् उपलब्धौ सौविध्यं भविष्यति। वेवसाइट माध्यमेन इलेक्ट्रानिक- रूपेण पुस्तकं प्राप्तुं शक्यते।

वैज्ञानिक शोध कार्येषु संगणकानां महत्त्वपूर्ण योगदानं वर्तते वैज्ञानिक शोध- कार्य निरन्तरं प्रसरति। तत्र गणनायां जटिलतायाः संगणक-माध्यमेन समाधानं भवति। भौतिक विज्ञाने, रसायन विज्ञाने, खगोल विज्ञाने, भूगर्भ विज्ञाने, गणितशास्त्रे, कृषि विज्ञानादिषु च संगणकस्य प्रयोगेण महती प्रगतिः संलक्ष्यते। भैषज्य-विज्ञाने, सामाजिक विज्ञाने, मानवशास्त्रादीनां शोधकार्येषु संगणकस्य उपयोगः प्रतिदिनं वर्धते। कम्प्यूटर माध्यमेन विशाल भवनानां, सेतूनां वायुयानानाम् आदर्श चित्रं सारल्येन प्रस्तूयन्ते। ललितकला क्षेत्रेऽपि संगणको नूतनां संभावना जागरयति। संगणकः संगीत- प्रक्रियायां मूर्ति निर्माणेऽपि विविधं साहाय्यम् आचरति क्रीडाक्षेत्रे संगणको नूतनां संभावना प्रस्तौति। कम्प्यूटर माध्यमेन विविधाः क्रीडाः- हाकी-फुटबाल क्रिकेट-प्रभृतयः दूरदर्शन- चित्रपटे द्रष्टुं शक्यन्ते। विविध क्रीडानां सजीवं प्रसारण संगणक-माध्यमेन संभाव्यते। चिकित्साक्षेत्रे संगणकानाम् उपयोगो महत्त्वपूर्ण भूमिकां निर्वहति आतुराणां परीक्षणम् उपचारक्रिययैव सह शल्यक्रियाऽपि संगणकानां प्रयोगेण अनुष्ठीयते मस्तिष्कस्य चित्रनिर्माणे कैट स्केन (Computerised Axial Tomography) पद्धतिः प्रयुज्यते।

व्यापार क्षेत्रेऽपि संगणकानाम् उपयोगः प्रतिपलं वर्धते। कार्मिक-वेतन-गणना, कार्मिक-प्रबन्धनम्, भाण्डागार नियन्त्रणं संगणक-माध्यमेन संपाद्यते व्यापारिक संस्थानाम् आय-व्ययादि-संकलनम्, दैनिक वेतन-गणनादिकम्, वार्षिक वेतन निर्धारणादिकं च संगणक-माध्यमेन सारल्यं भजते। संगणकस्य प्रयोगेन प्रबन्धन-व्यवस्था अतीव सरला संजाता।साम्प्रतं संगणकस्य प्रयोगो वित्तीय संस्थानां कृते, बीमा शेयर प्रभृति कार्येषु अनिवार्यत्वं भजते बैंक प्रभृतिषु उपभोक्तॄणां संख्या प्रतिदिनं वर्धते, अतः वित्त प्रबन्धने काठिन्यम् अनुभूयते। तस्य निराकरणार्थं संगणकस्य उपयोगः आवश्यको भवति। औद्योगिक- प्रतिष्ठानेषु संगणकानां प्रयोगेण उत्पादन-वृत्तम्, यन्त्र-संचालनम्, वस्तूनां गुणवत्ता निर्धारणं सरलं भवति। संगणकानाम् उपयोगेन एकस्मिन् एव स्थाने स्थित्वा सर्वस्य यन्त्रजातस्य संचालन नियन्त्रणं च संभवति।

अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी क्षेत्रे यादृशी प्रगतिः संलक्ष्यते सा संगणक प्रयोगेण असंभवाऽपि संभवा संजाता। अन्तरिक्ष यानानां प्रक्षेपणं, नियन्त्रणं, सूचना संकलनम् तद्विश्लेषणं च संगणकस्य प्रयोगेणैव संभवोऽभूत्। भूगर्भ विज्ञाने, खनिज-विज्ञाने, ऋतुविज्ञाने च प्राप्तसामग्री- विश्लेषणेन बहुविधा नूतनाः सूचनाः प्राप्यन्ते।

यातायात-क्षेत्रेऽपि संगणकानाम् उपयोगो बहुमूल्यं सिध्यति रेल-यानेषु आरक्षण- व्यवस्था, यानानां संचालनादिकं च भवति। एकस्थानत एव सर्वोऽपि यात्रा कार्यक्रमः आरक्षण पद्धत्या संभाव्यते। दूरसंचारक्षेत्रे संगणकानां प्रयोगेण महत् परिवर्तनं संलक्ष्यते। साम्प्रतं सर्वाऽपि टेलीफोन एक्सचेंज-व्यवस्था संगणकानां माध्यमेनैव विधीयते। इन्टरनेट, ई-मेल, ई-कामर्स-प्रभृतयः संगणकस्य प्रयोगेण नूतनां क्रान्तिं विदधति।

कम्प्यूटर संबद्धा इन्टरनेट प्रणाली महासागरवद् वर्तते। सर्वस्मिन् जगति यत् किंचिद् ज्ञानं विज्ञानं, शोध-संबद्धं कार्यजातं च वर्तते, तत् सर्वम् एकत्रैव प्राप्तुं शक्यते। एवं सुकरम् एतद् वक्तुं यत् सांप्रतं संगणकस्य उपयोगिता बहुविधा वर्तते उन्नत्यै, प्रगत्यै, विकासाय च संगणकानाम् उपयोग आवश्यकः।

शिक्षाया: महत्वम्

मनीष:
स्नातक तृतीयवर्ष:

न चौरहार्यं न च राजहार्यं भ्रातृभाज्यं न च भारकारि
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधन प्रधानम्।

नूनं विद्या एव अक्षयधनम् अस्ति। एतद्धनं न चौरैः हार्यं न च भ्रातृभिः भाज्यम्। एतच्च व्यये कृते अपि वर्धते एव। विद्याधनं महाधमं वर्तते। विद्या विहीनस्य पुरुषस्य जीवनं व्यर्थमस्ति। जीवने विद्याधनस्य अतीव आवश्यकता भवति। विद्यां विना नरः किमपि कार्यं कर्तुं न शक्नोति। विद्याहीनः सभामध्ये अपमानितो भवति। विद्यया एव सः विवेकी भवति। सर्वे जनाः सुखं वांछन्ति, किन्तु सुखप्राप्त्यर्थं विद्यार्जनं आवश्कयमेव। कथ्यते च-

विद्या ददाति विनयं विनयात् याति पात्रताम्
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्।

यः पिता स्वपुत्राय शैशवे विद्याधनं न यच्छति, सः स्वपुत्रस्यकृते किमपि न करोति इति मन्ये। विद्यां विना सः प्रगतिं कर्तुं न शक्नोति। विद्याविहीनः पुरूषः साक्षात् पशुः एव। यथा पशुः विद्यां विना धर्माधर्मयोः विचारं कर्तुं न शक्नोति तथा विद्याहीनः पुरूषः अपि धर्माधर्मयो:, कर्तव्याकर्तव्ययोः विवेकं कर्तुं न प्रभवति। पशुमनुष्ययोः भेदः विद्यया एवं क्रियते।

यस्य समीपे विद्याचक्षुर्नास्ति स अन्ध; एव। विद्या मानवस्य ज्ञानचक्षुः अस्ति। विद्यालोचनेन अज्ञानतमः नश्यति। विद्या किं किं न करोति? केनचितः कविना उक्तम्-

मानवे रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्पनीय खेदम्
लक्ष्मीं तनोति, वितनोति च दिक्षु कीर्तिम्
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।

नूनं, माता बालकस्य रक्षणं केवलं बाल्ये करोति, किन्तु विद्या तं सदैव रक्षति, तस्य कीर्तिं दिक्षु प्रसरति। विद्या एव धनं, कीर्ति ददाति। विद्यावान् एव सर्वत्र पूज्यते, मूर्खश्च अभिभूयते। अतः मनुष्यस्य जीवनयापनाय, तस्य विकासाय विद्यार्जनम् अनिवार्यमस्ति। अन्यधनम् अशाश्वतं, किन्तु विद्याधनं शाश्वतं खलु। अन्यत् धनं प्राप्य मनुष्यः गर्वयुक्तः भवति, किंतु विद्याधनम् अवाप्य सः विनम्रः जायते। विद्या सर्वेषां भूषणमस्ति।

अन्ते एतदेव कथनं यत् सर्वेषु धनेषु विद्याधनं सर्वश्रेष्ठं, सर्वप्रधानम् अस्ति।

मम महाविद्यालय:

प्रीति
स्नातक तृतीयवर्ष:

मम महाविद्यालयः नगराद् बहिः एकान्ते सुन्दरे प्रदेशे स्थितोऽस्ति। महाविद्यालयं वीक्ष्य चेतो नितान्तं हर्षमनुभवति। महाविद्यालयस्य रमणीयता च न कस्य चेतो बलाद् हरति? महाविद्यालयोऽस्माकं कृते न केवल पाठशालाऽस्ति अपि तु अस्माकं सर्वस्वमस्ति। अस्माभिरत्रैव अध्ययनं क्रियते, सदाचारस्य पाठः पठ्यते, विनयः अनुशासनं च गृह्यते, समाजसेवायाः देशभक्तेश्च भावनाचैव प्राप्यते। किमन्यत्, जीवनस्य यत् कर्तव्यमस्ति तत् सर्वमपि अत्रैव लभ्यते। अतएव महाविद्यालयोऽयम् अस्माकं कृते 'विद्यामन्दिरम्' अस्ति।

मम महाविद्यालयेऽध्यापकानां प्राध्यापकानां च संख्या पञ्चाशतोऽधिका वर्तते। छात्राणां संख्या सहस्रादधिका विद्यते। प्रायः शतद्वयी बालिकानामपि संख्या वर्तते। महाविद्यालयस्य आचार्यवर्याः अतीव प्रखरा विविधविद्यापारंगता विद्वांसः सन्ति। तेषां तेजोमयं वदनं वीक्ष्य छात्रा श्रद्धावनता भक्तिभावोपेताश्च भवन्ति। अध्यापकेषु च बहवो महाविद्वांसः सन्ति। सर्वेऽपि स्वस्वविषयेऽतीव विशारदाः सन्ति। तेषां शिक्षापद्धतिरपि बहु मनोरमा वर्तते। शिक्षायाः समीचीनत्वादेव अन्यान्तेभ्योऽपि अत्रैवाध्ययनार्थमागच्छन्ति। राजकीय-परीक्षासु च विशिष्टं स्थानम् अस्मद्विद्यालयीयाः छात्र लभन्ते न केवलं पठने छात्राःयोग्यतमाः सन्ति, अपि तु क्रीडने तरणे धावने वा प्रतियोगितासु अनुशासने संयमे समाजसेवायां देशसेवायामपि च तेषां स्थानं सर्वप्रथममेव विद्यते। अस्माकं महाविद्यालये विद्यार्थिनां क्रीडनार्थं क्रीडाक्षेत्रं सुविस्तृतमस्ति। विविधभाषा भाषणपाटवार्थं विविधाः परिषदः सन्ति। सैनिकशिक्षायाः अपि प्रबन्धोऽस्ति ये क्रीडनादिषु प्रथमस्थानं लभन्ते, ते पुरस्कारादिकमपि लभन्ते ये किमपि शोभनं कर्म कुर्वन्ति, ते सदा पुरस्कृता भवन्ति, विद्यालये आदरं च लभन्ते। छात्राणां स्वास्थ्यवृद्ध्यर्थं व्यायामस्य, मल्लयुद्धस्य अन्येषां चोपयोगिवस्तूनां प्रबन्धोऽस्ति। अतएव छात्रा हृष्टाः पुष्टाश्च सन्ति निरीक्ष्य सर्वेषामपि जनानां चेतः प्रहर्षमाप्नोति।

साम्प्रतमस्माकमेतत् कर्तव्यं भवति यत् सर्वथा वयं महाविद्यालयस्य कीर्तिं दिक्षु तनुमः एवमस्माकमपि यशो वृद्धि प्राप्स्यति।

पुराणानां महत्वम्

मोहित पालः
स्नातक तृतीयवर्षः

पुराण-शब्दार्थः - किं तावत् पुराणमिति जिज्ञासायां पुराण-शब्दार्थो बहुधा निरुच्यते। काश्चन निरुक्तयोऽत्र समासतो निर्दिश्यन्ते। (1) पुराणम् आख्यानं पुराणम् इति, अर्थात् प्राचीनानि आख्यानानि पुराणानीति। (2) यस्मात् पुरा हि अनति इदं पुराणम् (वायुपुराण), यत् पुरा सजीवम् आसीत् तत् पुराणम्। (3) जगतः प्रागवस्थाम्। अनुक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम् (सायण, ऐ० ब्रा०, भूमिका), संसारोत्पत्तेः विकासक्रमस्य च बोधकं पुराणम्। (4) पुरार्थेषु आनयतीति पुराणम् (पद्मपुराण), पुरुष-प्रकृत्यादि-पूर्वतत्त्वचिन्तनपरं पुराणमिति। (5) पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन वै स्मृतम् (वायुपुराण), प्राचीन-परम्परा-प्रतिपादका ग्रन्थाः पुराणमिति। (6) विश्वसृष्टेरितिहासः पुराणम् (मधुसूदन-सरस्वती)। विश्वरचनाया ऐतिह्यमेव पुराणशब्दाभिमतम्। 18 पुराणानि, 18 उपपुराणानि च पुराणनाम्ना व्यवह्रियन्ते।

पुराणं पञ्चलक्षणम् - प्रतिपाद्यविषयम् आश्रित्य पुराणानां पञ्च लक्षणानि निर्दिश्यन्ते-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराण पञ्चलक्षणम्।। (विष्णुपुराण)

पुराणेषु पञ्चतत्त्वानां समावेशोऽपेक्ष्यते। (1) सर्गः-सृष्ट्युत्पत्ति-वर्णनम् (2) प्रतिसर्गः-प्रलयस्य, सृष्टेः पुनरुद्भवस्य च वर्णनम्। (3) वंशः-देवानाम् ऋषीणां च वंशावल्या वर्णनम्। (4) मन्वन्तराणि-प्रत्येकस्य मनोः कालः, तत्काल-घटितानां वृत्तानां च वर्णनम्। (5) वंशानुचरितम्-सूर्य-चन्द्रादि वंशजानां नृपाणाम् इतिवृत्तात्मकं वर्णनम्। पञ्चलक्षणमिति सामान्यो निर्देशः। नैतेन सर्वविषय-संग्राहकत्वम्। विषयान्तराणामपि पुराणेषु सद्भावात्, पञ्चलक्षणस्य च क्वचित् परिहारात्।

पुराणानां रचनाकालः- पुराणानां रचनाकालः 600 ईसवीयपूर्वादारभ्य 500 ईसवीयसंवत्सरं यावत् स्वीक्रियते।

पुराणेषु प्रतिपाद्या विषयाः-पुराणेषु मुख्यतो निम्नाङ्कितानां तथ्यानां वर्णनम् अवाप्यते। (1) कस्यचिद् देवस्य कस्याश्चिद् देव्या वोपासना। तस्यैव देवस्य सर्वोत्कृष्टता प्रतिपादनं च। (2) ब्रह्मा-विष्णु-महेशेषु कस्याप्येकस्य इष्टदेवत्वेन वर्णनम्। (3) सृष्टेरुत्पत्तेः स्थितेः प्रलयस्य च वर्णनम्। (4) देवानाम् ऋषीणां च वंशावलिः, तज्जीवनवृत्तं च। (5) मनोः मन्वन्तरस्य च वर्णनम्। (6) नन्द-मौर्य-शुङ्ग-आन्ध्र-गुप्तादिवंशजाना नृपाणां भूपतीनां च इतिवृत्त-वर्णनम्। (7) तीर्थानां प्रथितभौगोलिकस्थानानां तीर्थयात्रादीनां च वर्णनम्। (8) व्रत-जप-उपवास-प्रार्थनादीनां सानुष्ठान वर्णनम्।

पुराणानां महत्त्वम् - भारतीयायाः संस्कृतेः सभ्यतायाश्च यथायथम् अवगमाय पुराणानां नितरां महत्त्वमस्ति। पुराणानि विहाय न क्वचिदन्यत्र विपुलेऽपि वाङ्मये प्राचीनसंस्कृतेः सविस्तर वर्णनम् उपलभ्यते। अतएव वायुपुराणे तन्महत्वम् उद्घोष्यते। यत् चतुर्वेदविदपि पुराणज्ञानविहीनो न विचक्षणपदवीम् आरोढुं शक्नोति। उक्तम् च-

यो विद्याच्चतुरो वेदान् साङ्गोपनिषदो द्विजः।
न चेत् पुराणं स विद्यात् नैव स स्याद् विचक्षणः ॥ (वायुपुराण)

पुराणानां धर्मार्थकाममोक्षात्मक-चतुर्वर्ग-साधनाद् वेदत्वं प्रतिपाद्यते। पुराणं पञ्चमो वेद इत्याद्रियते। उक्तम् च भागवते-

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्- महाभारतकृता वेदार्थस्य विशदीकरणं पुराणानां महत्त्वरूपेण प्रतिपाद्यते। वेदेषु यानि तत्त्वानि यत्र तत्र वर्ण्यन्ते तेषां विशदीकरणं पुराणेषु आख्यानरूपेण प्राप्यते। वेदार्थविशदीकरणेन पुराणानि वेदार्थावगमे साहाय्यम् आचरन्ति।

पुराणानां धार्मिक महत्त्वं कस्य न विपश्चितो विदितम्। पुराणानि भारतीय संस्कृतेः सनातनधर्मस्य च प्राणभूतानि सन्ति। एतेषामपि श्रुतितुल्यं प्रामाण्यं गृह्यते। विष्णु-शिवादि-देवानाम् उपासनापद्धतेः सविस्तरो बोधः पुराणैरेव संजायते।

पृथ्वी

वैभवः

स्नातक तृतीयवर्षः

पृथ्वी कश्चित् ग्रहः अस्ति। सूर्यमण्डले पृथ्वी तृतीये क्रमाङ्के स्थिता अस्ति। पृथ्वीग्रहः सौरमण्डलस्य पञ्चमबृहत्तमः ग्रहः अस्ति। जीवनाय अनुकूलाः परिस्थितयः पृथ्व्याम् एव सन्ति। पृथ्वी अधिकोष्णा नास्ति, अधिकशीतलापि नास्ति। पृथ्व्यां वायुः, जलम् च अस्ति। जीवनस्य कृते वायुजलयोः आवश्यकता भवति। अत्र प्राणवायुः अपि अस्ति, येन श्वसनतन्त्रं चलति। अनेन कारणेन पृथ्वी सौरमण्डलस्य अद्भुतग्रहः विद्यते। पृथिव्याः प्रकृतिः विशिष्टा वर्तते। तस्य विषये इदानीम् अपि स्पष्टं नास्ति। पृथिव्याम् अनेकाः पदार्थाः सन्ति। पृथिव्याः उपरिभागः स्थलमण्डलेन आवृतः अस्ति।

ज्वालामुखिना पृथिव्याः बहवः पदार्थाः बहिरागच्छन्ति। ज्वालामुखिनः अत्युष्णः द्रवपदार्थः, मृत्तिका, धूम्रः, अग्निः, मैग्मा च बहिरागच्छति। तेन एव वैज्ञानिकाः अनुमानं चिन्तयन्ति। वैज्ञानिकाः भौगोलिके संशोधने कार्यरताः भवन्ति। तेन वैज्ञानिकानां समीपं पृथिव्याः विषये विशिष्टं ज्ञानं भवति। अतः ते पृथिव्याः, ब्रह्माण्डस्य च संरचनायाः विषये सूक्ष्मतया जानन्ति।भूगर्भस्य संरचना कथम् अस्ति ? तस्मिन् के पदार्थाः प्राप्यन्ते ? इति विषयम् आधृत्य वैज्ञानिकाः निरन्तरम् संशोधनं कुर्वन्तः सन्ति। पृथिव्याः केन्द्रे गन्तुं अशक्यम् अस्ति, किन्तु केवलम् अनुमानेन वैज्ञानिकाः ज्ञानं प्राप्नुवन्ति। प्रेक्षणैः अपि ते संशोधने नूतनान् विषयान् अवगच्छन्ति। भूगर्भस्य ज्ञानार्थं प्रत्यक्षाप्रत्यक्षौ स्रोतसी स्तः।

ग्रहेषु पृथिव्याम् एव जीवनं सम्भवम् अस्ति। यतः जीवनाय भूमेः, जलस्य, वायोः च आवश्यकता वर्तते। तानि सर्वाणि तत्त्वानि पृथिव्याम् उपलब्धानि सन्ति। पृथिव्याः पर्यावरणस्य त्रयः महत्वपूर्णाः घटकाः परस्परं मिलन्ति, परस्परं प्रभावयन्ति च। पृथिव्याः पर्यावरणे त्रीणि मण्डलानि सन्ति। स्थलमण्डलं, जलमण्डलं, वायुमण्डलं च। पृथिव्यां जैवमण्डलम् अपि वर्तते। पृथिव्याः सर्वैः जीवधारिभिः जैवमण्डलस्य रचना अभवत्। एते सर्वे जीवधारिणः अन्यैः मण्डलैः सह पारस्परिकक्रियां कुर्वन्ति। पृथिव्याः सर्वे जीवितघटकाः जैवमण्डले विद्यन्ते। तेषु – पादपाः, जन्तवः, प्राणिनः, सूक्ष्मजीवाः च सन्ति।

अधिकाः जीवाः स्थलमण्डले एव प्राप्यन्ते। किन्तु तेषु बहवः जीवाः वायुमण्डले जलमण्डले अपि प्राप्यन्ते। केचित् जीवाः मण्डलद्वये अपि स्वतन्त्रतया विचरणं कर्तुं शक्नुवन्ति। जैवमण्डलं, जैवमण्डलानां घटकाः च पर्यावरणस्य महत्वपूर्णानि तत्त्वानि सन्ति। एतानि तत्त्वानि भूम्या, जलेन, मृत्तिकया इत्यादिभिः सह पारस्परिकक्रियां कुर्वन्ति। तापमानेन, वर्षया, आर्द्रतया, सूर्यप्रकाशेन एतानि तत्त्वानि प्रभावितानि भवन्ति। जैविकघटकानां भूमिवायुजलैः सह परस्परम् आदानं, प्रदानं च जीवानां विकासाय च साहाय्याय कल्पते।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामः

खुशी शर्मा
स्नातक तृतीयवर्षः

अवुल् पाकिर् जैनुलाअबदीन अब्दुल कलामः १५ अक्टोबर् १९३१ – २७ जुलै २०१५ अस्य जन्म क्रि.श. १९३१तमवर्षस्य अक्टोबरमासस्य पञ्चदशे दिने तमिळनाडुराज्यस्य रामेश्वरम् इति मण्डलस्य धनुष्कोटि इति स्थाने अभवत्।लोकः एतं डा. अब्दुल् कलाम इत्येव सम्बोधयति। भारतीयगणतन्त्रस्य एकादशः निर्वाचितः राष्ट्रपतिः अभवत्। कलामः प्रसिद्धः वैज्ञानिकः अभियन्ता अविवाहितः च आसीत्। अस्य पिता जैनुलाब्दीन् तु धनवान् विद्यावान् च नासीत्।अस्य जन्म मध्यमवर्गस्य मुस्लिम कुटुम्बे अभवत्। सः शुद्धहस्तः अनुशासितः नाविकः आसीत्।

धीवरेभ्यः नौकाः भाटकरूपेण यच्छति स्म। डा. अब्दुल कालामः भारतस्य एकादशः राष्ट्रपतिः इति निर्वाचितः। क्रि.श. २००२ तमवर्षस्य जुलैमासस्य १८ तमे दिने डा. कलामः ९०% बहुमतेन भारतस्य राष्ट्रपतिः अभवत्। क्रि.श. १९६२तमवर्षे भारतीयान्तरिक्षानुसन्धानसङ्घटने सेवायां नियुक्तः।

डा. अब्दुल् कलामः प्रकल्पनिदेशकत्वेन भारतस्य स्वदेशीयो अस्य (एस्.एल्.वी. तृतीयः)प्रक्षेपणस्य क्षिपणिनिर्माणस्य श्रेयः प्राप्तवान्। डा.कलामः स्वव्यक्तिगते जीवने अपि परिपूर्णः अनुशासितः आसीत्। आजीवनं ब्रह्मचर्यव्रतस्य पालनं सङ्कल्पितवान्। एषः कुरानग्रन्थं तथा भगवद्गीतां च समानतया अध्ययनं करोति। स्वयं कलामः बहुत्र उक्तवान् यत् सः तिरुक्कुरल् अपि अनुसरति इति। अस्यभाषणे न्यूनातिन्यूनम् एकवारं कुरलस्य उल्लेखः भवत्येव।

मातृ देवो भवः

हिमांशु कौशिकः
स्नातक तृतीयवर्षः

अस्मिन् संसारे माता एव परम दैवतमस्ति। मातुः स्थानम् गृहणाय तु कोऽपि न समर्थः। सर्वोत्कृष्ट स्थानं मातुरेव। सा तु स्वर्गादपि गरीयसी वर्तते। मातुरधिक किमपि पूज्यं नास्ति। वेदेषु पुराणग्रंथेषु अपि मातुः महात्म्य वर्णितम्। पितुः आचार्यादपि माता श्रेष्ठा अस्ति। अतः सर्वप्रथमो अयमुपदेशः 'मातृदेवो भव' इति। पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव इत्यादिकाः उपदेशाः पश्चादागच्छन्ति।

सन्ततिपालने माता किं किं न करोति। सा अनेकानि कष्टानि सहते। शैशवे पुत्रस्य कारणे रात्रौ जागरणं अपि करोति। स्वयं दुःखं सहते, किन्तु पुत्राय सर्वं सुखं यच्छति। माता अतीव पुत्रवत्सला भवति। सा एव बालकस्य प्रथमः गुरुः अपि अस्ति। विद्यालयगमनात् प्रागेव सा बालकं स्नेहेन शिक्षयति। महाभारते महर्षिणा व्यासेनापि उक्तं, 'नास्ति मातृसमो गुरुः।'

स्नेहपरायणा, साधुस्वभावा माता मूल्येन लब्धुं न शक्यते। 'दीवार' नाम हिन्दी चित्रपटे अपि मातुः महत्त्वं दर्शितम्। तत्र अयं संवादः लोकप्रियः अभवत्, मम समीपे धनमस्ति, वाहनमस्ति, गृहमस्ति, त्वत् समीपे किमस्ति? तदा नायकः वदति, 'मम समीपे माता अस्ति।'

एवं मातुः महत्त्वं सर्वैः स्वीकृतम्। सुप्रसिद्ध मातृभक्तं श्रवणकुमारं को न जानाति। स्वमातृभक्त्या सः अमरः जातः।

भगवतः शंकराचार्यस्य मातृभक्तिः सर्वविदिता एव।

अस्य मातृभक्तिः अलौकिकी आसीत्। आधुनिककाले अपि अनेके मातृभक्ताः सन्ति।

एतत् कथितं यत् पुत्रः कुपुत्रः भवति, परन्तु माता कदापि कुमाता न भवति। यथा- 'कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति' इति।

मातुः माहात्म्यं सर्वाधिकं वर्तते। सा परमकल्याणी अस्ति। प्रभुरामचन्द्रेणापि कथितं,' जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' अतः एतद् अस्माकं परम् कर्तव्यम् यत् अस्माभिः मातृभक्तिः अवश्यमेव विधेया।

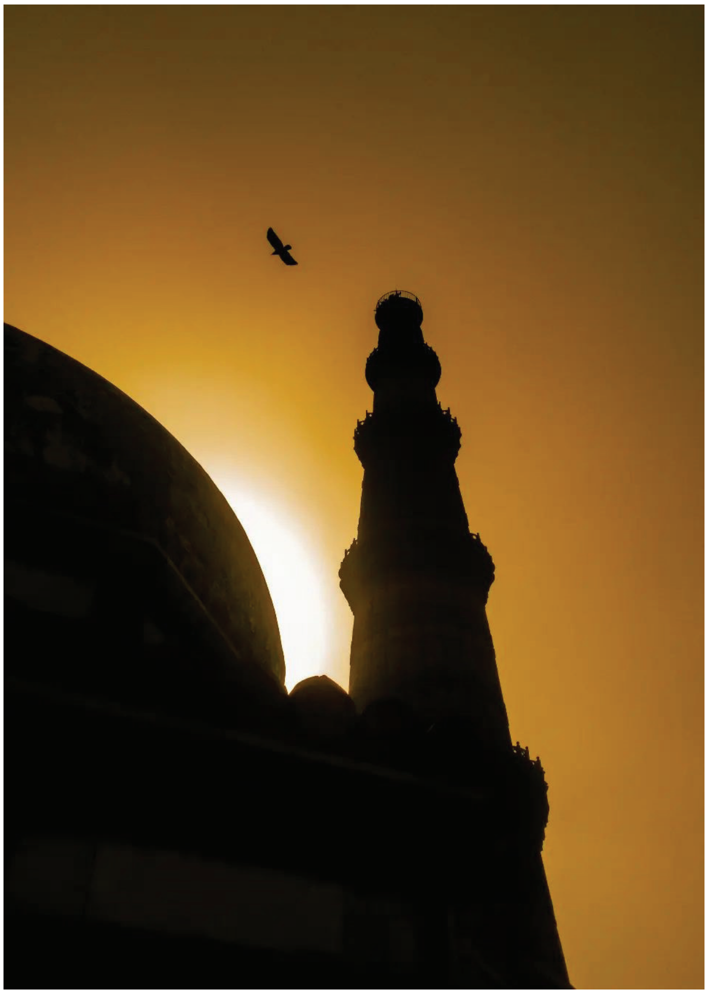

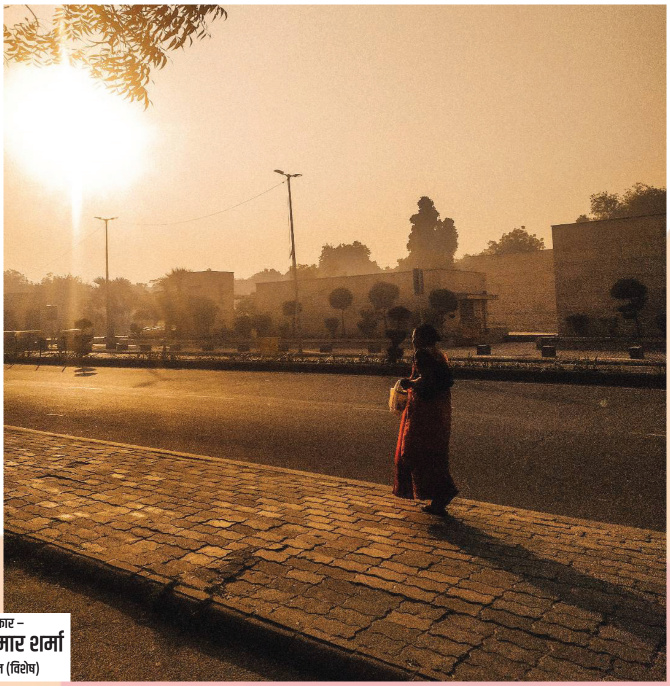

– छायाकार –

विशाल कुमार शर्मा

बी.ए. संस्कृत (विशेष)

G20

भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE